"वाह क्या बात है यार बड़की—क्या बात है तुममें और क्या बात है तेरे चप्पल डाक्टर की...।"

"देख मंझली तू...।" झल्ला उठी बड़की— "मेरी समझ में नहीं आता कि तुझे और भी कुछ आता है या...।"

ए बड़की बहना—सच पूछ तो इस वक्त तो तेरी इस छुटकी के दिलो दिमाग में भी सिर्फ एक ही बात है—वाह क्या बात है तेरे चप्पल डाक्टर में...।" छुटकी ने भी चुहल की।

"तुम लोग डाक्टर अश्वनी नहीं कह सकते उसे...।"

"हां कह सकते हैं बड़की जी—बिल्कुल कह सकते हैं—मगर सच बात तो ये है कि तेरे ही कहे सुने के अनुसार हमें तेरा वह अश्वनी डाक्टर कम और चप्पल डाक्टर ज्यादा नजर आता है...।"

मझली हसत हुए बोली।

"हां मगर वह तो चप्पल का इलाज भी ठीक तरह से नहीं कर पाया—तीन बार आपरेशन किया मगर तीनों बार फेल।"

"आखिर में हार कर बेचारे ने तेरे पैर को चप्पल के ऊपर रखकर पैर को चप्पल के साथ पट्टियों से बांध दिया।"

मंझली ने छुटकी की अधूरी बात को पूरा किया।

"वैसे जहा तक मिस छुटकी की समझ का सवाल है—वह चप्पल डाक्टर चाहे बड़की की चप्पल के सीरियस आपरेश में पूरी तरह से असफल होकर अपने कैरियर में हमेशा के लिए अमिट दाग लगा बैठा हो मगर यह भी सच है मीलार्ड कि वह चप्पल डाक्टर एक असफल सर्जन होने के बावजूद बड़की के दिल में कहीं गहरे...।"

"उफ—तुम लोग भी बस...।" झल्ला कर झटके से उठ खड़ी हुई बड़की—तुम लोगों को तो कोई बात बताना भी अपनी ही कब्र खुदवाने के बराबर है...।"

"और सौ सपाट चेहरे एक चप्पल डाक्टर के बराबर हैं...।" छुटकी और मंझली दोनों एक साथ बोली।

"हो सकता है अश्वनी! मेरे माफ़ी मांगने के नाटक पर आपके चाचा जी मुझे माफ भी कर दें और फिर हमारी शादी भी हो जाए—मगर यह तो सिर्फ एक समझौता ही हुआ ना—अपने स्वार्थ की ख़ातिर किया गया समझौता।"

"गुणवंती! तुम समझने की कोशिश तो करो।"

"आपको पाना ख्वाब है मेरा, अपने ख्वाबों में मैंने सदा ही आप को चाहा है, मगर आपको पाने के लिए अपने आप को धोखा नहीं दे सकती मैं..."

सोप ओपेरा

सोप ओपेरा का शाब्दिक अनुवाद होगा साबुन नौटंकी। नौटंकी इसलिए नहीं कि इसमें गीत-संगीत में अनुवाद होते हैं। बल्कि इसलिए कि नौटंकी की तरह इसमें भी मैलो ड्रामा यानि अति-नाटकीयता होती है। पात्र अपने मन की बात इतनी बार और इतनी जोर से कहते हैं कि दर्शक उनके बारे में इतना अधिक जान लेते हैं कि वे अपने निकटतम सम्बन्धियों के बारे में भी नहीं जानते। इस विधा के साथ सोप (साबुन) का विश्लेषण यों जुड़ गया कि इस तरह की धारावाहिक श्रृंखलाओं का अमेरिका में पहले-पहल प्रायोजन किया "प्रॉक्टर एण्ड गैम्बल" नामक कम्पनी ने जो साबुन बनाती है।



स्टार पब्लिकेशंज़ (प्रा.) लि.


हिन्दी बुक सैन्टर

4/5 बी. आसफ अली रोड, नई दिल्ली-110 002

सहयोगी : आकाश आहुजा
आवरण व चित्र : शैलेन्द्र सिंह

संस्करण : 1985

वितरक :
स्टार पब्लिकेशंज (सेल्ज़)
1641, दरीबा कलां, दिल्ली-110006

☐ प्रकाशक :
स्टार पाकेट बुक्स
4/5बी, आसफ़ अली रोड़,
नई दिल्ली-110002

☐ मूल्य : आठ रुपये मात्र (8.00)

☐ मुद्रक : KONARK PRESS, DELHI

कार्यक्रमों को भी पीछे छोड़ दिया।

लोकप्रियता के अपने तकाजे होते हैं। दर्शकों के आग्रह पर लेखक को कहानी में ऐसे मोड़ देने पड़े जो सोचे नहीं गये थे। "हम लोग" लिखते हुए मुझे दर्शकों के साथ-साथ दोनो निर्माताओं के आग्रहों की भी रक्षा करनी पड़ी। इसलिए कुल मिलाके कहानी ठीक वैसी नहीं रही जैसी सोची गई थी। फिर भी यह कहा जा सकता है कि "हम लोग" में लेखक को जितनी छूट मिली उतनी "सोप ओपेरा" क्या सिनेमा के लेखक को भी नहीं मिलती। "सोप ओपेरा" ज्यादातर बहुत-से लेखक मिल के लिखते हैं लेकिन यहां सारा काम एक ही लेखक के जिम्मे रहा है।

शुरू से ही दर्शक यह मांग कर रहे हैं कि "हम लोग" जिस उपन्यास के आधार पर लिखा गया है उसे छापा जाए। उनका ख्याल है कि "हम लोग" सारा-का-सारा एक साथ लिखा गया था और उसके सब प्रकरण शूट किये जा चुके हैं। कइयों का तो ये दावा है कि हम दो सौ प्रकरण तक के वीडियो कैसेट देख चुके हैं! सच्चाई ये है कि "हम लोग" की बीस पृष्ठ की एक रूपरेखा ही आरंभ में तैयार की गई थी। कार्यक्रम जैसे-जैसे लिखाया जा रहा है वैसे-वैसे शूट हो रहा है।

बहरहाल "हम लोग" उपन्यास की इतनी मांग थी कि स्टार पॉकेट बुक्स के श्री अनिल वर्मा ने प्रसारित प्रकरणों के आधार पर उपन्यास छापने का प्रस्ताव किया। "हम लोग" में मैं इतना व्यस्त था कि रूपान्तर चाहकर भी खुद नहीं कर सका। ये काम तब स्टार पॉकेट बुक्स वालों ने खुद अपने जिम्मे लिया। इसमें "हम लोग" के सौ वें प्रकरण तक की कहानी संक्षेप में मगर मूल संवादों के साथ दी गई है।

आशा है कि यह "हम लोग" के उन प्रशंसकों को (अर्थात "हम लोग" देखना ही नहीं पढ़ना भी चाहते हैं।

—— मनोहर श्याम जोशी

दिनांक — 16.7.85

ए-53 डी डी ए फ्लैट्स, साकेत, नई दिल्ली

लेखक की ओर से

जब 1983 के अन्तिम महीनों में सूचना और प्रसारण मंत्रालय के सचिव श्री एस.एस. गिल ने मुझे "हम लोग" (यह नाम उनका ही सुझाया है) नामक सोप ओपेरा की रूपरेखा तैयार करने की जिम्मेदारी सौंपी तब मुझे इस बात की जरा भी कल्पना नहीं थी कि मैं इसी काम में आगे उलझा रह जाऊंगा और ये कार्यक्रम बेहद लोकप्रिय होगा। ये सही है कि दुनिया के सभी देशों में "सोप ओपेरा" लोकप्रिय होते आये हैं। लेकिन भारत में इनके सफल होने के विषय में बहुतों के मन में सन्देह था। फिर सूचना प्रसारण मंत्रालय "सोप ओपेरा" भी उस प्रकार का बनवाना चाह रहा था जिसमें कथानक को आम जिन्दगी के अधिक से अधिक निकट रखा जाता है और समाज के लिए हितकारी सन्देश उसके माध्यम से प्रसारित करने का यत्न किया जाता है। इस प्रकार के सोप ओपेरा मैक्सिको में मीगेल साबिदो नामक नाटकार—दिग्दर्शक ने पहले पहल बनाए थे। साबिदो ने यहां आकर कुछ लोगों को दीक्षा दी और दूरदर्शन के कुछ लोग साबिदो से दीक्षा लेने मैक्सिको गये—"हम लोग" के लेखक, दिग्दर्शक और निर्माता तीनों को ही यह सौभाग्य प्राप्त नहीं हुआ।

"हम लोग" की आरंभिक कड़ियां देखकर सभी समीक्षकों ने यह फतवा दिया कि ये बहुत बेकार-सा कार्यक्रम है। इसे न आम लोग पसन्द करेंगे और न खास लोग। कार्यक्रम के प्रायोजक भी कुछ घबराए-घबराए-से नजर आने लगे। केवल सूचना प्रसारण मंत्रालय के सचिव इस घबराहट के भागीदार नहीं बने। उन्होंने ही "हम लोग" का हौसला बढ़ाए रखा।

कार्यक्रम के शुरू होने के बाद दर्शकों में सर्वेक्षण किये गये उनसे यह प्रमाणित हुआ कि "हम लोग" लोकप्रियता के नये कीर्तिमान स्थापित कर रहा है। शीघ्र ही इसने लोकप्रियता में फिल्मों पर आधारित "चित्रहार" तथा "शो-थीम" जैसे

सुबह.....

आकाश की ऊंचाई की तरफ बढ़ता अलसाया सा सूरज—धीरे-धीरे खिलता हुआ सा.....।

दिल्ली जैसे महानगर में जहां भोर की पहली किरण के साथ ही नगर का सन्नाटा भंग हो जाता है—सड़कों पर काम की तलाश के लिए भागते गरीब मजदूर तबके के लोग—ड्यूटी पर जाने की तैयारी करते हुए बाबू लोग—काम पर जाने के लिए बहुत लम्बा सफर तय करना होता है ना—सड़कों पर भागते—दो पहिया—तीन पहिया और चार पहिया वाहनों का शोर—इसी महानगर में जनता कालोनी के एल.आई.जी.फ्लैट में रहने वाले बलेसर राम जी के भरे पूरे परिवार में भी सुबह होते ही हलचल शुरू हो जाती है।

बलेसर राम—नशे में डूबा हुआ एक हारा हुआ व्यक्तित्व—हर तरफ से हारा हुआ इंसान—नसीब से और अपने आप से भी—अगर होंठ हिलते हैं तो होंठों पर या तो शराब की बात होती है या फिर सहगल का गीत—सुर और सुरा—बस यही तो जिंदगी है बलेसर राम की।

भोर की पहली किरण के साथ ही बलेसर राम जी तो होंठों पर सुर सजाए सुरा का स्वाद लेने घर से निकल गए—मगर जनता कालोनी के उस फ्लैट में एक-दो सदस्यों का बाहर

हम लोग परिवार

सदस्य का नाम	कलाकार	व्यवसाय
1. दादा (सूबेदार रिज्जकराम)	लहरी सिंह	अवकाश प्राप्त बैंक कर्मचारी
2. दादी (इमरती देवी)	सुषमा सेठ	मंच और फिल्म अभिनेत्री
3. पिता (बसेसर राम)	विनोद नागपाल	व्यापारी, मंच अभिनेता
4. मां (भागवन्ती)	जयश्री अरोड़ा	अध्यापिका, मंच अभिनेत्री
5. बड़की (गुणवन्ती)	सीमा भार्गव	मंच अभिनेत्री
6. लल्लू (ललित प्रसाद)	राजेश पुरी	मंच, फिल्म अभिनेता
7. नन्हे (चन्दर प्रकाश)	अभिनव चतुर्वेदी	छात्र, सेंट स्टीफन्स
8. मंझली (रूपवन्ती)	दिव्या सेठ	छात्रा, सेंट स्टीफन्स
9. छुटकी (प्रीति)	लवलीन मिश्रा	छात्रा लेडी श्री राम
10. डॉ. अश्विनी कुमार	डॉ. अश्विनी कुमार	सफदरजंग अस्पताल में डॉ.
11. प्रोफेसर सुधीर सिन्हा	एस.एम. जहीर	मंच अभिनेता, इंजीनियर
12. डाक्टर अपर्णा	अपर्णा कटारिया	अभिनेत्री
13. उषारानी	रेणुका इसरानी	छात्रा एन.एस.डी.
14. किशोरीलाल	कुलभूषण सेठी	व्यापारी
15. कामिना	कामिया मल्होत्रा	फिल्मों में आने वाली है।
16. प्रिंस अजयसिंह	आसिफ शेरा	मॉडल और अभिनेता
17. महादेव बाबू	शमशेर सिंह ठकुर	रेडियो. टी.वी. अभिनेता
18. निक्का (केसरी)	विजय कुमार	व्यापारी
19. टोनी (त्रिभुवन)	मनोज पाहवा	मॉडल और अभिनेता
20. विलायती चाचा (शालिगराम)	अरुण सहगल	प्राध्यापक
21. विलायती चाची (शकुन)	पूनम माथुर	गृहिणी
22. मारिया	सरिता सरना	छात्रा जीसस एण्ड मैरी
23. अनुराग	प्रदीप सक्सेना	कम्प्यूटर इंजीनियर
24. इंस्पेक्टर नामदार	राजेन्द्र पूपू	छात्र जे.एन.यू.
25. ए.सी.पी. खान	कुरैशी	प्राध्यापक

सकती....।"

"क्यों....?" किताब में झुका हुआ चेहरा उठाया छुटकी ने।

"देख नहीं रही—मैं रियाज़ कर रही हूं...।" झल्लाए हुए स्वर में ही बोली मंझली।

"और तू नहीं देख रही मैं पढ़ाई कर रही हूं...।"

छुटकी के इस जवाब के साथ ही ढीली पड़ गई मंझली।

"प्लीज़ छुटकी—रियाज़ करने दे यार....।"

"प्लीज़ मंझली—मुझे पढ़ने दे यार....।"

"और प्लीज़—तुम दोनों मुझे भी ये बैंक वाला फार्म भरने दो ना यार....एक तो पहले ही अपुन के पल्ले कुछ नहीं पड़ रहा और ऊपर से तुम दोनों—उफ...।"

"पल्ले भी कैसे पड़ेगा लल्लू भैया—फार्म अंग्रेजी में है और आप...।"

"ए...ए छुटकी—वाट लल्लू—यू नो—आई एम यौर एल्डर ब्रदर एल. प्रसाद—आई मीन ललित प्रसाद...।"

"ओ.के. एल. प्रसाद जी...।"

"ओ.के....ओ.के....।" सहमति में सिर हिलाया लल्लू ने—"एण्ड वहाट डू यू मीन—यौर मीनिंग देट आई डोंट नो इंगलिश एण्ड...।"

"बस बस लल्लू भैया—हमें पूरा यकीन हो गया—आप अंग्रेजी के महाविद्वान हैं—मगर फार्म में अंग्रेजी ही गलत लिखी है—इसीलिए असुविधा हो रही है...।"

"वही तो... वही तो...। ससुरों को अंग्रेजी भी लिखनी ना आए है और ऊपर से यह भी नहीं कह सकते कि असुविधा के लिए खेद है...।"

"बस—बस—जाने दीजिए—लाइए आपका सैवन हन्ड्रेड डैश थर्टीन हन्ड्रेड वाला फार्म मैं ही भर देती हूं।" प्रीति यानि छुटकी ने जैसे दरियादिली दिखाई।

"व्हाई नाट—ये की ना तूने छोटी बहन वाली बात...।"

निकलना तो कोई मायने ही नहीं रखता था—भरा पूरा पारिवार थ बसेसर राम जी का।

दादा जी यानि बसेसर राम के पिता—इस परिवार के लिए आदर्श मगर बसेसर राम को उनकी हर बात में कोई न कोई व्यंग्य ही छिपा नज़र आता है—दादी जी—पूरी तरह से दुनिया की मोह माया में डूबी हुई नारी—जीवन की आखिरी सांस तक सुख सुविधाओं की लालसा रखने वाली। और इन्हीं दादा-दादी की पुत्रवधु यानि बसेसर राम की दूसरी पत्नी भागवंती—अपने आप में ही सिमटी हुई डरी सी सहमी सी ममता की मारी नारी—सात बच्चों की मां—पांच लड़कियां व दो लड़के—दो लड़कियों की शादी हो चुकी—पांच यहीं हैं—इसी फलैट में।

बड़की यानि गुणवंती—सूरत भले ही बहुत अच्छी न मिली हो मगर सीरत ज़रूर है। लल्लू यानि ललित प्रसाद, हर समय सात सौ—तेरह सौ के ग्रेड के ख्वाब देखने वाला—अंग्रेजी की टांग तोड़ने वाला महाविद्वान। मझली यानि रूपवंती—सूरत तो मंझली के पास भी नहीं मगर हाव-भाव से अपने आपको किसी हिट हीरोइन से कम प्रदर्शित नहीं होने देना चाहती। नन्हे यानि चन्द्रप्रकाश—बेचारा ना जाने कैसे आ फंसा इस परिवार में—हर समय बड़ी बड़ी बातें—जमीन पर रह कर आकाश की बातें—छुटकी यानि प्रीति—घर भर की चहेती—अच्छे बुरे की तमीज़ रखने वाली लाडली छुटकी।

□□□

छुटकी को जोर जोर से पढ़ता देखकर मंझली को अपने रियाज़ में बाधा पड़ती हुई महसूस हुई—एकाएक झल्ला सी उठी मंझली।

"ए छुटकी की बच्ची—धीरे बोल कर पढ़ाई नहीं की जा

"नन्हें—ज्यादा धन्ना सेठ तो बन मत—जा भाई अपना काम कर—छुटकी को फार्म भरने दे—फार्म....।"

"वाह एल. प्रसाद जी ग्रेट—फार्म छुटकी भरेगी और इन्टरव्यू आप देंगे—बहुत खूब...।"

और नन्हें की बात के जवाब में लल्लू कुछ कहना ही चाहता था कि तभी...।

"थप...।"

"थप—थप...।"

"लगता है बापू आ गए....।" बुदबुदाई सी छुटकी।

एक खामोशी सी छा गई वहां—बसेसर राम जी की मौजूदगी के अहसास के साथ ही।

बड़की ने उठकर आगे बढ़ते हुए दरवाज़ा खोल दिया।

बसेसर राम ही थे—उनके पिता...।

"ये क्या हंगामा मचा रखा है तुम सबने...।" बसेसर राम ने कमरे में प्रवेश करते ही चेहरे पर निगाह डाली—उनके हुलिए से तो स्पष्ट ही था कि वह इतनी सुबह ही दो घूंट चढ़ा कर ही आये हैं।

"कुछ नहीं—कुछ भी तो नहीं डैड—हम तो...।"

"देख भाई नन्हें—तुझे कितनी ही बार बोला है हमने—जीते जागते बाप को डैड मत बोला कर—वैसे ये बात तो मुझे भी पता है कि तुम लोगों के लिए तो मरे ही बराबर हूं मैं—तभी तो इस घर में मेरी नहीं तुम लोगों के दादा जी की चलती है—मैं तुम्हारा बाप होकर भी पराया ही रहा और तुम्हारा चाचा सालिगराम यहा से हज़ारों मील दूर विदेश में रहता हुआ भी तुम लोगों का सगा हो गया—अब तुम्हारी भी क्या कहूं—तुम्हारी मां यानि मेरी घरवाली भागवंती भी तो देवर सालिगराम के ही गुण गाए है...।"

रसोई में खामोशी से चौके बरतन में लगी भागवंती अपने बारे में होती बातचीत को सुन रसोई से बाहर निकलकर कमरे में आ गई।

"किसी के गुन गाने या ना गाने की बात तो मैं ना जानं हं जी

खुशी से खिल उठा लल्लू का चेहरा— "भर तो मैं खुद भी दे
मगर वो क्या है कि इस वक्त मैं वहुत विज़ी हूं...।"

"अंगूर खट्टे वाली बात है एल प्रसाद जी....।"

यह चौथा स्वर नन्हे का था—नन्हे यानि चन्द्रप्रकाश व

"ऐ-ऐ—नन्हें—तू कहां से टपक पड़ा—ये वीच में
अड़ाने की आदत नहीं जायेगी तेरी....।"

"टंगड़ी का मज़ा तो अपना ही होता है भाई साहव—
वार किसी को देकर तो देखिए टंगड़ी...।"

"हां—सामने वाला टांग ही ना तोड़कर रख
हमारी—हम नहीं खेलते ऐसे खतरनाक खेल—और तुझे भी एल
व्रदर होने के नाते यही समझाया करते हैं कि—इतना आकाश
उड़ा कर कि सैवन हन्ड्रेड डेस थर्टीन हण्ड्रेड वाले ग्रेड से भी ज
रहे....।"

"आकाश में उड़ने वाले सैकड़ों के नहीं हज़ारों के ख
देखा करते हैं मिस्टर एल. प्रसाद—लाखों की बातें किया व
हैं—करोड़ों के....।"

"वस—वस—ये लाख करोड़ तू अपने पास ही रख मुझे
चक्कर आने लगा तेरी वातों से....।"

"अपने करोड़ों में से दस वीस लाख मुझे भी दे
नन्हे—तेरी वहन हूं यार...।" मंझली शरारती लहज़े में बोल

"ओ.के. सिस्टर—जाओ पचास लाख तुम्हारे खाते में
डाल दिए—तुम भी क्या याद करोगी किसी रईस से पाला
था—अच्छा चलो पचास लाख वड़की के खाते में भी...।"

मेजपोश पर कढ़ाई करती वड़की यानि गुणवंती ने पह
वार मेजपोश से चेहरा उठाया— "मुझे तो सैंकड़ों की जिदगी
ही आदत पड़ी हुई है नन्हें—मैं क्या करूंगी लाखों का....।"

"मगर नन्हें महाराज अपना वचन वापिस भी तो नहीं
सकते—हां आपकी इच्छा पर किसी और खाते ट्रांसफर किए
सकते हैं ये रुपये....।"

लड़की बाद में और पहले दहेज में साढ़े सात हज़ार रुपये नकद चाहिए और अपने पास तो साढ़े सात रुपये भी नहीं हैं—उन्हें देने को—हां तेरी बचत खाते की बुगनी में कुछ हो तो पता नहीं...।''

पास ही सिर झुकाए बैठी सब सुनती हुई बड़की की निगाहें भरती चली गईं—वह उठी और सिर झुकाए हुए ही तेज कदमों से साथ वाले कमरे में घुस गई।

''यह बात बड़की के पीछे भी बता सकते थे आप...।'' दर्द से भरता चला गया भागवंती का स्वर-बड़की की तड़प को खूब समझती थी वह।

''अरी भागवंती—सच भी छिपाने से छिपता है क्या— अपने को दर्द नहीं होता क्या यह सब कहने से—मगर जब नसीब ही ऐसा हो तो किया भी क्या जा सकता है...।''

''परेशान मत होइए जी—ईश्वर करेगा तो सब ठीक हो जायेगा...।''

''हां—इसी इंतजार में तो जिन्दगी कट गई भागवंती—खैर जाने दे-हां, तेरे पास कुछ रूपये होंगे क्या—मन थोड़ा परेशान हो गया है ना—दो घूंट लगा लूंगा तो...।''

''शराब से मैंने तो किसी को राहत मिलती ना देखी जी—क्यों उतारते हो इतना ज़हर अपने सीने में...।''

''देख भागवंती—मैंने तेरे को पैसे देने को बोला है—लैक्चर तो दिए मत कर...।''

''कौन अभागिन ऐसी होगी जो चाहेगी कि उसका पति उसी के दिए पैसों से अपनी हलक में ज़हर उंड़ेले...।'' कंपित स्वर में इतना ही कह सकी भागवंती और फ़िर जाने कब से गालों पर ढुलक आए आंसूओं को धोती के पल्लू से पौंछती हुई रसोई में घुस गई।

नन्हें और लल्लू तो पहले ही वहां से खिसक लिए थे—अब छुटकी भी अपनी किताब उठाकर साथ वाले कमरे की तरफ बढ़ गई।

सभी जानते थे कि शराब के लिए रूपये ना मिल पाने की

मगर किसी की बुराई भी ना हो सके है मुझसे...।" दबे स्व
बोली भागवंती—वैसे तो उसका स्वर तब से दबा रहा था ज
इस घर की बहू बन कर आई थी।

"हां भागवंती हां—बुरा तो तेरा आदमी बसेसर राम ही है
जमाने भर की बुराई करता फिरता है....।"

"मैंने ऐसे तो नहीं बोला जी...।" तड़प सी उठी भागवं

"हां भागवंती—तूने कुछ भी नहीं बोला—मगर तू हमे
खामोश रहकर भी बहुत कुछ बोलती रही—खैर जाने दे—हां
तू साऊथ एक्सटेंशन वाला पेमेंट लाया कि नहीं...।"

"रकम तो वसूल हो गई बापू—मगर आधे तो देनदारी मे
चले गए और आधे दादा जी के कहने पर डाकघर के बचत खा
जमा करवा दिए...।" नन्हें डरते-डरते बोला।

"अबे गधे—बिज़नेस हम चलाते हैं या तेरे दादा जी—देन
बाद में नहीं दी जा सकती थी क्या...?"

"माल तो हम ही लाते हैं बापू—देनदारी चुकाएं नहीं तो
उधार कैसे मिलेगा...?" नन्हें ने हिम्मत करके कह ही दिय

"ठीक है—ठीक है मगर बचत खाता कौन सा भागा जा र
था...।"

"कल बड़की की शादी भी करनी है जी—चार पैसे पास
होंगे तो काम ही आएंगे...।" कंपित हो उठा भागवंती
स्वर—बड़की यानि गुणवंती की शादी की सोच जो जुड़ गई
उसके साथ।

"ये दो दो चार रुपये जमा करने से बेटियों की शादी
हुआ करती भागवंती—हां तेरे बड़ौच वालों का पोस्टकार्ड भी
गया था कल...।"

"क्यों—क्या लिखा है जी—उन्हें हमारी बड़की पसंद त
ना...?" भागवंती की निगाहों में आशा की एक किरण
चमकी।

"पसंद नापसंद का सवाल ही कहां है भागवंती—उन्हें

लड़की बाद में और पहले दहेज में साढ़े सात हज़ार रुपये नकद चाहिए और अपने पास तो साढ़े सात रुपये भी नहीं हैं—उन्हें देने को—हां तेरी बचत खाते की ब्गनी में कुछ हो तो पता नहीं...।"

पास ही सिर झुकाए बैठी सब सुनती हुई बड़की की निगाहें भरती चली गईं—वह उठी और सिर झुकाए हुए ही तेज कदमों से साथ वाले कमरे में घुस गई।

"यह बात बड़की के पीछे भी बता सकते थे आप...।" दर्द से भरता चला गया भागवंती का स्वर-बड़की की तड़प को खूब समझती थी वह।

"अरी भागवंती—सच भी छिपाने से छिपता है क्या— अपने को दर्द नहीं होता क्या यह सब कहने से—मगर जब नसीब ही ऐसा हो तो किया भी क्या जा सकता है...।"

"परेशान मत होइए जी—ईश्वर करेगा तो सब ठीक हो जायेगा...।"

"हां—इसी इंतजार में तो जिन्दगी कट गई भागवंती—खैर जाने दे-हां, तेरे पास कुछ रूपये होंगे क्या—मन थोड़ा परेशान हो गया है ना—दो घूंट लगा लूंगा तो...।"

"शराब से मैंने तो किसी को राहत मिलती ना देखी जी—क्यों उतारते हो इतना ज़हर अपने सीने में...।"

"देख भागवंती—मैंने तेरे को पैसे देने को बोला है—लैक्चर तो दिए मत कर...।"

"कौन अभागिन ऐसी होगी जो चाहेगी कि उसका पति उसी के दिए पैसों से अपनी हलक में ज़हर उंड़ेले...।" कंपित स्वर में इतना ही कह सकी भागवंती और फ़िर जाने कब से गालों पर ढुलक आए आंसूओं को धोती के पल्लू से पौंछती हुई रसोई में घुस गई।

नन्हें और लल्लू तो पहले ही वहां से खिसक लिए थे—अब छुटकी भी अपनी किताब उठाकर साथ वाले कमरे की तरफ बढ़ गई।

सभी जानते थे कि शराब के लिए रूपये ना मिल पाने की

मगर किसी की बुराई भी ना हो सके है मुझसे...।" दवे स्व
बोली भागवंती—वैसे तो उसका स्वर तब से दबा रहा था ज
इस घर की बहू बन कर आई थी।

"हां भागवंती हां—बुरा तो तेरा आदमी बसेसर राम ही है
जमाने भर की बुराई करता फिरता है....।"

"मैंने ऐसे तो नहीं बोला जी...।" तड़प सी उठी भागवं

"हां भागवंती—तूने कुछ भी नहीं बोला—मगर तू हमे
खामोश रहकर भी बहुत कुछ बोलती रही—खैर जाने दे—हां
तू साऊथ एक्सटेंशन वाला पेमेंट लाया कि नहीं...।"

"रकम तो वसूल हो गई बापू—मगर आधे तो देनदारी में
चले गए और आधे दादा जी के कहने पर डाकघर के बचत खा
जमा करवा दिए...।" नन्हें डरते-डरते बोला।

"अबे गधे—बिज़नेस हम चलाते हैं या तेरे दादा जी—देन
बाद में नहीं दी जा सकती थी क्या...?"

"माल तो हम ही लाते हैं बापू—देनदारी चुकाएं नहीं तो
उधार कैसे मिलेगा...?" नन्हें ने हिम्मत करके कह ही दिय

"ठीक है—ठीक है मगर बचत खाता कौन सा भागा जा र
था...।"

"कल बड़की की शादी भी करनी है जी—चार पैसे पास
होंगे तो काम ही आएंगे...।" कंपित हो उठा भागवंती
स्वर—बड़की यानि गुणवंती की शादी की सोच जो जुड़ गई
उसके साथ।

"ये दो दो चार रुपये जमा करने से बेटियों की शादी
हुआ करती भागवंती—हां तेरे बड़ौच वालों का पोस्टकार्ड भी
गया था कल...।"

"क्यों—क्या लिखा है जी—उन्हें हमारी बड़की पसंद त
ना...?" भागवंती की निगाहों में आशा की एक किरण
चमकी।

"पसंद नापसंद का सवाल ही कहां है भागवंती—उन्हें

तस्वीर भेजनी पड़ेगी मुझे...।"

"नहीं—हमें तुम्हारे करैक्टर पर पहले ही पूरा भरोसा है अश्वनी—हां वैसे तुम शादी ना करने की जिद करके ही क्यों बैठे हो...।" पास ही बैठी हुई डाक्टर अर्पणा पहली बार बोली।

"मगर अर्पणा जी—मैं भी शादी करने से कब इन्कार कर रहा हूं—मगर वह भी आखिर मेरे सामने आए जिसे मैं सालों से अपने ख्वाबों में तराशता रहा हूं...।" शायराना हो उठा डाक्टर अश्वनी का स्वर।

"हूं—तो ऐसे बोलो ना...।" अपनी कुर्सी को अश्वनी की कुर्सी के पास खिसका लिया डाक्टर अनिता ने—"हां तो कौन है वह हसीना—हमें बताओ—हम उसे खुद ही तुम्हारे सामने ला खड़ा कर देंगे...।"

"मुझे भी क्या पता—ना जाने कौन है वह—ना जाने कहां रहती है—मैंने तो उसे कभी देखा भी नहीं...।"

"क्या...?" डाक्टर अनीता और अर्पणा दोनों ही चौंक पड़ीं।

"जी हां—मगर इतना यकीन है—वह जब भी—जहां भी मिलेगी—उसे फौरन पहचान लूंगा—पहली ही निगाह में जान जाऊंगा कि ये वही है—वही है—वही है...।"

"वही...?" बड़बड़ाई सी थी अर्पणा।

"जी हां वही—जिसका मैं हमेशा इंतजार करता रहा...।" खोया हुआ था अश्वनी का स्वर—मगर तुरन्त ही अपने आपको संभाल लिया उसने—"अच्छा मैं ज़रा वार्ड का एक राउंड लगा लूं...।" उठ खड़ा हुआ वह। और वह किसी से कुछ कहे सुने विना ही एप्रीन को कन्धे पर डाले हुए ही केबिन से बाहर निकल गया। डाक्टर अनिता और अर्पणा कुछ समय तक तो एक दूसरे की तरफ हैरत से देखती रहीं और फिर स्वयं ही हंस पड़ीं।

अजीब सा दीवानापन था डाक्टर अश्वनी का।

□□

मगर किसी की बुराई भी ना हो सके है मुझसे...।" दबे स्वर में बोली भागवंती—वैसे तो उसका स्वर तब से दबा रहा था जब से इस घर की बहू बन कर आई थी।

"हां भागवंती हां—बुरा तो तेरा आदमी बसेसर राम ही है जो जमाने भर की बुराई करता फिरता है....।"

"मैंने ऐसे तो नहीं बोला जी...।" तड़प सी उठी भागवंती।

"हां भागवंती—तूने कुछ भी नहीं बोला—मगर तू हमेशा खामोश रहकर भी बहुत कुछ बोलती रही—खैर जाने दे—हां नन्हें तू साऊथ एक्सटेंशन वाला पेमेंट लाया कि नहीं...।"

"रकम तो वसूल हो गई बापू—मगर आधे तो देनदारी में ही चले गए और आधे दादा जी के कहने पर डाकघर के बचत खाते में जमा करवा दिए...।" नन्हें डरते-डरते बोला।

"अबे गधे—बिज़नेस हम चलाते हैं या तेरे दादा जी—देनदारी बाद में नहीं दी जा सकती थी क्या...?"

"माल तो हम ही लाते हैं बापू—देनदारी चुकाएं नहीं तो आगे उधार कैसे मिलेगा...?" नन्हें ने हिम्मत करके कह ही दिया।

"ठीक है—ठीक है मगर बचत खाता कौन सा भागा जा रहा था...।"

"कल बड़की की शादी भी करनी है जी—चार पैसे पास में होंगे तो काम ही आएंगे...।" कंपित हो उठा भागवंती का स्वर—बड़की यानि गुणवंती की शादी की सोच जो जुड़ गई थी उसके साथ।

"ये दो दो चार रुपये जमा करने से बेटियों की शादी नहीं हुआ करती भागवंती—हां तेरे बड़ौच वालों का पोस्टकार्ड भी आ गया था कल...।"

"क्यों—क्या लिखा है जी—उन्हें हमारी बड़की पसंद तो है ना...?" भागवंती की निगाहों में आशा की एक किरण सी चमकी।

"पसंद नापसंद का सवाल ही कहां है भागवंती—उन्हें तो

तस्वीर भेजनी पड़ेगी मुझे...।"

"नहीं—हमें तुम्हारे करैक्टर पर पहले ही पूरा भरोसा है अश्वनी—हां वैसे तुम शादी ना करने की जिद करके ही क्यों बैठे हो...।" पास ही बैठी हुई डाक्टर अर्पणा पहली बार बोली।

"मगर अर्पणा जी—मैं भी शादी करने से कब इन्कार कर रहा हूं—मगर वह भी आखिर मेरे सामने आए जिसे मैं सालों से अपने ख्वाबों में तराशता रहा हूं...।" शायराना हो उठा डाक्टर अश्वनी का स्वर।

"हूं—तो ऐसे बोलो ना...।" अपनी कुर्सी को अश्वनी की कुर्सी के पास खिसका लिया डाक्टर अनिता ने—"हां तो कौन है वह हसीना—हमें बताओ—हम उसे खुद ही तुम्हारे सामने ला खड़ा कर देंगे...।"

"मुझे भी क्या पता—ना जाने कौन है वह—ना जाने कहां रहती है—मैंने तो उसे कभी देखा भी नहीं...।"

"क्या...?" डाक्टर अनीता और अर्पणा दोनों ही चौंक पड़ीं।

"जी हां—मगर इतना यकीन है—वह जब भी—जहां भी मिलेगी—उसे फौरन पहचान लूंगा—पहली ही निगाह में जान जाऊंगा कि ये वही है—वही है—वही है...।"

"वही...?" बड़बड़ाई सी थी अर्पणा।

"जी हां वही—जिसका मैं हमेशा इंतजार करता रहा...।" खोया हुआ था अश्वनी का स्वर—मगर तुरन्त ही अपने आपको संभाल लिया उसने—"अच्छा मैं ज़रा वार्ड का एक राउंड लगा लूं...।" उठ खड़ा हुआ वह। और वह किसी से कुछ कहे सुने बिना ही एप्रीन को कन्धे पर डाले हुए ही केबिन से बाहर निकल गया। डाक्टर अनिता और अर्पणा कुछ समय तक तो एक दूसरे की तरफ हैरत, से देखती रहीं और फिर स्वयं ही हंस पड़ीं।

अजीब सा दीवानापन था डाक्टर अश्वनी का।

□□

वजह से उनके बापू कभी किसी पर झल्लाएंगे तो कभी कि
पर—मगर अब तो अकेले ही रह गए थे वह—अपनी झल्लाहट
पर ही उतारने के लिए।

"सौरी—वैरी सौरी डाक्टर अनीता कपूर—फिलहा
यानि आपके सामने खड़ा बेचारा डाक्टर अश्वनी आपकी इस
को पूरा करने में पूरी तरह से असमर्थ है...।" युवा डाक्टर अ
ने, लाचारी से कन्धे उचकाए।

"यानि कि तुम हमसे जूनियर होने के बावजूद ह
बात मानने से इंकार कर रहे हो...।" डाक्टर अनीता क
अपने सीनियर होने का कृत्रिम रोआब मारा।

"जी हां—आपका जूनियर तो हूं ही—आप कहें तो
आदेश का पालन ना करने के जुर्म में कान पकड़ कर ऊठक
लगा सकता हूं मैं मगर अभी शादी नहीं कर सकता—और पि
बात की परेशानी तो आपको नहीं मुझे होनी चाहिए
अनीता कपूर...।"

"क्यों—तुम्हें ही क्यों...?" अनिता कपूर ने डाक्टर अ
के चेहरे पर निगाहें जमाए हुए ही सवाल किया।

"क्योंकि अपने हर लैटर में मेरी भाभी मुझसे एक ही
पूछती हैं—कहीं हॉस्पिटल वाली डाक्टरनी अनीता से तुम्हा
चक्कर तो नहीं चल रहा—जो हर बार शादी से इन्कार
हो...।"

"शटअप अश्वनी—ऐसी बात सोचते हुए भी श
आती तुम्हें...।"

"मुझे तो बहुत आती है मगर शायद मेरी भाभी व
आती—लगता है किसी दिन आप से राखी बंधवाते हुए भी

था—इधर उधर तांक झांक करते हुए।

"कोला-ऑरेंज या लाइम—लेमन...।"

"कोला बम्ब भोला जो भी हो वही ले आओ...।" नन्हें की अंग्रेजी से ही घबरा गए लड़के के पिता—"ये आपका बेटा अंग्रेजी ही झाड़ता है बसेसर जी—या कुछ करता भी है...?"

"अभी तो पढ़ता है—वैसे मेरे फ्रेम बनाने के धन्धे में भी पूरा हाथ बंटाता है...।"

"और मेरे बड़े ब्रदर एल. प्रसाद आई.ए.एस. में बैठ रहे हैं...।" नन्हें ने अपने लल्लू भैया यानि ललित प्रसाद की धाक जमानी चाही।

"जब आ जाए तब बताना बरखुददार—बैठने का क्या है—जहां मर्जी बैठ लो—जितनी बार बैठ लो...।"

"नन्हें भाई अब तू कुछ लायेगा भी या...?"

"जस्ट ए मिनट डैड...।"

और नन्हें के जाते ही बसेसर राम ने अपनी उत्सुकता शांत करनी चाही।

"तुम क्या करते हो बेटे...?" राम किशोर के चेहरे पर निगाहें जमाई बसेसर राम ने।

"मैं रोज दिल्ली बम्बे चलता हूं जी—डीलक्स पर...।" डीलक्स पर अधिक जोर डाला राम किशोर ने।

"कुछ कहलाते भी तो होगे बेटे...?"

"कहलाता तो ये राम किशोर ही है जी—घर पर भी और बाहर भी—ज्यादा पूछताछ करनी है तो रेलवे वालों से कर लो...।"

"नहीं जी—पूछताछ क्या करनी है—मैं तो ऐसे ही बात कर रहा था...।" राम किशोर के पिता का रूख देख कर तुरन्त ही बात बदल दी बसेसर राम ने—लड़की के पिता होने का अहसास था उनके अन्दर।

नन्हें साफ्ट ड्रिंक ले आया था—राम किशोर के पिता

अजीव सा दीवानापन था नन्हें यानि चन्द्रप्रकाश के अन्दर-सुवह से ही काम में जुड़ा हुआ था—इधर उधर की भाग दौड़ में अपना होश तक नहीं था उसे।

वैसे इस भागदौड़ का एक विशेष कारण भी था—वड़की को देखने के लिए कुछ लोग आ रहे थे और इसीलिए वेचारा नन्हें अपने घर का हुलिया संवारने के प्रयास में कहीं से सोफा तो कहीं से टी.वी. तो कहीं से कुछ ले आया था—इधर उधर से जोड़ तोड़ करके अपना काम निकाल लेने में माहिर था वह।

आज फिर वडकी का श्रृंगार किया गया—वह खूवसूरत से खूवसूरत नजर आए इसके लिए भरपूर प्रयास किया गया—मंझली और छुटकी ने अपनी तरफ से तो कोई कसर रहने नहीं दी—ऊपर से उनकी दादी ने उसे वड़े अंदाज़ मे उठने वैठने, वोलने के अंदाज़ सिखा दिए।

मगर लड़के के पिता को वड़की में दिलचस्पी ही कहा थी—उन्हे तो दिलचस्पी थी मतलव की वात में—तभी तो वह और उनका वेटा राम किशोर जैसे ही घर में आकर वैठे-वैसे ही उन्हें जल्दी होने लगी।

''हां तो वसेसर राम जी—आपके घर तो आ ही गए हम—अव मतलव की वात हो जाए...।''

''मतलव की वात भी हो ही जायेगी—पहले कुछ लीजिए तो आप...।''

और वसेसर राम की वात पूरी होने से पहले ही नन्हें वोल उठा।

''टी—कॉफी और साफट ड्रिंक...?''

''तुम्हारे पास ठडी वोतल भी तो होगी भाई...?'' स्वर लड़के के पिता का था—लड़का राम किशोर तो खामोश ही वैठा हुआ

हुए स्वर में

"क्यों होगा भाई—गायन तो एक कला है और यह कला—यह प्रतिभा हर एक के पास नहीं हजारों लाखों में से एकाध के पास होती है—और यह तुम्हारी खुशकिस्मती है कि यह प्रतिभा तुम्हारे अन्दर भी है—और तुम्हारी इस प्रतिभा को उभार कर तुम्हें कुन्दन की तरह तराश देगें—देख लेना एक दिन देश के कोने कोने में तुम्हारा—सिर्फ तुम्हारा ही नाम होगा—हां क्या नाम बताया तुमने अपना...।"

"जी—मंझली...?" प्रतिम उस्ताद ने आश्चर्य से मंझली की तरफ देखा—प्रश्न वाचक निगाहों से।

"जी मेरा मतलब—रूपवंती। मंझली मेरा घर का नाम है...।" मंझली ने तुरन्त भूल सुधारी।

"मगर रूपवंती भी तो बड़ा अजीब सा नाम है खैर कोई बात नहीं—स्टेज की दुनिया में हम तुम्हारा नाम रूपा रखते हैं मिस रूपा—और रूपा तुम देख लेना—हमारी शागिर्दी में तुम तहलका मचा दोगी तहलका...।"

"मगर मेरे परिवार वाले...।" अभी भी हिचक रही थी मंझली—जानती थी कि घर में किसी को भी यह बात पसंद नहीं है कि वह प्रीतम उस्ताद के पास जाएं—इस बात पर तो डांट भी पड़ चुकी थी उसे।

"अरे प्रीतम उस्ताद के होते हुए तुम्हें चिन्ता ही किस बात की है—हम राजी कर लेंगे तुम्हारे घरवालों को—ऐसी प्रतिभा हम इस तरह नष्ट थोड़े ही होने देंगे हम...।"

"क्या...क्या मैं वास्तव में ही अच्छा गाती हूं प्रीतम उस्ताद...?" पुलक सी उठी मंझली।

"अच्छा...। तुम बहुत अच्छा गाती हो रूपा-तुम पैदा ही कला के लिए हुई हो—मेरे पास तो ऐसी ऐसी लड़कियां आई जो तुम्हारी धूल के बराबर भी नहीं थीं—और आज उनमें से कोई कहां हैं—कोई कहां—देख लेना रूपा—एक दिन तुम भी चांद सितारों मे

शब्दों में ठंडी बोतलें।

और फिर राम किशोर के पिता बड़की से ज्यादा मतलब
बात में उत्सुक नज़र आते थे—लड़की देखने की चाह तो र
किशोर में थी—खुद अंग्रेजी ना जानते हुए भी बड़की से टूटी प
अंग्रेजी में दो चार उल्टे सीधे सवाल किए उसने—वह सव
जिनका उत्तर वह स्वयं भी नहीं जानता था।

और फिर बसेसर राम जी राम किशोर और उसके पिता
साथ मतलब की बात का मसला निपटाने के लिए अपने पड़
रोशनलाल जी के घर चले गए थे।

बसेसर राम जी गए तो बात पक्की करने थे—जेब
इक्यावन रुपये भी लेकर गए थे जिससे कि लड़का रोक सकें—
यह रुपये भी नन्हें और लल्लू के दादा जी ने ही दिए थे बसेसर
को—मगर बसेसर राम जब काफी समय के बाद घर लौटे तो
मिठाई का डिब्बा नहीं था—बल्कि चाल और हाव भाव में दारु
लड़खड़ाहट थी।

और उनकी लड़खड़ाहट ने यह बात खुद ही स्पष्ट कर दी
बड़की की किस्मत का सितारा आज भी नहीं चमका।

कुछ पूछने की जरूरत भी क्या थी और फिर कुछ व
लायक थे भी कहा बसेसर राम।

[

"हूं—तो तुम्हारे घरवालों को इस बात में ऐतराज है-
तुम हमसे यानि प्रीतम उस्ताद से गीत संगीत सीखना चा
हो ?" प्रीतम उस्ताद की निगाहें एकटक मझंली के चेहरे
जमी रही।

"ऐतराज है नहीं मगर होगा—क्योंकि अभी तो उन्हें
बात का पता नहीं कि मैं आपके पास आई हूं...।" मझंली घब

साहिबा।"

"हूं—यानि तीन मेहमान पहले भी आपके घर में मौजूद हैं...?" अर्पणा का स्वर गंभीर हो उठा।

"हां डाक्टरनी साहिबा—और तीनों ही सुसरी लड़कियां हैं।"

"और इस बार लड़का चाहते हो तुम...?" व्यंग्य भरा था डाक्टर अर्पणा सिन्हा का स्वर।

"हां डाक्टरनी साहिबा—लड़का हो जाए तो भाग बदल जाए हमारा...।" जीते जागते ही जैसे ख्वाब देख उठा राम अंजौर।

"और अगर इस बार लड़की ही हुई तो...?"

"नहीं नहीं—ऐसी बात मत कहिए डाक्टरनी साहिब—हम तो बर्बाद ही हो जायेंगे..।"

"और अगर लड़का भी हो गया—तब भी आबाद नहीं हो पायेंगे आप? आपका हुलिया और आपकी बीवी की गिरी हुई सेहत आपके घर की कहानी बता रही है मिस्टर राम अंजौर...।"

"डाक्टरनी साहिब आप...।"

"खैर जाने दीजिए—जो होना था—वह तो हो चुका—अब तो संभल जाइए आप—इस बार लड़का हो या लड़की—आगे चांस मत लीजिएगा—हमारी सलाह मानिए तो फौरन नसबंदी करवा डालिए...।"

"नसबंदी...।" बौखला सा उठा राम अंजौर—"ये आप कैसी बात कर रही हैं डाक्टरनी साहिबा...।"

"हम बिलकुल ठीक कह रहे हैं राम अंजौर जी—लड़का—सिर्फ एक लड़का की चाह रखते हुए या तो आप अपनी पत्नी को खो बैठेगें—या फिर अपने परिवार की सारी खुशियां...।" डाक्टर अर्पणा सिन्हा का अंदाज़ समझाने वाला था।

"डाक्टरनी जी ठीक ही तो कहती हैं—आप करवा ही क्यों नहीं लेते नसबंदी...।" रज्जो पहली बार बोली—सहमे स्वर में।

"लो तू भी आ गई ना डाक्टरनी जी की बातों में-ना

बातें करोगी पता नहीं उस दिन अपने इस प्रीतम उस्ताद को याद करोगी भी नहीं...।"

"नहीं-नहींआप कैसी बात कर रहे हैं प्रीतम उस्ताद...।" मंझली इस तरह बोली जैसे अभी ही चांद सितारों से बातें करने लगी हो वह।

"ठीक है—तब फिर एक बार सुनाओ वह गीत-वही जो अभी सुना रही थी तुम।"

और मंझली प्रीतम उस्ताद के आदेश को मान कर गाने लगी थी—यंत्रवत।

"आपको प्यार है कि नहीं है मुझसे
जाने क्यों ऐसे सवालात पे दिल तोड़ दिया...।"

और प्रीतम उस्ताद लोपुप निगाहों से मंझली की तरफ देखते हुए व्यर्थ की झूठी वाह वाह करने लगे थे। मंझली का भरा हुआ जिस्म उनकी निगाहों में आ बसा था।

कितनी अंजान थी मंझली—या फिर जानते समझते हुए भी अंजान बन रही थी।

□□

रज्जो का पूरी तरह से चेकअप करने के बाद बाहर अपन केबिन में आ गई डाक्टर अर्पणा सिन्हा—यहां रज्जो का पति राम अंजोर बैठा हुआ बड़ी बेचेनी से उनकी प्रतिक्षा कर रहा था।

उन्हें देखते ही झटके से उठ खड़ा हुआ वह।

"नहीं—अभी कोई खास बात नहीं है राम अंजोर जी—अभी आप अपनी पत्नी को घर ले जा सकते हैं—वैसे आपकी पत्नी की सेहत अच्छी नहीं है—ऐसी हालत में औरत के लिए बच्चे को जन्म देना खतरे से खाली नही होता—वैसे ये कौन सा केस है आपका...?"

"चौथी बार घर में मेहमान आने वाला है डाक्टरनी

कुछ बोली नहीं थी वह—खामोशी से उस ल॰
देखती रही थी—प्रश्न वाचक मुद्रा में। लेना

"डाक्टरनी जी—मेरी दीदी आपके हॉस्पिटल में भरती हे. आई थीं—वो क्या है—नन्हा मेहमान आने वाला है ना—मेहमान नम्बर चार—इसीलिए...।"

"तुम्हारी दीदी...?"

"जी हां—साथ में जीजा जी भी थे—मैं उन्हें ही मिलने आई हूं—राम अंजौर हैं मेरे जीजा जी का नाम...।"

"और दीदी का नाम रज्जो...?" बरबस ही मुस्करा उठी डाक्टर अर्पणा सिन्हा—यह लड़की पहली ही निगाह में बहुत अच्छी लगी थी उन्हें।

"जी हां—चलो ये समस्या तो हल हो गई—मैं तो सोच रही थी कि जीजा जी दीदी को कहीं और ना ले गए हों...।"

"नहीं—आए तो यहीं थे—मगर अब तुम्हें उनसे मिलने के लिए उनके घर ही जाना पड़ेगा। क्योंकि तुम्हारे जीजा जी तुम्हारी दीदी को घर ही ले गए हैं—अभी तुम्हारी रज्जो दीदी को हॉस्पिटल में एडमिट करने की जरूरत नहीं थी ना...?"

"ओह...। अच्छा मुझे एक सवाल आपसे पूछना है—डाक्टरनी जी...।"

"तुम्हारा नाम...?"

"छुटकी...। घर पर सब छुटकी ही कहते हैं"—वैसे स्कूल का नाम प्रीति है—हां तो मेरा सवाल...?

"देखो छुटकी—इस वक्त कोई सवाल ना ही करो तो अच्छा है—इस वक्त हमारे सिर में बहुत जोर का दर्द है...।"

"ओह—हां अगर बुरा ना माने तो सिर दर्द दूर भगाने का एक उपाय हम आप को बता दें—घर जाकर अपनी बेटी से कहिएगा कि वह आपके बालों को जड़ों अपनी अंगुलियों से तेल की मालिश करे—आपका सिर दर्द ठीक उसी तरह छू मंतर हो जायेगा—जिस तरह मैं यानि छुटकी आपकी निगाहों के सामने छूमंतर हो रही

डाक्टरनी जी राम अंजौर को तो रज्जो से लड़का चाहिए—लड़का—आप डाक्टर लोग तो जब देखो नसबंदी का ही गाना गाए रखते हो—वैसे अगर आप बुरा ना माने तो एक बात पूछ ही लें हम...।"

"हां-हां-पूछिए...।" डाक्टर अर्पणा ने अपने आप पर पूरी तरह से काबू पाए रखा।

"दूसरों को तो आप रोज ही नसबंदी की सलाह देती होंगी—क्या आपके पति या आपने भी करवाई है अपनी नसबंदी...?"

राम अंजौर से इस सवाल की उम्मीद नहीं थी डाक्टर अर्पणा को—ना जाने क्यों चेहरा एकदम उतरता चला गया—सन्नाटे की सी हालत में वहीं बैठी रह गई वह।

"बोलिए—बोलिए ना डाक्टरनी जी...। शायद मेरी बात का कोई जवाब नहीं है आपके पास...।"

"नहीं राम अंजौर जी—जवाब है हमारे पास...।" चेहरे को झटके से उठाया डाक्टर अर्पणा सिन्हा ने—"हमें नसबंदी की जरूरत ही नहीं—हमारे बच्चा नहीं होता...।" कहते हुए आहत होता चला गया उनका स्वर—दिल तो पहले ही आहत हो चुका था।

राम अंजौर और रज्जो दोनों अवाक से डाक्टर अर्पणा की तरफ देखते रह गए—अर्पणा की तड़प का अहसास स्पष्ट रूप से हो चुका था।

और इसके बाद राम अंजौर वहीं नहीं रूक सका था—फिर आने की बात कर रज्जो के साथ वहां से खिसक सा लिया था।

गले में स्टैथोस्कोप लटकाए हुए डाक्टर अर्पणा अकेली वहीं बैठी रह गई थीं—अपने दिल का दर्द स्वयं ही सहने के लिए।

मगर अधिक क्षण नहीं गुजरे थे—दरवाज़े से अन्दर केबिन में आती एक सीधी साधी चौदह पन्द्रह साल की लड़की को अन्दर आते देख उनकी तन्द्रा भंग हुई।

बोली—मंझली की मां भागवंती।

"मुझे प्रीतम उस्ताद की अच्छाई बुराई से क्या लेना मां—मुझे तो गीत संगीत से मतलब है और फिर बापू ने भी मुझे प्रीतम उस्ताद के पास जाने की इज़ाज़त दे दी है...।"

"बापू ने...?" नन्हें और लल्लू दोनों एक साथ बोल उठे—चकित से स्वर में।

"हां हमने दी इजाज़त...।"

और इस नवीन स्वर के साथ ही सबने ही चेहरा घुमाया—बसेसर राम ही थे—दरवाजे पर खड़े—चौखट पर हाथ जमाए हुए स्वर और निगाहें अभी भी नशे में डूबी हुई थीं।

बसेसर राम को देखते ही हर उठता हुआ स्वर खामोश हो गया—भगवंती ही बोली थी—दबे स्वर में। "मंझली का प्रीतम उस्ताद के पास जाना किसी को भी पंसद नहीं है जी—वह अच्छा आदमी नहीं है—सब यही बताते हैं...।"

"क्यों भाई—क्या बुराई है प्रीतम उस्ताद में—अरे वह तो एक दम फर्स्ट क्लास आदमी है—एकदम खरा और फिर सबसे बड़ी बात तो यह है कि हमारे उसके उस्ताद भी एक ही हैं—बेचारा खुद ही हमसे आकर मिला—बोला कि मंझली तो अपनी बेटी जैसी है—कोयल सा गला पाया है—दिल में कुछ सीखने की तमन्ना है—मगर आपकी इज़ाजत के बिना तो कुछ भी संभव नहीं—और हमने दे दी इज़ाज़त—और देख मंझली—तू भी कोई ऐसा वैसा काम मत कर बैठना जिससे इन सबके सामने मेरा सिर शर्म से नीचा हो जाए।...।"

"नहीं बापू...।" मंझली का स्वर खुशी से खिल उठा था।

"बापू आप प्रीतम उस्ताद को नहीं जानते—वह...।"

"देख नन्हें तू ज्यादा दिमाग तो खा मत—अरे मैं तेरा बाप हूं या तू मेरा...।"

और अब नन्हें भी खामोश था—लल्लू तो पहले ही अपना मुंह बंद कर चुका था।

डाक्टरनी जी चाहिए- गा...

साहिबा...?"

वास्तव में ही आंखों से ओझल हो गई।
सिन्हा एक बार अकेली रह गई थी मगर
सामने छुटकी का चेहरा और कानों में छुटकी
ी थी।
ोली भाली बातें...।

□□

"ऐ—देख मंझली—मैंने तुझे मना किया था कि ना उस प्रीतम उस्ताद के पास जाने को...।" नन्हें का स्वर गुस्से से भरा हुआ था।

"और आई एम—यानि कि मिस्टर एल. प्रसाद ने भी तो मना करा था इसे कि देख मंझली—लड़कियां घर में ही अच्छी लगती हैं—और फिर वह बदमाश प्रीतम उस्ताद तो...।"

"डीयर ब्रदर एल. प्रसाद—प्रीतम जी उस्ताद हैं—बदमाश नहीं...।" झल्ला उठी मंझली—प्रीतम उस्ताद के पास जाने के मसले को लेकर सभी तो उसके पीछे पड़े हुए थे।

"देख मंझली—चाहे वह प्रीतम उस्ताद हो चाहे बदमाश—तुझे आगे से उसके पास जाने की जरूरत नहीं है...।" नन्हें का अंदाज़ समझाने वाला था।

"मगर मुझे प्रीतम उस्ताद के पास जाने की जरूरत है—क्यों कि मैं गाना सीखना चाहती हूं...।"

"हां जी लता मंगेशकर को तो तू ही न वो क्या कहते हैं "बीट" करेगी...।" लल्लू ने व्यंग्य किया।

"हां करूंगी—आपको क्या...?"

"देख मंझली—जब कोई भी नहीं चाहता तो क्या जरूरत है तुझे उस प्रीतम उस्ताद के पास जाने की—और फिर वह प्रीतम उस्ताद अच्छा आदमी भी नहीं बतावें हैं।" भागवंती पहली बार

और आपका बच्चा.. ।". जमाने भर का दर्द सिमट आया था अर्पणा के स्वर में—आखें अनायास ही छलछला उठी थीं।

"अर्पणा...अर्पणा आप...। आप तो कभी कभी बहुत बचपना करती हैं अर्पणा...।"

"आप जानते हैं सुधीर—आज हमारे हॉस्पिटल में एक लड़की आई—छोटी नन्ही गुड़िया तो नहीं मगर हमें बिल्कुल वैसी ही लगी वह—अपने ख्वाबों की बेटी सी—उस वक्त भी हमारे सिर में बहुत जोर से दर्द हो रहा था सुधीर और वह हमसे बोली—डाक्टरनी जी आप घर जाकर अपनी बेटी से कहिएगा कि वह आपके बालों की जड़ों में नर्म नर्म उंगलियों से तेल की मालिश करें आपका दर्द खुद व खुद दूर हो जायेगा...।"

"अर्पणा आप...।"

"हम अपने सिर में उन नन्हे नन्हें हाथों से तेल की मालिश करवाने के लिए तरस रहे हैं सुधीर—बोलिए कहां से आयेगें हमारे लिए वह नन्हें नन्हें हाथ—कहां से लाए हम अपनी बेटी...?"

"अगर आपको अच्छा लगे तो आज हम ही आपकी बेटी बन जाएं...।"

और अर्पणा खामोशी से सुधीर की तरफ देखती रह गई—एक टक।

□□

"देखों—इस बार क्या होता है अपनी रज्जो जीजी के घर...?" स्वर मंझली का था।

"भगवान करे—इस बार लड़का ही हो...।" छुटकी ने जैसे शुभकामना व्यक्त की।

"हां—वरना जल्दी ही एक और नये मेहमान का नम्बर लग जायेगा—जीजा जी को लड़का चाहिए—लड़का—और एक लड़के

"प्रीतम उस्ताद बहुत अच्छा आदमी है भागवंती—मंझली को अपनी बेटी की तरह मानता है—अरे यार है अपना—ये इंगलिश दारू भी उसी ने पिलाई—साथ में टिक्का कबाब भी।"

'और इस वक्त आप नहीं यह इंगलिश दारू ही बोल रही है...।' भागवंती और नन्हें दोनों ने यही बात सोची थी मगर खामोश ही रहे थे।

कुछ कहने का लाभ था भी क्या...।

□□

"अर्पणा तुम...।"

"बस रहने दो सुधीर...हम जानते हैं—तुम हमेशा की तरह आज भी हमें बहलाने की कोशिश करोगे...।" तड़प सी उठी थी अर्पणा। अपने प्रोफेसर पति सुधीर सिन्हा के स्वभाव को अच्छी तरह से जानती थी वह।

"ऐसी बात नहीं है अर्पणा कि तुम्हारे दर्द को समझते नहीं हैं—और फिर यही दर्द क्या हमारे अन्दर नहीं है...?"

"मगर...।"

"मगर अर्पणा...इंसान की हर चाहत तो पूरी नहीं होती ना...।" अपनापन था सुधीर सिन्हा के स्वर में।

"हां-जानती हूं सुधीर—इंसान की हर चाहत पूरी नहीं होती—मगर हमारी तो सिर्फ एक ही चाहत है—सिर्फ एक बच्चे की चाहत—चाहे लड़का हो—चाहे लड़की...।"

"आप खुद डाक्टर है अर्पणा—अपने केस की प्राब्लम को आप खुद समझती हैं—और फिर अर्पणा—हमने तो आपको बहुत समझाया कि कोई बच्चा गोद ले लेते हैं—अनाथालय से ना सही—अपने रिशतेदारों में से ही किसी से...।"

"हमें अपना बच्चा चाहिए सुधीर—अपना बच्चा—हमारा

"शटअप नन्हें—शर्म नहीं आती—ऐसी बात करते हुए...।"

"आती है मोटी बहन—बरोबर आती है—तभी तो शर्म से पानी-पानी होकर हम यहां से खिसक रहे हैं—लाजो दीदी के घर—और हां ममी डार्लिंग—नन्हें बौस डिनर जीजा और जीजी के साथ ही लेगें—ओ.के. गुडबाय...।"

और नन्हें घर से बाहर निकल गया।

□□

"ऐ—ये तो गड़बड़ वाली बात है मिस लाजो...।"

"क्यों क्या हुआ रंजन...?" लाजो ने मुस्कराते हुए रंजन की तरफ देखते हुए कृत्रिम आश्चर्य व्यक्त किया।

"मैंने तो सोचा था कि आज तुमसे जल्दी घर आकर तुम्हें सरप्राइज दूंगा—मगर तुम तो आज भी बाज़ी मार ले गई—आज भी मुझसे पहले ही घर आ गई तुम...।"

"हां—आपको अपनी शादी की मुबारक बाद देनी थी ना...।" लाजो अदा से मुस्कराई।

"और तुम्हें भी लाजो डार्लिंग—सच तुम मेरी जिंदगी में क्या आई—तुमने तो मेरी जिन्दगी ही बदल दी...।"

"ऐसा...।" लाजो में शोखी से रंजन की तरफ देखा—निगाहों में जमाने भर का प्यार समेटे हुए।

"हां लाजो—अपने गुजरे हुए दिनों की सोचता हूं तो—सोचता हूं—कितना अन्तर है कल और आज में—कल अनाथाआश्रम में पला बढ़ा अनाथ रंजन आज कितना आगे बढ़ आया है—और यह सब तुम्हारे ही कारण है लाजो...।"

"लाजो के लिए तो रंजन ही सब कुछ है—तुम्हारे बिना लाजो भी क्या है—हम दोनों ही एक दूसरे के बिना अधूरे हैं...।"

चक्कर में ना जाने कितनी लड़कियों की लाइन लगाना चाहते हैं
ह...।" बड़की खिन्न स्वर में बोली—रज्जो की हम उम्र होने के
ारण उसकी विवशता को अच्छी तरह से समझ सकती थी वह।

"हां—इस मामले में हमारे रंजन जीजा जी एक दम उल्टे
—वह तो लाइन लगाने की बात दूर—एक का भी नाम नहीं
ते—उन्हें और अपनी लाजो दीदी को तो अकेले रहने में ही मज़ा
ाता है...।"

"नहीं छुटकी—बच्चे की चाह हर मियां बीवी को होती
—मगर समझदारी से काम ले रहे हैं—जब वह यह चाहेंगें कि वह
न्हे मेहमान की जिम्मेदारी को पूरी तरह से संभाल सकते हैं—तब
ानके घर में नन्हा मेहमान भी आ जायेगा...।" बड़की छुटकी को
समझाने वाले अंदाज में बोली।

"हां—वह समझदारी से काम ले रहे हैं—इसलिए तो इतने
ुखी हैं...।" काम करते हुए बोली थी भागवंती।

"डीयर जीजा जी और लाजो दीदी समझदारी से काम ले रहे
ैं या नहीं—ये तो वही जाने—मगर इस वक्त उनकी याद दिलाने के
लिए आप सबका बहुत बहुत शुक्रिया...।" कहते हुए नन्हे
चारपाई से उछलकर खड़ा हो गया।

"ऐं नन्हें—तू कहाँ जाने के लिए तैयार होने लगा...?"
मंझली ने उसकी तरफ आश्चर्य से देखते हुए पूछा।

"बड़े बुजुर्ग कहते हैं ना—बोलते हुए को टोका नहीं
जाता—जाते हुए को रोका नहीं जाता...।"

"मगर नन्हें—यार मैं रोक नहीं टोक रही हूं....।"

"रोकना और टोकना दोनों एक ही बात है मंझली—वैसे
अपनी फिलासफी आराम से तेरे दिमाग में नहीं पड़ेगी क्योंकि तेरे
मोटापे की तरह तेरी बुद्धि भी बहुत मोटी है...।"

"हां तू तो जैसे सुपर स्टार है ना...।" चिढ़ सी गई मंझली।

"बिल्कुल—अपुन तो सुपर स्टार को भी बीट करते हैं तभी
तो शहर भर की कन्याएं अपनी दीवानी नज़र आती हैं...।"

साहब...।"

"ओ.के. हैलमैट ही चलेगा—लाइए...।"

"ऐ—खाली हैलमेट का क्या करेगा नन्हें...?" हैरत से भरा स्वर था लाजो का।

"नन्हें बास के लिए किसी चीज़ की कमी नहीं—यहां से हैलमेट वहां से मोबाइक—और ना जाने कहां से पचास या सौ रुपये—दुनिया की सबसे बड़ी आर्ट है जुगाड़ और नन्हें जुगाड़ की आर्ट जानता है डीयर सिस्टर—इसीलिए तो शहर की सारी स्वीट सिक्सटीन नन्हें के नाम की माला जपा करती हैं।"

"ज्यादा बकवास मत किया कर नन्हें—किसी दिन पिट कर चला आयेगा...।"

"नहीं दीदी—ऐसा कहिए कि किसी को साथ लेकर चला आएगा—कहिए तो आज ही डिनर पर ले आऊं किसी नाजनीन—शोख-चंचल-हसीना को...।"

"खबरदार जो ऐसी हरकत की...।"

"अब आप यहां खड़े खड़े अपनी स्मार्टनैस के झन्डे ही गाड़ते रहेंगे साले साहब या...?"

"नन्हें जा रहा है जीजा जी—जा रहा है—जा रहा है...।"

और नन्हें के जाते ही रंजन और लाजो दोनों ही हंस पड़े थे नन्हें की बातें ही ऐसी थीं।

□□

मेनरोड के किनारे आइसक्रीम और कोल्ड ड्रिंक के एक खूबसूरत खोके के समाने खड़ी सॉफट ड्रिंक पी रही लड़की को देख नन्हें के पैर स्वयं ही मोटरसाइकिल की ब्रेक पर दबते चले गए।

निस्सदेंह काफी खूबसूरत थी वह गज़ब का आकर्षण था उसके चेहरे पर—पूरी तरह से आधुनिक कटे हुए कन्धों पर झूलते

"हां लाजो—एक दूसरे के बिना दोनों ही अपूर्ण...।' भावनाओं में वह उठी थी लाजो।

"और आप दोनों हमेशा पूर्ण रहें इसी शुभकामना के साथ नन्हें आपकी सेवा में हाजिर हैं...।"

रंजन और लाजो दोनों चौंक कर मुड़े।

आंगन्तुक नन्हें ही था।

"आओ साले साहब आओ—बस तुम्हारा ही इंतजार था...।"

"हां—मुझे भी पूरा यकीन था कि नन्हें हर साल की तरह इस बार भी हमें मुबारकबाद देने जरूर आएगा...।"

"और हर साल की तरह इस बार भी हमारे साथ ही डिनर लेगा...।" नन्हें ने अपनी तरफ से ही लाजो की अधूरी बात को पूरा कर दिया।

और नन्हें की हर हरकत पर रंजन और लाजो दोनों ही हंस पड़े—नन्हें तो सभी का प्यारा था।

"तो चलो प्यारे साले—आज का डिनर तुम्हारे साथ ही सही...।"

"मगर मैं घर पर कुछ बनाने वाली नहीं...।"

"डोंट फिकर—चिंता नाट—डीयर जीजा जी—जेब खाली करिए—फाइव स्टार होटल का शानदार भोजन स्वीट डिश के साथ आपकी डायनिंग टेबल पर हाज़िर हो जायेगा...।"

"ऐ नन्हें—शर्म नहीं आती—आज भी जीजा जी से ही पैसे लेगा...।"

"शर्म करने वालों के कर्म फूटने का डर रहता है—वैसे चिंता की कोई बात नहीं—अपुन की जेब में भी हमेशा लाखों करोड़ों हमेशा ही भरे रहते हैं—हां तो जीजा जी एण्ड जीजी जी—आज का फाइव स्टार ढाबे का डिनर नन्हें की तरफ से—बाई दी वे—आपका स्कूटर कहां है जीजा जी...?"

"फिलहाल तो स्कूटर के स्थान पर सिर्फ हैलमैट ही है साले

रोम सुगन्धित हो उठा...।"

खामोशी से मुस्कराती रही वह—पूर्ववत्।

"हां अगर आप अपने नाम के साथ अपना धाम भी बता दें तो...।"

"तो...?"

"तो आपको उधर ही ड्राप कर दूंगा...।"

"नहीं आप भला मुझ जैसी मामूली लड़की को क्यों ड्राप करने लगे मिस्टर...।"

"नन्हें...।" अपुन को दुनिया नन्हें के नाम से जानती है—पहचानती है—मानती है...।"

"मैं तो कालका जी के एल.आई.जी. फ्लैट में रहती हू...।" झिझकता हुआ स्वर था उसका।

"तो अपुन कौन सा एम.आई.जी. में रहतें हैं मिस...अपनी जोड़ी खूब जमेगी—आइए आपको ड्राप कर दूं मैं...।"

"आप को तकलीफ होगी मिस्टर नन्हें...।"

"ओ डोंट फिकर—चिंता नोट मिस—इसमें भला तकलीफ कैसी—वो तो अगर आप कहें तो मैं आपको शानदार डिनर भी खिला दूं—फाइव स्टार होटल में—कैंडिल लाइट में...।"

"ठीक है—आइ...।" कहते हुए उसने नन्हें के साथ साथ ही कदम उठा दिए।

और चलते चलते एकाएक अप्रत्याशित रूप से रूकी वह और सड़क के किनारे खड़ी एक विदेशी कार में जा बैठी।

नन्हें हकबका सा रह गया।

"आइए मिस्टर नन्हें मैं आपको आपकी खटारा मोटर साइकिल समेत अपनी कार की डिक्की में लिफ्ट दे दूं—आपको फाइव स्टार क्या सैवन स्टार होटल में डिनर करवा दूंगी मिस्टर स्ट्रीट रोमियो—बशर्ते आप मेरे हाथों से जूते खाने की हामी भरे तब...इडियट...।"

"मिस आप...।"

हुए बाल—जीन्स की टाइट पैंट के ऊपर सफेद शर्ट—वैसे उसके ऊपर तो कोई भी पोशाक जंच सकती थी।

अपने आपको रोक नहीं सका नन्हें—मोटर साइकिल को सडक किनारे खड़ा कर वहीं जा पहुंचा—बातचीत प्रारम्भ करने के रास्ते तो जानता ही था वह॥

"हैलो मिस—ये बॉल पैन शायद आपका ही है...?"

मुड़ी थी वह—पहली बार नन्हें को देखा था—खामोशी से।

"ये बालपैन...?"

बोली नहीं थी वह—खामोशी से ही इंकार की मुद्रा में सिर हिला दिया था।

"ओह- मैं समझा कि आपका ही होगा—हां एक गिलास पानी होगा भापा जी...?" नन्हें स्टाल वाले की तरफ मुड़ा था।

"कोल्ड ड्रिंक मिल सकता है बादशाहो...।"

"नही—कोल्ड ड्रिंक तो फॉरेन में इतना पीया कि मन ही भर गया—बस पानी ही याद आता रहा—अपने देश का पानी।" कहते हुए नन्हें ने फुर्ती से आइस बाक्स मे पानी की एक बोतल निकाल ली और फिर दुकानदार की बौखलाहट की परवाह किए बिना एक सांस में ही बोतल को आधा खाली कर दिया।

नन्हें की हरकत देख कर वह भी मुस्कराए बिना नहीं रह सकी—वह अनामिका।

और उसकी इसी मुस्कराहट से बल मिला नन्हें को।

"आपका नाम क्या है मिस...?" अपने चिरपरिचित अंदाज में ही पूछा उसने।

मगर अभी भी खामोश ही रही वह अनामिका।

"लगता है आपको बोलना ही नहीं आता...।"

"हां अभी सीख रही हूं...।" पहली बार बोली थी वह।

"चलिए आप बोलीं तो सही—हां तो आपका नाम...?"

"चमेली...।"

"वाह क्या खूबसूरत नाम है—महकता-महकाता नाम...रोम

नहीं था—सुबह ही तो उसके कारण घर में कौहराम मच गया था—फिर उसकी कुछ खाने की इच्छा होती भी कैसे—मगर इस वक्त पेट का यही खालीपन उसके ऊपर हावी होता चला जा रहा था।

सड़क किनारे एक पेड़ की छाया देखकर क्षण भर के लिए रुकी वह—सोचा थोड़ी देर सुस्ता ले इस छाया में—वैसे तो आगे बढ़ना नामुमकिन सा था—सिर बुरी तरह से चकरा रहा था।

एकाएक अपने सिर को दोनों हाथें से पूरी शक्ति से थाम लिया उसने और फिर बहुत प्रयास करने के बाद भी अपने आप पर काबू नहीं रख सकी थी—सिर को थामे हुए वहीं ढहती चली गई थी।

गिरते ही या गिरने से पहले ही उसकी चेतना लुप्त हो गई थी।

□□

कराहते हुए अपनी पलकों को धीरे धीरे खोल दिया बड़की ने—दिमाग पर एक अजीब सा भारीपन था। जिस्म के रोम रोम में कमजोरी का अहसास।

"मैं...मैं...मैं कहां हूं...?" बुदबुदाए से थे उसके होंठ।

"आप यहां-हास्पिटल में हैं मिस...?"

और इस स्वर के साथ ही निगाहें घुमाई बड़की ने—सामने एप्रीन पहन—गले में स्टेथोस्कोप लटकाए एक आकर्षक व्यक्तित्व का युवक सामने खड़ा था।

"आ...आ...प...?"

"मुझे अश्वनी कहते हैं मिस—डाक्टर अश्वनी।" मुस्कराते हुए बोला था वह—बड़की के चेहरे पर निगाहें जमाए हुए ही।

"मैं...मैं इस हॉस्पिटल में कैसे आई डाक्टर...?" कांप

"शटअप स्ट्रीट रोमियो—कामिया तुम जैसों से निपटना खूब जानती है—समझे...।" चीखते हुए स्वर के साथ उसने कार बढ़ाने का इशारा किया—हां कामिया ही तो वास्तविक नाम था उसका।

और कार के आगे बढ़ जाने के बाद भी तो नन्हें चंद क्षणों तक वहीं खड़ा रह गया था—कार के नम्बर को याद करता हुआ।

और फिर कुछ ही समय के बाद वह रंजन और लाजो दीदी के सामने डायनिंग टेबल पर बैठ मेंज पर ही तबले की थाप देता हुआ गुनगुना रहा था।

सुन : री' मेरी जीजी—सुन ऐ मेरे जीजा...

डी.आई.ए. सत्वींजा बवींजा।

हां—कामिया की कार का नम्बर डी.आई.ए. फाइव सैवन फाइव टू ही तो था—नन्हें की भाषा में सत्तवींजा बवींजा।...।'

□□

भरी दुपहरी में तपती सड़क पर थके कदमों के साथ चलर रही बड़की.यानि गुणवंती

सुबह ही उसे पता चला कि फिर कोई उसे देखने आ रहा और वह पहली बार बिफर सी उठी थी कि उसे बार बार इ नुमाइश की कोई आवश्यकता नहीं—मगर किसी को भी अपने इ विचार से सहमत नहीं कर सकी थी वह और फिर थक हार व लाजो दीदी के पास आ गई थी—यह कहने के लिए कि लाजो रंज से कहे कि वह उसके लिए किसी छोटी मोटी नौकरी का इन्तज़ा कर दे।

हां उसने सोचा तो सही था कि इसी तरह अपने आप व्यस्त रखकर वह अपने जीवन के अकेलेपन से छुटकारा पा सक है।

पैदल चलते चलते थक गई थी वह—सुबह से कुछ खाया

मनमनी नहीं चलेगी...।"

"मनमानी...।" बड़की ने आश्चर्य से अश्वनी की तरफ देखा।

जी हां—देखिए आपको मैं पूरे सम्मान के साथ इस हास्पिटल में लेकर आया था—पूरे सम्मान के साथ ही नहीं पूरे अधिकार के साथ भी—और अब अगर आपको यहां की कैंटीन की एक कप कड़क चाए पिलाए बिना जाने दिया तो सब क्या कहेगें—डाक्टर अश्वनी अपने पेशेंट को एक कप चाय भी नहीं पिलाते—नहीं—मेरे लिए यह सुनना संभव नहीं...।"

"ओह...।" अश्वनी की इस बात से बरबस ही मुस्करा उठी बड़की—शुभ्र श्वेत दंत पक्तियां झिलमिलाती चली गई।

"हां यह हुई ना बात...तो आइए फिर चलें...।"

और डाक्टर अश्वनी के इस स्वर में इतना अधिकार और अपनापन था कि चाहकर भी इंकार नहीं कर सकती बड़की।

दोनों चल पडे थे—साथ साथ कदम उठाते हुए।

□□

"हूं...आपकी समस्या वास्तव में इतनी गंभीर नहीं—जितनी आप समझ बैठी हैं...।"

क्या कहती बड़की—सिर झुकाए हुए खामोश ही रही—चाय कप में ही पड़ी हुई ठंडी हो रही थी—दरअसल डाक्टर अश्वनी ने जब अपनेपन के साथ उसके अन्दर के दर्द को जानना चाहा था तो अपने आप पर काबू नहीं रख सकी थी वह—बयान कर ही दी थी अपनी विवशता। उसके अन्दर का दर्द उछलकर बाहर आ गया था।

"देखिए गुणवंती जी—हर घर की कोई ना कोई समस्या तो होती ही है—मगर जहां तक मेरी समझ का सवाल है—हर

स्वर में ही पूछा वड़की ने।

"संयोग ही समझ लीजिए कि मैंने मेन रोड से गुजरते हुए एक पेड़ के नीचे आप को वेहोश होकर गिरते हुए देखा—और फिर आपको हास्पिटल के दर्शन करवाने की जरूरत समझकर आपको उठाकर यहां ले आया—यहां आकर आप को एग्जामिन किया तो पता चला कि आप घर का राशन बचाने के चक्कर में यहां तक आ पहुंची हैं...।"

वड़की की निगाहें धीरे धीरे झुकती चली गई...कहती तो कहती भी क्या वह।

चंद एक क्षण तो खामोश ही रहा था अश्वनी और फिर स्वयं ही वोल उठा था।

"वैसे चिंता की कोई वात नहीं—अव आप पूरी तरह से नार्मल हैं—देर तक भूखे रहने और संभवत अत्यधिक मानसिक तनाव के कारण ही वेहोश हो गई थीं आप—फिलहाल आपके खाली पेट का इलाज तो गुलूकोस चढ़ा कर दिया गया है—और अव आप घर भी जा सकती हैं...।"

"थैंक्स डाक्टर...।" निगाहों में कृतज्ञता के भाव लिए हुए उठ वैठी थी वड़की।

"ठहरिए इतनी भी क्या जल्दी है मिस—हां आपको अपना नाम और पता वताना पडेगा—कागज़ी खाना पूरी तो करनी ही होनी है ना...हां तो आपका नाम...?"

"गुणवंती...।" झिझकते स्वर में इतना ही कह सकी वड़की—उसे खुद ही अपना नाम अजीव सा लगता था।

"गुणवंती...।" नाम को एक वार दोहराया सा था अश्वनी ने—ऐसे जैसे उसे याद कर रहा हो।

और फिर पता भी नोट कर लिया था उसने।

"आइए-आपको वाहर तक छोड़ दूं...।"

"नहीं नहीं...मैं खुद ही चली जाऊंगी...।"

"देखिए मिस गुणवंती इस हास्पिटल के अन्दर आपकी

से यथार्थ में आई वह।

और फिर चाय की चुस्कियां धीरे धीरे लेती रहीं थी वह—रह रह कर उस की तरफ देखते हुए डाक्टर अश्वनी ना जाने क्या सोचता रहा था। बड़की भी तो फिर किसी सोच में डूब गई थी।

मगर इतना तय था कि अगर अश्वनी कुछ सोच रहा था तो बड़की को लेकर ही सोच रहा था और बड़की की हर सोच भी तो अश्वनी तक पहुंच कर ही खत्म होती थी।

एक दूसरे से विदा लेने के बाद भी तो दोनों एक दूसरे के विषय में सोचते रहे थे।

ना जाने क्यूं...?"

□□

"अब तो तेरी तबीयत ठीक है ना बड़की...।" बड़की के बेहोश होकर हास्पिटल पहुंचने की बात सुनकर तड़प उठी थी भागवंती।

"हां मां—तू देख ही रही है ना बिल्कुल ठीक हूं मैं—वो तो उस वक्त यूं ही चक्कर आ गया था।"

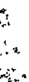
"तुझसे कहा भी था मैंने कि बिना कुछ खाए घर से बाहर मत निकल—तेरे तन पर तो खाया हुआ भी नहीं लगता तब बिना खाए हुए...।"

"अब छोड़ो ना मां—जो हो गया उसे भूल जाओ और दुआ दो उस डाक्टर को जो हमारी बड़की के ऊपर मेहरबान हो गया था।"

"मंझली देख तू...।"

"अरे यार—मैं तो उस वक्त से उस डाक्टर की ही सोच रही हूं—जिसने बाहों में उठाकर हास्पिटल पहुंचाया था...।"

"गुलुकोस की बोतल भी चढ़ाई और फिर चाय बिस्कुट से



स्वर में पूछा था—लड़का तो नहीं आ सका था—वही आए थे—बड़की को देखने के लिए—बड़की को पता चला था सिर्फ इतना ही कि लड़का डाक्टर है—यहीं दिल्ली में ही।

"जी—गुणवंती...।" सिर झुकाए हुए बड़की के अधर जैसे लरज उठे।

"तुम्हारी बहन लाजो से तुम्हारी बहुत तारीफ सुनी बेटी—इसीलिए तुम्हें देखने चले आए...।"

जटाशंकर बड़की की तरफ देखते हुए बोले थे—बात को आगे बढ़ाने के अभिप्राय से।

"बहन—बहन की तारीफ को अक्सर ही किया करती है...।" कह उठी थी बड़की—ना जाने क्यों।

मगर जटाशंकर ने इसे पूर्णतया सहज भाव से ही लिया।

"सुना है तुम सब बहनें अच्छा गा लेती हो...।"

"बाकी सब बहनें तो अच्छा ही गा लती हैं मगर मैं नहीं...।" बिना किसी हिचक के जवाब दिया बड़की ने—चंद ही क्षणों में अपने आपको आश्चर्य जनक रूप से तैयार कर लिया था बड़की ने और बसेसर राम बड़की का यह नवीन रूप देखकर न ही मन आश्चर्य चकित हो रहे थे।

"बैंजो और बंगाड्रम वगैरा तो मैं यानि एल. प्रसाद भी बजा लेता हूं जी थोड़ा थोड़ा—और हमारी ये बड़की तो सिलाई कढ़ाई बुनाई सभी कुछ लाजवाब करती है...।"

"आप...।"

"हम लड़की यानि कि इस बड़की के भाई ही हैं ज़ी एल प्रसाद यानि कि ललित प्रसाद बी.ए....।"

"तुम्हारे ललित भैया तुम्हारी कढ़ाई बुनाई की बहुत तारीफ कर रहे हैं गुणवंती बेटी...।"

जी—यह बिल्कुल वैसा ही काढ़ती बुनती है जैसी बाजारों में बिकता है...।" बसेसर राम ने पुष्टि की।

"मैं बाजार में बेचने के लिए ही यह सब करती हूं—तब सब

तेरा अनशन भी तुड़ा दिया...वैसे. वड़की...।"

"मुंह वंद रख मझली—तेरे मुंह से सिर्फ वक वक ही निकलती है...।"

"नहीं—डाक्टर साव का नाम तो आपकी यह छुटकी भी जानना चाहती है...।"

"क्यों—तुम लोगों को क्या करना है उस डाक्टर का नाम जानकर...।"

"कुछ नहीं—वस हम तो उसके नाम की माला जपेंगे—एक सौ आठ वार जाप करेंगे वताइए क्या नाम है उसका—डाक्टर ए.वी.सी. या डाक्टर एक्स वाई जैड...।"

और मंझली की इस हरकत पर वरवस ही हंस पड़ी थी वड़की।

"वस डाक्टर पुराण काफी हो चुका है—अव अपनी भावी वह तो संभावी उनके पूज्य चाचा जी शीघ्र ही पधारने वाले हैं" नन्हे के जैसे उद्‌घोषणा की।

"क्या...।" वड़की ने झटके से चेहरा घुमाकर अपनी मां भागवंती की तरफ देखा "मां मैंने सुवह भी कहा था ना कि अव इस नाटक की कोई जरूरत नहीं—...।"

"देख वड़की—इस वक्त तो तेरी मां ही तेरे हाथ जोड़ती है वेटी कि इस वक्त तो कोई ववाल खड़ा मत करना वरना तेरे वाप हो सकता है—तुझे तो कुछ ना कहें मगर मेरी शामत आ जाएगी वेटी—मेरी पीढ़ीयों तक को कोस डालेंगे।"

"वह—मैंने तुझे जन्म दिया है ना इसलिए...।" कहते हुए कंपित अधर के साथ भागवंती की आंखों में आंसू भरते चले गए।

और मां का यह रूप देखकर अन्दर ही अन्दर पिघलती चली गई थी वड़की—विरोध की सारी ताकत हवा हो गई थी। नतीजा स्पष्ट था।

"तुम्हारा क्या नाम है वेटी...।" जटा शंकर जी ने स्नेह भरे

"जी हां—अगर आपकी हैसियत हमारी हैसियत से ज्यादा है और आपको अपनी इस हैसियत का बहुत ख्याल है तो बेहतर है कि आप अपने डाक्टर भतीजे का रिश्ता कहीं और करें।"

"बेटी तुम...।"

"मैं सच कह रही हूं—जो कह रही हूं बहुत सोच समझ कर कह रही हूं—अगर आप अपनी से गिरी हैसियत में रिश्ता करेंगे तो आपकी हैसियत का ख्याल रखने के लिए मेरे मां बाप को शादी के समय और शादी के बाद के भी तमाम अवसरों पर अपनी हैसियत से कहीं ज्यादा खर्च करना पड़ेगा—औरजो बात आज हैसियत के ख्याल से शुरू हो रही है वह बात कल एक बहू के जिन्दा आग में मरने की बात पर खत्म होगी...।"

"बड़की...। बड़की जा बेटी तू भीतर जा—बड़ों की बातों के बीच में नहीं बोला जाता बेटी...।" सकपकाए से बसेसर राम ने स्थिति को संभालने का प्रयास किया।

मगर अब उठ खड़े हुए थे जटा शंकर जी—गंभीर मुद्रा में।

"गुणवंती की बात का बुरा मत मानिए जटा शंकर जी—दरअसल में दो चार जगह बात चली तो दहेज की बात को लेकर ही टूट गई—इसीलिए शायद अपने ऊपर काबू नहीं रख सकी वरना...।"

"बस—अब हमें चलना ही चाहिए बसेसर राम जी—यकीन जानिए कि हमें किसी से भी कोई शिकायत नहीं—मगर यह सच है कि हमने सुना कुछ और था और पाया कुछ और—खैर जाने दीजिए—अच्छा नमस्कार।"

और फिर रोकने से भी नहीं रुके थे जटा शंकर जी।

अब बसेसर राम की बारी थी—जीती हुई बाज़ी हार गए थे ना इसलिए गुस्सा तो उतारना ही था और वह गुस्सा भागवंती पर ही उतरा था।

"वाह भागवंती वाह—खूब बेटी पैदा की तूने...।"

"इस वक्त तो जी मैं आपके हाथ ही जोड़ सकती हूं—इस

कुछ वाजार में विकने जैसा ही तो होगा...।"

वड़की ने तुरन्त स्पष्टीकरण दिया—आज तो जैसे एक एक शव्द सच वोलने की सौगंध खाई हुई थी उसने।

क्षण भर के लिए वड़की की तरफ देख कुछ सोचते रहे जटा शंकर और फिर मुस्करा उठे।

"तुमने इंटर किया हुआ है ना वेटी...।"

"जी ये फर्स्ट डिवीडन पास हुई थी जी—विद डिस्टिंकशन इन संस्कृत् एण्ड मैथस...।"

लल्लू ने फिर वड़की की मदद की।

"सुन्दर-वहुत सुन्दर-तुम्हें तो आगे भी पढ़ाई जारी रखनी चाहिए थी वेटी...।"

"जी—मैं तो वहुत चाहती थी मगर मुझे आगे पढ़ने ही नहीं दिया गया...।"

"अजी लड़कियों को ज्यादा पढ़ा लिखकर करना भी क्या है—वैसे भी इसकी मां वीमार रहती है इसीलिए घर इसी को संभालना पड़ता है"—वसेसर राम ने तुरन्त स्पष्टीकरण किया।

"मुझे भी घर में ऐसी ही वहू चाहिए जो घर को संभाल सके...।" अन्दर ही अन्दर अपनी सहमति व्यक्त कर ही दी उन्होंने।

"तव फिर वताइए—हुकम कीजिए—हमें क्या करना होगा..।" वसेसर राम की निगाहों में आशा की किरण जाग उठी।

"अभी कुछ करने की क्या जरूरत है आपको—पहले लड़का और लड़की एक दूसरे को पसन्द तो कर लें और फिर लड़का और मैं दोनों ही लम्वी चौड़ी लेनदेन के खिलाफ है—वस आप शादी के समय लड़के की हैसियत का ख्याल रख लीजिएगा—डाक्टर है ना—खैर यह सव तो वाद की वातें हैं...।"

"नहीं—यह वाद की वात नहीं पहले की ही वात है...।"

और वड़की के इस स्वर के साथ ही जटा शंकर ने चौंककर वड़की की तरफ देखा।

"मगर क्या जूनियर—मिलवाओ ना यार उससे.

"अभी तो यही दुआ कीजिए अनिता जी कि वह

बारा टकरा जाए—वैसे चांसेज तो कम ही हैं। मगर फिर मा

बात भी याद है कि जहां चाह वहां राह।"

"मगर आपकी राह का कोई पता भी तो होगा...।"

"हां अर्पणा जी—अता और पता दोनों हैं—मगर अब स्टी

मियों भी तो नहीं बन सकता ना—चाहे आपसे जूनियर हूं मगर

डाक्टर ही—वैसे आप दोनों चिन्ता मत कीजिए—कुछ करना

दुआ कीजिए कि वह फिर मिले—यहां-वहां-ना जाने कहां-का

ी और तब मैं उसकी शिनाख्त करके आपको बता सकूं कि व

वही है या नहीं—वैसे लगती तो वही है—क्योंकि जैसे ही उसे देर

था—स्टैथो स्कोप से अपने दिल की धड़कन देखी थी— यकीन

बड़ी हुई लगती थी...।"

"वह तो हमें अभी भी बड़ी हुई लगती है जूनियर...।

अनिता कपूर हंसी थी। मुस्करा तो अर्पणा सिन्हा भी रही थी

और उन्हें हंसता हुआ ही छोड़ डाक्टर अश्वनी तीव्रता

केबिन से बाहर निकल गया—एक नर्स बुलाने आई थी—उसी

साथ।

□□□□

अखबार पर निगाह दौड़ाते ही झटके के साथ सीधा होक

बैठ गया नन्हे—अखबार में छपी कामिया की तस्वीर पर जो निगा

पड़ गई थी।

वह विज्ञापन था—आज शाम कामिया अशोका होटल

कत्थक नृत्य का प्रोग्राम प्रस्तुत कर रही थी—उसी के सम्बन्ध

यह विज्ञापन था।

ना जाने कब तक वह अखबार में यूं ही निगाहें गढ़ाए हु

'बोलो मां—आखिर कब तक यह सब कुछ सहती रहोगी तुम।''
बड़की मां भागवंती के साथ

बसेसर राम के परिवार के तीन प्रमुख सदस्य—बड़की, भागवंती और दादाजी

वैठा रहा था—अगर मुन्नी नहीं आती तो वह अभी भी अखबार से चिपका ही रखता।

मुन्नी...। पड़ोस के ही एक परिवार की लड़की-छुटकी की हम उम्र—वचपन में नन्हें के साथ ही खेलते हुए बड़ी हुई थी वह और वचपन की मीठी यादें अभी भी मुन्नी के दिलो दिमाग पर हावी थीं।

"हैलो नन्हें...।"

"ओह...।" चौंक कर चेहरा उठाया था नन्हें ने—"हैलो मुन्नी—छुटकी से मिलने आई हो क्या—मगर छुटकी तो"

"क्यों—मुन्नी तुमसे मिलने नहीं आ सकती क्या..." चिढ़ सी गई थी मुन्नी।

"अरे क्या हुआ तुझे—मुंह क्यों सूज गया तेरा—अपुन ने कब बोला कि तू अपुन से मिलने नहीं आ सकती—नन्हें सब बच्चे बच्चियों से समान रूप से स्नेह रखता है—बोलो बच्ची—तुम्हें क्या काम है नन्हें से-नन्हें महाराजा तुम्हारा कल्याण करेंगे...।"

"उफ नन्हे—तुम कभी सीरियस भी रहोगे या...।" झल्ला सी उठी मुन्नी।

"अब तू कहेगी भी या...।"

"वो क्या है नन्हे कि मैं होटल मैनेजमेंट का कोर्स करना चाहती हूं—तू वहा से फार्म वगैरह ला देना—मुझे तो कुछ भी नही मालूम...।"

"और जो किसी को भी नहीं मालूम होता वह सर्वज्ञाता नन्हे महाराज को मालूम होता है—चिन्ता मत करो बच्ची तुम्हारा कल्याण होगा...।"

"उफ मैं-अब बच्ची नहीं रही नन्हे...।"

"नन्हें महाराज को अपने सामने बड़े बूढ़ भी बच्चे नजर आते हैं बच्ची—खैर जाने दो—आज नन्हें महाराज को तुम्हारी भी मदद की परम आवश्यकता है...।"

"मेरी मदद की आवश्यकता...।" मुन्नी का स्वर हैरत में



''बापू आपने तो मुझे हमेशा नकारा ही समझा''—बसेसर राम दादाजी के साथ—

बड़े भैया बोलेंगे तो छोटे भैया को तो सुनना ही होगा ना—बसेसर राम और सालिग राम के साथ भागवंती—शकुन और सारिका।

सारिका बहुत अच्छी है मगर अश्वनी तो मन का नाता गुणवंती यानि बड़की से जोड़ चुके है ना। अश्वनी सारिका सालिगराम—सुधीरसिन्हा और अर्पणा सिन्हा।

ना जी-नाटक करने की आदत नहीं है मेरी—"दादीजी"।

मुझे तो दुख में ही सुख तलाशने की आदत है जी"-भागवंती,





"हम तो दुवई से वापिस लौट आए जी—वैरंग लिफाफे की तरह।"
वेचारा लल्लू।

मायके में मां की सुननी पड़ती थी और यहां ससुर की—सोच विचार में डूवी उषा रानी।



"अपने पर तो किसी को भी भरोसा नहीं—ना तुझे—ना तेरे ससुर को
और ना ही तेरी औलाद को...।" बसेमर राम भागवती के साथ
"अपने को तो तर माल खाने की आदत है जी।" चटौरी दादी
और छुटकी नन्हें और भागवती के साथ।



ऐसे मिलने में भी अपना एक अलग ही मजा है—अश्वनी और बड़की

देखो अश्वनी जब अपनी गुणवती के साथ फेरे लेने हैं तो रस्मों को भी निभाना ही पड़ेगा। अश्वनी अपने परिवार के साथ।



"कभी तो नादानी छोड़ दिया [illegible] [illegible] प्रसाद जी" -उषा रानी ललन के साथ

"मेरी मान तो [illegible] इस आदमखोरनी उषा को तो घर से बाहर कर दें"। बसंत राम माँ के साथ मशविरा करता हुआ—पीछे हतप्रभ सी बेचारी उषा रानी।

भरताचला गया।

"हां मुन्नी—तुझे कामिया को फोन करना होगा—जैसा मैं बताऊं वैसा ही कहना होगा बोल मंजूर है...।"

"कामिया...। ये कामिया कौन है नन्हें...।"

"अरे है एक धोबिन—तू बस अपना काम कर और नन्हें को अपना काम करने दे—बोल पार्टनर करेगी ना मदद—नन्हें महाराज इच्छापूर्ति का आर्शीवाद देंगे बच्ची...।"

"बस बस नन्हें—इतना ही काफी है—बोल क्या कहना होगा मुझे उस कामिया से...।"

"उस कामिया से नहीं मुन्नी—मिस कामिया से..." नन्हें ने संशोधन किया।

"मेरे लिए एक ही बात है...। चिड़कर कन्धे उचकाए मुन्नी ने-नन्हें की कामिया के प्रति इतनी गहरी रूचि देखकर उसकी जलन स्वाभाविक ही थी।

मगर नन्हें को तो सिर्फ अपने मतलब से मतलब था। कामियों को फोन करने के बाद उसे अपने कुछ दोस्तों को भी तो फोन करने थे—पूरा का पूरा प्लान उसकी आंखों के सामने सचित्र थिरक रहा था।

दिलोदिमाग पर यकीनन कामिया सिर्फ कामिया ही बसी हुई थी।

□□□

"वाह रूपा वाह—जवाब नहीं तुम्हारी आवाज और तुम्हारी खूबसूरती का—देख लेना स्टेज पर पहला प्रोग्राम देते ही तुम चांद सितारों से बात करने लगोगी।"

"मगर प्रीतम उस्ताद...।"

"अरे—गोली मारो मगर को और भाड़ में झोंको उस्ताद



"हमारी जोड़ी भी खूब जमती है"-अजय सिंह और कामिय

"अरे नन्हें—बेटे ये पोस्टर सा कहां से उठा लाया दिखता है तू...।"

"हां दादा जी—पोस्टर ही है...।" एक गहरी सांस लेते हुए बोला नन्हें—वहीं बैठ गया था दादा जी के पास।

"ला बेटे—दिखा तो सही—हम भी तो देखें—किस हीरोइन का पोस्टर उठा लाया तू..." दादा जी ने परिहास किया।

"हां दादा जी—आप इस हीरोइन को देख और पहचान सकें इसीलिए तो यह पोस्टर दीवार से उतार लाया हूं।" खिन्न स्वर के साथ ही नन्हें ने वह पोस्टर दादा जी की तरफ बढ़ा दिया—तह किए हुए ही।

"कोई स्पेशल हीरोइन है तो हम भी देखेंगे भाई...।" लल्लू भी दादा रिज्जक राम के करीब खिसक आया था मगर दादा जी के द्वारा पोस्टर खोलते ही लल्लू ही नहीं दादा जी स्वयं भी चौंक उठे थे।

"यह—यह तो अपनी मंझली दिखती है नन्हें...।"

"दिखती ही नहीं दादा जी—यह मंझली ही है—एल प्रसाद की आंखें धोखा नहीं खा सकतीं...नो डाऊट दादा जी—आई मीन ग्रेंडफादर जी...।"

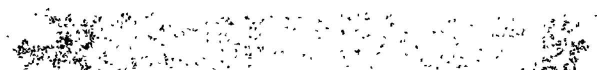
हां दादा जी—ये मंझली ही है—स्टेज प्रोग्राम दे रही है ना—इसीलिए सड़कों—नुक्कड़ों गलियों में अपनी मंझली की पब्लिसिटी हो रही है...।" नन्हें अभी भी परेशान था पूर्ववत।

"बसेसर—अरे ओ बसेसर भाई—जरा यहां तो आ बेटे...।" दादा जी ने साथ के ही कमरे में मौजूद बसेसर राम को आवाज दी।

"हां जी—बसेसर को आवाज दो और बसेसर हाजिर—इसे कहते हैं आज्ञाकारी सपूत और फिर भी आपकी निगाह में आपका

"शादी पर बेटी तो रोती ही है मायके से विदा होना पड़ता ना...। मगर तूने तो हमें भी रूला दिया बड़की"-अश्वनी-भागवंती-बड़की और बसेसर राम।

"हम लोग" की सौ-वीं किस्त के प्रसारण के पश्चात् दिल्ली में आयोजित एक विशेष समारोह में लिया गया चित्र। कार्यक्रम के सूत्र धार सुप्रसिद्ध चरित्र अभिनेता अशोक कुमार के साथ "हम लोग" परिवार।



समस्या भी निपटी—वरना अभी तक तो इसी बात के लिए काफी चिन्तित रही थी वह और अब उसके पिता बसेसर राम ने यह मसला खुद ही हल कर दिया था उसकी गैर मौजूदगी में ही।

मंझली तो दूसरे कमरे में चली गई थी मगर दादा जी मंझली को लेकर अभी भी सोच में डूबे हुए थे धर के मुखिया थे ना वह।

□□□□

रज्जो को प्रसव पीड़ा फिर उठी थी और इसीलिए उसे एक बार फिर तुरन्त ही हास्पिटल में ले जाना पड़ा था और इस बार रज्जो को एडमिट कर लिया गया।

रज्जो को देखने के लिए बड़की हास्पिटल पहुंची थी—उसी हास्पिटल में जहां वह बेहोश होने के बाद डाक्टर अश्वनी के द्वारा लाई गई थी।

काश आज एक बार फिर उससे मुलाकात हो पाती—उसी डाक्टर अश्वनी से...।"

रज्जो को देखकर वार्ड से बाहर निकलते हुए सोचा था उसने—डाक्टर के अनुसार रज्जो के प्रसव में अभी समय था और बड़की ने सोचा था कि वह घर वालों को एक बार रज्जो की कुशलता की सूचना तो दे दे।

गैलरी में उसके उठते हुए कदमों के साथ डाक्टर अश्वनी की सोच भी उसके साथ साथ चलती रही थी। मगर खुद डाक्टर अश्वनी से मिलने का साहस वह अपने अन्दर नहीं जुटा पा रही थी।

वह लम्बी पतली गैलरी से गुजरते हुए मोड़ आने पर मुड़ना ही चाहती थी कि एकाएक लड़खड़ा सी गई। दूसरी तरफ से मोड़ मुड़ता हुआ एक युवक आ टकराया था उससे—या फिर वह उससे टकरा गई थी और उस युवक ने ही फुर्ती के साथ लड़खड़ा उठी

को—अब तो तुम हमें प्रीतम ही कहा करो—तुम्हारे मुंह से उस्ताद उस्ताद अच्छा नहीं लगा...।"

"अगर चाचा सुनना अच्छा लगता हो तो प्रीतम चाचा कह दिया करूंगी—मेरे पिता के दोस्त होने के नाते आप मेरे चाचा ही तो हुए...।" मंझली ने नीति से काम लिया—प्रीतम की बातों के पीछे छिपे इशारों को खूब समझती थी वह मगर समझते हुए भी खामोश रहती थी तो मात्र इसलिए कि अपना मतलब हल करना चाहती थी वह—प्रीतम उसके पहले स्टेज प्रोग्राम की भरपूर पब्लिसिटी कर रहा था और मझली अपने चर्चित होने का ही इंतज़ार कर रही थी।

"हा-हा-चाचा जी कह सकती हो मगर चाचा भी तो तीन तरह के होते हैं ।"

"बहुत खूब प्रीतम उस्ताद— आपने तो चाचाओं की भी कैटेगरी बना दी ।"

"हा रूपा—चाचा भी तीन तरह के ही होते हैं—चाचा ए बजुर्ग वार—चाचा ए बरखुददार और चाचा ए यार...हां तो हम चाचा की किस कैटेगरी में आते हैं रूपा...।"

"चाचा ए बजुर्गवार की कैटेगरी में...।" तुरन्त बोली मंझली—क्षण भर भी सोचे बिना ही। और प्रीतम उस्ताद ने ऐसा मुंह बनाया जैसे मुंह में कुनैन घुलती चली गई हो और फिर अपनी झेंप खुद ही मिटाता हुआ हे हे हे करता हुआ हंस पड़ा वह—"तुम बहुत ही शरारती हो रूपा।"

"हा तो अब मैं रियाज शुरू करूं चाचा बजुर्गवार..." मंझली ने फिर चुटकी ली।

"नहीं नहीं रूपा" ये चाचा वाचा नहीं चलेगा—प्रीतम उस्ताद ही ठीक है ।"

और प्रीतम उस्ताद की बौखलाहट पर मंझली बरबस ही खिलखिला उठी थी।

□□□□

आपको याद होगी गुणवंती जी और अगर याद है तो आइए—आपको अपने हाथ ही बनी चाय पिलाऊंगा...।"

"नहीं-फिर कभी...।"

"ठीक है गुणवंती जी—हम उस फिर कभी का इंतजार कर लेंगे...।" लापरवाही से कन्धे उचकाए अश्वनी ने।

"अच्छा मैं चलूं...।"

कहते हुए दोनों हाथ जोड़ दिए बड़की ने और फिर तीव्रता से आगे बढ़ गई वह—अश्वनी के प्रत्युत्तर की प्रतिक्षा किए विना ही—अश्वनी का साथ एक अजीब सा अहसास पैदा कर रहा था उसके अन्दर और इसी अहसास से बचने का प्रयास किया था उसने।

अश्वनी दिल ही दिल में हैरान सा मगर प्रत्यक्ष में मुस्कराता हुआ वहीं खड़ा बड़की को जाते हुए देखता रहा।

मगर बड़की भी कहां जा सकी थी।

एकाएक लड़खड़ा कर झटके से रूकी वह—सिर झुका कर नीचे देखा—अपने पैरों की तरफ।

चप्पल टूट गई थी।

अश्वनी वहीं खड़ा था—पूर्ववत्...।

झुकर कर बड़की ने चप्पल को ठीक करने का प्रयत्न किया—मगर व्यर्थ उसके लिए तो फिलहाल नामुमकिन ही था यह कार्य और उसने जब चेहरा उठाया—डाक्टर अश्वनी एक बार फिर उसके सामने खड़ा था।

"यह—यह चप्पल...।"

"चिन्ता मत कीजिए—आपकी हर समस्या का समाधान डाक्टर अश्वनी के पास है—वैसे एक बात है मिस गुणवंती जी—मैं क्या यह चप्पल भी नहीं चाहती थी कि आप इस तरह यहां से जाएं...।"

"जी...।"

"मेरा मतलब—इस तरह विना चाय पिए हुए।"

वसेसर हमेशा नालायक ही रहा...।"

"अपनी वात वाद में कर लेना वसेसर—पहले यह बता अपनी मंझली के वारे में भी कुछ पता है तुझे या...।"

"पता है जी—विल्कुल पता है—आप इसी पोस्टर की कहानी लिए वैठे है ना आप—अजी हमारी मंझली तरक्की कर रही है तरक्की और ये नन्हें चुगलखोरी की तरह चुगली खा रहा है...।"

"ओह—तो सव कुछ तू जानता है वसेसर...।"

"लो जी—मैं कव मना कर रहा हूं कि मैं नहीं जानता—मझली अपने ही यार प्रीतम उस्ताद के पास गाना सीख रही है—और गाना सीखना पाप तो नहीं है जी—और रही स्टेज पर गाने की वात—तो क्या जी—जो काम बसेसर राम ना कर सका—वह क्या उसकी औलाद भी ना करे...।"

"वस वसेसर वस—तूने हमारे कहने लायक कुछ छोड़ा ही कहा...।" एक गहरी सांस भर उठे दादा जी। नन्हें कुछ कहना चाहता था मगर उसी क्षण दरवाजे पर दस्तक हुई।

थप-थाप...।

लल्लू ने उठकर दरवाजा खोल दिया—मंझली ही थी।

"लोजी—आई गई मंझली भी—आ गई हमारी जनता कालोनी के एल आई जी फ्लैट की हीरोइन...।"

"क्या है लल्लू भैया—ये आज कैसे वात कर रहे हो...।" हैरत में पड़ते हुए मंझली आ गई और फिर दादा जी के हाथ में अपने प्रोग्राम पोस्टर देखकर स्वयं ही सव समझ गई।

"दादा जी आप...।"

"वस वेटी—मेरी कहने लायक तो अव कुछ वचा ही नहीं—हो सके तो इस वूढ़े की एक ही वात याद रखना वेटी—गरीव के पास उसकी इज्जत ही सवसे वड़ी दौलत होती है कहीं दौलत मंद वनते वनते अपनी इस इज्जत को ही ना दाग लगा वैठना।"

"जी दादा जी...।" सिर झुकाए हुए वस इतना ही कह सकी मंझली—वैसे दिल ही दिल में वह खुश भी थी—कि चलो यह

पूरी कोशिश करेंगे—डाक्टर का फर्ज ही यही है कि वह मरीज़ की आखिरी सास तक कोशिश करे मगर फिर भी...।"

इस बार मुस्कराई नहीं थी बड़की—हंस पड़ी थी—अश्वनी की बातें ही ऐसी थीं।

अश्वनी बड़की को हंसता हुआ ही छोड़ कर बाहर निकल गया—चप्पल हाथ में लिए हुए।

और उसे एक बार फिर रूकना पड़ा था—मगर इस बार सामने उससे सीनियर डाक्टर अनिता कपूर थी। क्षण भर के लिए तो बौखला सा गया डाक्टर अश्वनी मगर फिर दूसरे ही क्षण उसने अपने आपको संभाल लिया।

"क्या बात है अश्वनी—किसी से झगड़ा हो गया है क्या—जो हथियार के रूप में ये टूटी चप्पल...।"

"नो सीनियर—झगड़ा नहीं—आपरेशन करना है—इस चप्पल का आपरेशन—काफी सीरियस कंडीशन है ना—इसलिए मेजर आपरेश करना होगा—दवा मैं करता हूं—दुआ आप कीजिए।"

"अश्वनी तुम...।"

इस समय मत कुछ कहिए अनिता जी—वक्त बहुत कम है—इस चप्पल की जिंदगी और मौत का ही नहीं—आपके इस जूनियर डाक्टर की भी इज्जत का सवाल है—वह क्या कहेगी कि मैं उसकी चप्पल की जिंदगी भी नहीं बचा सका...नहीं अनिता जी नहीं—मैं उसकी आंखो में आंसू नहीं देख सकूंगा—आप भी उसे समझाइए हर स्थिति से सामना करने के लिए तैयार रखिए—वह...।"

"मगर वह है कौन अश्वनी...।"

"वह वही है अनिता जी—वही है—वही है—वही है...।"

"हूं—अब मैं समझी...।" मुस्करा उठी थी डाक्टर अनिता कपूर।

"अच्छा है—मगर जो आप समझी हैं कहीं उसे मत समझा

वड़की को संभाल लिया था।

दोनों ने एक दूसरे को देखा और फिर देखते ही रह गए।

एप्रीन पहने–गले में स्टेथोस्कोप लटकाए वह युवक कोई और नहीं अश्वनी ही था डाक्टर अश्वनी।

"खूव गुणवंती जी–वहुत खूव–जव आपसे पहली मुलाकात हुई थी तो आपको हास्पिटल में लाना पड़ा था और अव उठाने लाने की जरूरत ही नहीं पड़ी–आप खुद व खुद हास्पिटल में चली आईं...।"

"नहीं मैं नहीं आई– मेरी वहन रज्जो मेटरनिटी वार्ड में भर्ती हुई है–मैं उसी को देखने आई थी...।" दवे स्वर म बोली वड़की–चेहरा झुकता चला गया। अश्वनी को सामने देखकर दिल की धड़कने वेकार होती जान पड़ी थीं।"

दिल तो अश्वनी का भी वेकावू था।

"ओह तो आप अपनी वहन के पास आई थीं–चलिए आप आईं तो सही...।"

"जी...।"

"जी–दरअसल वात ये है गुणवंती–एक डाक्टर होने के नाते अपने पैशेंट के स्वास्थ की चिन्ता करना मेरा फर्ज है और आपके केस में मैं आपसे यह जानना चाहता था कि अव तो आप राशन की वचत नहीं कर सहीं...।"

और अश्वनी की इस वात पर वरवस ही मुस्करा उठी वड़की–कुछ कहने के स्थान पर खामोशी से इंकार की मुद्रा में सिर हिला दिया था।"

"चलिए मेरी ये चिन्ता तो मिटी–तो आइए फिर एक एक कप चाय हो जाए...।"

वड़की के दिल में तमन्ना तो जागी मगर वह झिझक गई–वचपन से ही मिले संस्कारों के कारण ही–

"नहीं, आज नहीं–फिर कभी...।"

"कल करे सो आज कर और आज करे सो अव वाली वात ता

वह—"आ...प...।"

"डिकी वाल...। सी.पी. डिकीवाल...। पेशे से आलोचक भी हूं और पत्रकार भी वाम्बे टाइम्स की तरफ से आपका इन्टर व्यू लेने के लिए आया हूं मिस कामिया—सिर्फ चन्द एक सवालात करने...।"

"हां—हां...। सुवह शायद आपकी ही असिस्टेंट का फोन आया था...।" कामिया सोचते हुए वोली।

"हां—उसी मुन्नी ने फोन किया था आपको...।"

"मुन्नी...?" कामिया के चेहरे पर हैरत का भाव उभरे।

और अव नन्हें को अपनी भूल का अहसास हुआ मगर वात वनाने में तो माहिर था वह।

"जी हां मुन्नी...। दरअसल मिस मिनी नाम है उसका—मगर मिनी वहुत छोटा सा लगता है ना—और फिर अपने लिए तो मुन्नी मेरा मतलव वच्ची की तरह ही है वह...।"

"हां आप इन्टरव्यू लेना चाह रहे थे ना...।"

"जी हां—जी हां—मेरा पहला सवाल यह है—आपको डांस की प्रेरणा कहां से मिली...।"

"अपने पापा से...।"

"हूं—यानि आपके पापा भी वहुत अच्छे डांसर हैं...।"

"जी नहीं—मगर वह मुझे वेहद प्रोत्साहित करते हैं...।" नन्हें के चेहरे पर निगाहें जमाए हुए सी वोली कामिया—नन्हें को पहचानने की पूरी पूरी कोशिश कर रही थी वह।

और नन्हें भी कामिया की इस कोशिश से अन्जान नहीं था। मगर फिर भी...।

"मैं आपका इन्टरव्यू ही लेने नहीं आया हूं मिस कामिया—आपके लिए एक आफर भी लेकर आया हूं—विश्व प्रसिद्ध निर्माता निर्देशक त्रुको की एक फिल्म में काम करने का आमंत्रण।"

क्षण भर के लिए तो कामिया समझ ही नहीं सकी कि क्या

"ओह...।" बरबस ही मुस्करा उठी थी लड़की—अश्वनी का हर अंदाज निराला था।

"उस दिन आप बेहोश हो गई थीं—आज आपकी चप्पल घायल हो गई है—आप तो गुलुकोस चढ़ाने पर ठीक हो गई थीं मगर इस चप्पल का आपरेश करना होगा...।"

"आपरेशन...।"

"जी हां—फिलहाल तो इस हास्पिटल में या यहां आस पास कोई चप्पल स्पेशलिस्ट मिस्टर एम.ओ.ची. उपलब्ध है नहीं इसलिए..।"

"एम.ओ.ची..।"

"जी हां—मिस्टर एम.ओ.ची. यानि की मौची... आप नहीं जानती क्या..।"

और लड़की एक बार फिर मुस्करा उठी थी—पहले की उपेक्षा अधिक खुली मुस्कराहट।

"और मिस्टर एम.ओ.ची. के उपलब्ध ना होने के कारण फिलहाल इस चप्पल के आपरेशन का काम मुझे यानि कि डाक्टर अश्वनी को ही करना होगा—बहुत जिम्मेदारी से भरा काम है गुणवंती जी-दुआ कीजिए कि मेरी जिन्दगी का पहला चप्पल आपरेशन सफल हो—हा तो आइए अब तो आपको मेरी केबिन तक आना ही होगा..।" कहते हुए बिना किसी झिझक के उस चप्पल को उठा लिया उसने।

और अब तो लड़की को डाक्टर अश्वनी के कदमों का अनुसरण करना ही था।

अश्वनी का केबिन खाली ही था—फुरसत के चन्द क्षणों में अश्वनी या उसके सीनियर डाक्टर यहीं आ जाते थे।

"हा तो तशरीफ रखिए गुणवंती जी—देखिए इस सीरियस आपरेशन के लिए आपसे कोई फार्म तो नहीं भरवाया जा रहा मगर फिर भी अगर आपरेशन टेबल पर आपकी चप्पल दम तोड़ देती है तो इसमें आप हमें दोषी नहीं ठहराएंगी—वैसे हम अपनी तरफ से

उसी तरह के लिवास और फ्रेंच कट दाढ़ी में—जिसमें अभी नन्हें यहां आया था।

"मिस कामिया मैं टाइम्स का डांस क्रीटिक मेरा मतलव आलोचक...।"

"शटअप...। मैं सिखाती हूं तुम्हें डांस मिस्टर नन्हें...।" कहते हुए कामिया ने तीव्रता से उसकी दाढ़ी नोंच लेनी चाही।

आई ई ई-ई...। वुरी तरह से वौखलाया हुआ वह युवक चीख सा उठा—दाढ़ी नकली होती तो कामिया के हाथ में आती भी—और फिर अगर वह नन्हें होता—तव ना...।

अव कामिया को अपनी भूल का अहसास हुआ मगर अव तक तो उस वेचारे का दुलिया ही विगड़ चुका था।

"सौरी मिस्टर मैं...।"

"नहीं—सौरी की कोई आवश्यकता नहीं मिस कामिया लाल—आपने जिस शानदार ढंग से मेरा स्वागत किया उसके लिए आपका वहुत वहुत धन्यवाद—मगर एक वात आप याद रखिएगा—मेरा नाम दीपक है—दीपक खण्डेवाल—टाइम्स रिर्पोटर—हम अगर किसी को आसमान पर विठा सकते हैं तो आसमान से पाताल तक भी पहुंचा सकते हैं...।

और कामिया के वार वार के अनुरोध पर भी वहां नहीं रूका था दीपक खण्डेलवाल।

हां कामिया के वार वार के अनुरोध पर भी वहां नहीं रूका था दीपक खण्डेलवाल।

हां कामिया जरूर वहां खड़ी रह गई थी—रोनी सी सूरत वनाए हुए।

प्रेस रिपोर्टर की नाराजगी के वाद के संभावित प्रभावों से परिचित थी वह।

□□□□

दीजिएगा...।"

"चिन्ता मत करो—तुम आपरेश करो—ध्यान रखना. ये तुम्हारे कैरियर का सवाल है—और रहा सवाल उसका तो उसे मैं एक कप चाय पिला कर हर स्थिति का सामना करने के लिए शारीरिक और मानसिक दोनों तरह से बिल्कुल तैयार कर दूंगी—ओ.के. बैस्ट आफ लक अश्वनी...।"

और अश्वनी पूरी तरह से गम्भीर मुद्रा में आगे बढ़ गया।

आपरेशन सीरियस था ना...।

चप्पल आपरेशन...।

□□□□

शाम को कामिया का होटल अशोका में कत्थक नृत्य का प्रोग्राम था और शाम तक नन्हें पूरी तैयारी कर चुका था वैसे तो नन्हें के दोस्त भी उसका पूरी तरह से साथ दे रहे थे दोस्तों ने ही वीडियो कैमरा—लाइट—माइक वगैरह हर चीज का इन्तजाम किया था नन्हे तो बस प्लान बनाता रहा था—किसी ना किसी तरह कामिया के करीब जाने का प्रोग्राम।

शाम को होटल अशोका के मेकअप रूप में मेकअप कर रही थी कामिया—प्रोग्राम प्रारम्भ होने में अभी कुछ समय था।

थप-थप...।"

बाहर से दरवाजे पर थपथपाहट हुई।

"यस—कम इन...।" कामिया होठों पर लिपस्टिक लगाते हुए ही बोली।

और अन्दर आने वाला कोई और नहीं नन्हें था—पूरी तरह से बदले हुए रूप में—आसानी से ना पहचाना जाने वाला चेहरा।

कामिया ने चेहरा घुमाया—नन्हें का चेहरा कुछ जान पहचाना लगा मगर एकाएक किसी निर्णय पर नहीं पहुंच सकी

बड़की को यही उचित लगा था कि वह इस कमरे से ही निकल जाए—और उसने यही किया था।

उसके दूसरे कमरे में जाते ही मंझली और छुटकी एक दूसरे को निगाहों ही निगाहों में इशारा करके खिलखिला उठी थीं।

और उनकी खिलखिलाहट बड़की के कानों में भी पहुंची थी—मगर...।

□□□□

नन्हें को कामिया के लिए "टाइम्स" का आलोचक सी.पी डिकीवाला बनने पर ही संतोष नहीं हुआ था। डिकीवाला के रूप में अपनी पोल खुलने के बावजूद वह तुरन्त ही दूरदर्शन के विपिन बत्रा का रूप धर कर कामिया का इन्टरव्यू लेने में कामयाब हो गया मगर जब प्रोग्राम देते वक्त टी.वी. कवरेज की तरफ से दूरदर्शन के वास्तविक व्यक्ति आए तब कामिया ने जाना कि नन्हें उसे एक बार फिर चकमा दे गया।

फिलहाल कामिया का कत्थक नृत्य का प्रोग्राम बेहद सफल रहा और जब कामिया अपने प्रशंसको से विदा लेने के बाद होटल से बाहर आई तो उसकी कार का टायर पिचका हुआ था।

"उफ...। टायर को भी अभी पंचर होना था...।" झल्ला उठी कामिया।

"ओह—डोंट वरी मिस कामिया—लिव टू मिस्टर नन्हें...।" कामिया के करीब से ही उभरा वह स्वर।

झटके के साथ चेहरा घुमाया कामिया ने—नन्हें ही था—अपने असली रूप में—बिना किसी मेकअप के।

"ओह यू चीट...।" बिफर सी उठी कामिया—"मिस्टर नन्हें मैं आपको...।"

जवाव दे मगर फिर अपने आपको संभाल कर बोली।

"मुझे तो अभिनय करना आता ही नहीं—कालिज के ड्रामा वगैरह में भी मैंने कभी पार्टीसिपेट नहीं किया...।"

"और डोंट वरी मिस कामिया लाल—लिव इट टू नन्हें...।" अपनी ही झोंक में बोल गया नन्हें।

"नन्हें...।" वुरी तरह से चौंक उठी कामिया।

"म...मेरा मतलव नाने—प्रोफेसर नाने—दुनिया के माने हुए एक्टर डायरेक्टर—वह आपको एक्टिंग सिखा देंगे।"

"ठीक उसी तरह—जिस तरह उन्होंने आपको एक्टिंग सिखाई है मिस्टर डिकीवाल...।"

"जी. जी हां...। जी.-जी नहीं-मैं तो...।"

वकवास वन्द कीजिए मिस्टर नन्हें...आपका असली रूप जान चुकी हूं मैं और अव आप मेरा असली रूप जान जाएंगे।"

"कामियां...मिस़ कामिया देखिए आप...।"

मगर कामिया ने लगभग झपटा मार कर उसके चेहरे पर चिपकी फ्रेंच कट दाढ़ी और नकली मूंछ खींच ली।

और इससे पहले कि कामिया कोई हंगामा खड़ा कर पाती—नन्हें दौड़ता हुआ कमरे से वाहर निकल गया।

कामिया समझदार थी—जानती थी कि यहां हंगामा खड़ा करने का कोई फायदा नहीं और फिर नन्हें तो उसे शरारती लगा था—सिर्फ शरारती—उससे किसी ना किसी तरह दो चार वात करने का इच्छुक।

अपने गुस्से पर काबू रखकर कामिया फिर मेकअप ठीक करने लगी—प्रोग्राम का समय हो रहा था ना।

मगर दरवाजे पर फिर थपथपाहट हुई थी।

"उफ...। फिर आ गया लगता है...।" वड़वड़ाते हुए झटके से उठ खड़ी हुई कामिया और तीव्रता से दरवाजे के समीप पहुंचते हुए दरवाजा खोल दिया।

वाहर नन्हे के ही हुलिए का एक युवक खड़ा हुआ था—ठीक

गले को साफ करने का अभिनय किया नन्हें ने और फिर आगे कहना शुरू किया "हां तो मिस कामिया—मिस्टर नन्हें सबसे पहले आपसे टाइम्स के रिपोर्टर के रूप में मिले और उसके तुरन्त बाद आपकी सेवा में टी.वी. कवरेज के स्थान पर वीडियो कवरेज के लिए हाजिर हो गए—इन दोनों सिचुएशन में अन्तर रहा तो सिर्फ इतना ही कि दूसरी बार आप मिस्टर नन्हें को पहचान नहीं सकी—और जब पहचाना तब बहुत देर हो चुकी थी—वैसे आपके मायूस होने का कोई विशेष कारण नहीं है—आप जैसे भी चाहें—मिस्टर नन्हें यानि प्रोफेसर नन्हें को सजा दे सकती हैं—यकीन जानिए—आपके हुक्म की तामील की जाएगी मोहतरमा...।"

कहते हुए नन्हें ने कामिया के सामने अपराधी मुद्रा में सिर [illegible] दिया।

बरबस ही मुस्करा उठी कामिया—"आप आदमी दिलचस्प [illegible] मिस्टर नाने...।"

"थैंक्स-थैंक्स मिस कामिया—चलिए आपको कोई तो बात पसन्द आई हमारी—वैसे आपका ही नहीं अपने सभी चाहने वालों का अपने बारे में यही ख्याल है—हां तो आपसे फिर कभी मुलाकात की उम्मीद की जा सकती...।"

"अगर मैं ना कहूं तब...।" कामिया ने शोख निगाहों से नन्हें की तरफ देखा।

"तब क्या...! हमारे धैर्य का कोई जवाब नहीं मिस कामिया—हम आपकी हां का इन्तजार करेंगे...।"

"कब तक...।"

"हफ्ते-महीने-साल-सौ साल-जन्मों तक जन्म जन्मातरों तक...।" शायराना हो उठा नन्हें का स्वर।

"चलिए—देखते हैं...। फिलहाल तो अभी आपको मेरी [illegible] में हल्का सा धक्का लगाना पड़ेगा—कार की बैटरी थोड़ी डाउन [illegible]ना—इसीलिए...प्लीज मिस्टर नन्हें...।"

"वाह क्या बात है यार वड़की—क्या बात है तुममें और क्या बात है तेरे चप्पल डाक्टर की...।"

"देख मंझली तू...।" झल्ला उठी वड़की— "मेरी समझ में नहीं आता कि तुझे और भी कुछ आता है या...।"

ए वड़की वहना—सच पूछ तो इस वक्त तो तेरी इस छुटकी के दिलो दिमाग में भी सिर्फ एक ही बात है—वाह क्या बात है तेरे चप्पल डाक्टर में...।" छुटकी ने भी चुहल की।

"तुम लोग डाक्टर अश्वनी नहीं कह सकते उसे...।"

"हां कह सकते हैं वड़की जी—विल्कुल कह सकते हैं—मगर सच बात तो ये है कि तेरे ही कहे सुने के अनुसार हमें तेरा वह अश्वनी डाक्टर कम और चप्पल डाक्टर ज्यादा नज़र आता है...।"

मझली हसत हुए बोली।

"हां मगर वह तो चप्पल का इलाज भी ठीक तरह से नहीं कर पाया—तीन बार आपरेशन किया मगर तीनों बार फेल।"

"आखिर में हार कर वेचारे ने तेरे पैर को चप्पल के ऊपर रखकर पैर को चप्पल के साथ पट्टियों से बांध दिया।"

मंझली ने छुटकी की अधूरी बात को पूरा किया।

"वैने जहा तक मिस छुटकी की समझ का सवाल है—वह चप्पल डाक्टर चाहे वड़की की चप्पल के सीरियस आपरेश में पूरी तरह से असफल होकर अपने कैरियर में हमेशा के लिए अमिट दाग लगा बैठा हो मगर यह भी सच है मीलार्ड कि वह चप्पल डाक्टर एक असफल सर्जन होने के बावजूद वड़की के दिल में कहीं गहरे...।"

"उफ—तुम लोग भी बस...।" झल्ला कर झटके से उठ खड़ी हुई वड़की—तुम लोगों को तो कोई बात बताना भी अपनी ही कब्र खुदवाने के बराबर है...।"

"और सौ सपाट चेहरे एक चप्पल डाक्टर के बराबर हैं...।" छुटकी और मंझली दोनों एक साथ बोली।

अब हमें निकलना ही चाहिए भाई दिल्ली है ये—हर चीज घर से मीलों दूर मिलती है—स्टेशन पहुंचने में काफी वक्त लग जाएगा...।" छोटी सी बात को लम्बा खीचां जटा शंकर जी ने।

"मैं तो अभी भी यही कह रहा हूं चाचा जी—आप कुछ दिन यहीं रूकिये—थोड़ा हवा पानी भी बदल जाएगा...।" अश्वनी ने उन्हें समझाना चाहा।

जटा शंकर जी को चाचा जी कह कर सम्बोधित करता था अश्वनी—वैसे तो बचपन में ही अनाथ हो गया था वह—तब उसके लालन पालन की सारी जिम्मेदारी जटा शंकर जी के अपने ऊपर ही ले ली थी—अश्वनी तो पिता का दर्जा देता था उन्हें।

"नहीं अश्वनी—इस शहर में थोड़े दिन रूकने से हमारा हवा पानी ही नहीं—हम भी बदल जायेंगे...।"

"मैं...मैं समझा नहीं चाचा जी...।" अश्वनी ने जटा शंकर जी की तरफ देखते हुए हैरत भरे स्वर में पूछा।

"इसमें समझने ना समझने की बात ही क्या है बेटे—हमने तो जो देखा भुगता है—उसी की बता रहे हैं...।"

खामोश रहा अश्वनी —चाचा जी को ही आगे कुछ कहने देने के लिए।

"हम तो आए थे बेटा—तुम्हारे लिए लड़की देखने के लिए—सोचा था कि तुम्हारी शादी करके इस आखिरी जिम्मेदारी से भी मुक्त तो जाएं—उम्र बहुत हो गई है ना—जिंदगी का क्या भरोसा...।" एक गहरी सांस ली उन्होंने।

"चाचा जी आप...।"

मगर जटा शंकर जी अपने ही आप में खोए हुए कहते ही रहे।

"कुछ लड़कियों के नाम पते साथ में लाया था—यहां आते ही तुमसे भी मिलने से पहले उन लड़कियों के घरों में गया—अधिकतर तो काफी अमीर थे तो एकाध गरीब घर का भी—और फिर हमें अमीर गरीब से क्या लेना देना—हमें तो तेरे लिए बहू की तल

"एक मिनट कामिया जी—वन मिनट प्लीज...।" लापरवाही से कन्धे झटकते हुए कामिया की बात को बीच में ही रोकने में सफल हो गया नन्हें।

"ये सब बात तो फुरसत की बातें हैं मिस कामिया—और अभी मिस्टर नाने के पास फुरसत कहां है—अभी तो आपकी कार का टायर बदलना है और जाहिर ही है कि ये काम आपके नर्म मुलायम कोमल हाथ नही कर पाएंगे...।"

"टायर डिकी में है...।" झटके के साथ बोली कामिया—अपने स्वर में रोआब कायम रखते हुए ही।

"ओह—डोंट वरी मिस कामिया—मिस्टर डिकीवाला जानते है कि टायर हमेशा डिकी मे ही मिलता है...।"

"टायर नही स्टेपनी...।" कामिया ने नन्हें की बात संशोधन किया—झल्लाए हुए अंदाज में।

"एक ही बात है मिस कामिया—एक ही बात है...।"

"ठीक उसी तरह ना—जिस तरह नन्हें—डिकीवाला विपिन बत्रा और प्रोफेसर नाने होना एक ही बात है...।"

"वाह—आप तो यकीनन बेहद समझदार हैं...।"

बातों के बीच मे ही नन्हें ने कार का टायर बदल दिया औ फिर फ्लैट हुए टायर को वापिस डिकी में रख कर कामिया सामने आ खड़ा हुआ।

कामिया अभी तक नन्हें की चुस्ती फुर्ती बड़े गौर से देख रही थी।

"आपकी कार तो एक बार फिर फ्लाइट लेने के लिए तैया हो गई है मिस कामिया—हां तो आइए फिर नाटक के शेष भाग व आगे बढ़ाएं...।"

"नाटक का शेष भाग...।"

"जी हां मिस कामिया—कहानी तो पूरी करनी ही होग ना—नहीं तो दर्शक नाराज हो जायंगे...। वैसे मैं आगे की शूटिंग पहले आपको कुछ पिछले सीन याद करा दूं...।" कहते हुए अप

देने पर खत्म होगा...।"

"ओह...।" मुस्करा उठा अश्वनी–"चाचा जी जहां तक मैं सोचता हूं–इसमें उस बेचारी का भी कोई दोष नहीं...।"

"क्या मतलब...।" जटा शंकर जी की निगाहें अश्वनी के चेहरे पर जम सी गईं।

"मतलब यह है चाचा जी दहेज और हैसियत शव्द साथ साथ आ जाने पर वह लड़की हैसियत शव्द का गलत अर्थ लगा वैठी...।"

"मगर हमने तो साफ साफ कह दिया था कि हम लम्वे चौड़े लेन देन के खिलाफ हैं...।"

"जानता हूं चाचा जी–आपने यह वात दिल से कही मगर अधिकांश दहेज के लालची लोग इस वात को दिखावे के तौर पर इस्तेमाल किया करते हैं और साथ ही में हैसियत की शर्त लगाकर अपने मन की वात भी कह देते हैं...।"

खामोश रहे जटा शंकर जी–डाक्टर अश्वनी की दलील पर विचार करते हुए।

"आपके ही कहे अनुसार वह लड़की गरीव घर की है–गरीव परिवार की लड़की को विवाह के समय अक्सर दहेज की समस्या का सामना करना पड़ता है–उस वेचारी ने भी इस समस्या को लम्वा सहा होगा–उनके विवाह के लिए आए कई प्रस्ताव इसी दहेज के कारण टूट गए होंगे...।"

"हां–उसके पिता जी यही सफाई पेश कर रहे थे...।"

"सफाई नहीं चाचा जी–वह सच ही वोल रहे होंगे–आपकी वात का चाहे उसने गलत ही अर्थ लगाया मगर उसके साथ उसके पुराने अनुभव जुड़े रहे होंगे–तभी अपने आप पर कावू नहीं रख सकी होगी वह–सोचा होगा–दूसरे दो टूक कर गए–आप वही वात हैसियत की आड़ लेकर कर रहे हैं...।"

"एक घात पूछें अश्वनी वेटा...।"

"हां हां चाचा जी–पूछिए ना...।"

"ओह डोंट वरी मिस कामिया—लिव इट टू मिस्टर नन्हें...।" नन्हें ने दरियादिली दिखाई।

कामिया कुछ सोच कर मुस्कराती हुई कार में बैठ गई।

वास्तव में नन्हें के हल्के से धक्के से ही कार स्टार्ट हो गई और इससे पहले कि नन्हें कुछ सोच समझ पाता—कामिया ने फुर्ती से कार को गेयर में डालते हुए झटके के साथ आगे बढ़ा दिया—तीव्रता से।

"कामिया—मिस कामिया।"

मगर नन्हें की आवाज तो जैसे कामिया के कानों तक पहुंची ही नहीं-उत्तर में बस कामिया का हाथ ही हिला था।

और कार देखते ही देखते दूर होती चली गई थी।

"उफ...।" दोनों हाथों से सिर को थामते हुए एक कार के बोनट पर माथा टिका दिया उसने—आगे झुकते हुए।

और फिर चन्द क्षणों के बाद स्वयं ही चेहरा उठाया था उसने और अपनी शायरी से स्वयं ही उबरते हुए मुस्करा उठा था—यही तो खास आदत थी उसकी—बड़ी से बड़ी बात को हंस कर उड़ा देना था।

"हाय बबीजा मतवी जा...।" कामिया के कार के नम्बर को ही रटता हुआ पैदल ही आगे बढ़ गया—चौराहे पर खड़े होकर किसी से लिफ्ट लेने की सोच के साथ।

और फिर कुछ ही समय के बाद किसी की मोटर साईकल के पीछे बैठा हुआ जनता कालोनी की तरफ जाने वाली मेन रोड की तरफ तीव्रता से बढ़ रहा था।

□□□□

"ट्रेन का समय हो रहा है बेटा अश्वनी—हमारे विचार से तो

तुम...।" कहते हुए जाने खो गए जटा शंकर जी।

भावनाओं के सागर में डूबता उतरता हुआ अश्वनी अगर कुछ कह सका तो बस इतना ही "इस दुनिया में आपके सिवा मेरा है ही कौन...।" आदर और श्रद्धा में डूबा हुआ स्वर।

और जटा शंकर जी ने उसके कन्धे पर हाथ टिका दिया—स्नेह से भरा हाथ—ऐसे जैसे आशीर्वाद दे रहे हों उसे।

□□□□

रज्जो के इस बार भी लड़की हुई है...।

पहली-दूसरी-तीसरी-और अब चौथी लड़की।

एक बार फिर बाजी हार गया राम अंजौर।

चिन्ता का मुख्य विषय यह नहीं था कि रज्जो ने चौथी बार भी लड़की को ही जन्म दिया-चिंता की बात यह थी कि राम अंजौर लड़के की चाह में एक बार फिर कोशिश करेगा।

लड़के को जन्म देने की कोशिश।

और ये कोशिश न जाने कब खत्म होगी।

होगी भी या नहीं...।

यही सोच तो रज्जो के जिस्म के रोम रोम में सिहरन पैदा कर रही थी। पति के स्वाभाव से अच्छी तरह से परिचित थी रज्जो—और अब तो डाक्टर अर्पणा भी स्थिति की गम्भीरता पूरी तरह से जान समझ गई थी—तभी तो राम अजौर को समझाने की अपनी तरफ से पूरी पूरी कोशिश करती रही थी—मगर राम अंजौर को समझाना आसान नहीं था।

"देखिए राम अंजौर जी—आप हमारी बात को समझने की कोशिश कीजिए—रज्जो की सेहत अब इस लायक नहीं रही कि अब...।"

एक बेचारा लल्लू...।

सैवन हन्ड्रेड डैश थर्टीन हन्ड्रेड वाला इन्टरव्यू आज ही था इसीलिए पसीने छूटे हुए थे—ना आकर्षक व्यक्तित्व और ना तना दिमाग की वह इन्टरव्यू में पास हो सके मगर फिर भी विश्वास था कि वह इन्टरव्यू लेने वालों को पहली ही निगाह ल कर देगा।

उसकी इस सोच के कारण ही कई थे।

पिछले कई दिन से दंड बैठक लगा रहा था—इसलिए कि के व्यक्तित्व में निखार आ सके ढीला ढाला जिस्म गठीला बन । शीर्षासन करता रहा था—इसलिए कि उसके मस्तिष्क में रक्त संचार हो सके और छोटे से भेजे में अधिक से अधिक समा सकें।

वैसे उसकी जनरल नॉलिज बढ़ाने में अगर पढ़ाकू छुटकी ने सहयोग दिया था तो नन्हें ने उसके व्यक्तित्व में निखार लाने में ना पूरा पूरा सहयोग दिया था। यह बात अलग थी कि किसी का ोग भी लल्लू के लिए कारगर नहीं साबित हो सका—क्योंकि तो बेचारा लल्लू ही था ना...।

टरव्यू के लिए नम्बर आने पर केबिन में घुसा था—बरी तरह दहवास सा—दौड़ते हुए कदमों से—एसे जैसे कोई वापिस ही ना खींच ले हड़बड़ाया हुआ था इसीलिए लड़खड़ाया भी और अन्दर आ चुका तब...।

"मी आई कम इन सर...।"

"आप आ तो चुके ही हैं—मगर फिर भी आइए...।" रव्यू लेने के लिए बैठा एक सदस्य मुस्कराते हुए बोला -वैसे तो लल्लू हर एक निगाह में आ ही चुका था—अपनी इस दार एन्ट्री के कारण।

"थैंक्स सर—थैंक्स मैडम—वैरी वैरी थैंक्स...।"

"बैठिए मिस्टर एल प्रसाद...।" महिला सदस्य ने प्रत्यक्ष में अनुरोध सा ही किया।

"तू उस लड़की की इतनी तरफदारी क्यों कर रहा है टे...।"

"मैं...। मैं भला किसी की तरफदारी क्यों करने लगा चाचा जी—मैंने तो आपसे जो कुछ सुना और जितना मेरी जिन्दगी का अनुभव है—मैं तो उसी बिना पर बोल रहा हूं।"

"अगर तू उसे जानता और चाहता हो बेटे तो अभी भी बता दे हमें—हम तेरे रास्ते में आड़े नहीं आएंगे...।"

"नहीं चाचा जी—मैं उसे कैसे जानने लगा भला—मैंने तो उस अनामिका को देखा तक नहीं—और अगर देखा भी होता तो जो लड़की मेरे चाचा जी को पसन्द नहीं—वह भला मुझे कैसे पसन्द हो सकती है...।"

"तूने तो हमें सोच में ही डाल दिया बेटे...।" सोचों से उबरते हुए मुस्करा उठे जटा शंकर जी—"हां तो अब चला जाए बेटे...।"

"यानि जाने की बात अभी भी भूले नहीं आप—जाना जरूरी है क्या...।"

"नहीं—जरूरी तो नहीं अश्वनी बेटे—मगर अब यहां जी नहीं लगेगा हमारा—तुझे देख मिल लिए इतना ही बहुत नहीं है क्या...।"

"ठीक है—जैसा आप उचित समझें—जानता हूं आप करते वही हैं—जो ठान लेते हैं मगर कुछ खा लेते तो...।"

"तू जानता ही है बेटे—आज व्रत है हमारा—एक वक्त जो फलाहार लेना था—वह ले चुके हम—हां हम किसी आटो रिक्शा पर ही निकल जाते हैं स्टेशन के लिए—तू आराम कर बेटा...।"

"ऐसा कभी हो सकता है चाचा जी...और मैं भी यहां खाली पड़ा बोर ही होऊंगा...।"

"हां हम जानते हैं बेटे—तुम मानोगे नहीं—तुम हमें स्टेशन पर छोड़ने ही नहीं जाओगे बल्कि उस समय तक प्लेटफार्म पर भी खड़े रहोगे—जब तक हमारी गाड़ी तुम्हारी आंखों से ओझल नहीं हो जाएगी—यह भी जानते हैं हम—उस वक्त तक हाथ हिलाते रहोगे

उसकी निगाहों में कारण तो स्पष्ट था—उसके हर जवाब पर इन्टरव्यू के लिए सदस्यगण मुस्कराते रहे थे और वह यह समझता रहा था कि सभी उससे खुश है—वेहद खुश—अपनी टूटी फूटी अंग्रेजी उसे किसी अंग्रेज से भी वढ़िया नजर आती थी और इन्टरव्यू के दौरान भी वह अंग्रेजी की टांग पूरे अधिकार के साथ तोड़ता रहा था। अपना इन्प्रेशन जमाना था ना।

काश वास्तविकता को जान पाता वह।

वेचारा लल्लू।

□□□□

"मां-मां-मां।" आवश्यकता से अधिक उत्तेजित लल्लू न तीव्रता से मां भागवंती के चरण छू लिए।

"अरे—क्या वात हे रे लल्लू—कहीं से तेरी कोई लाटरी निकल आई क्या...।"

भागवंती हैरान हो गई थी—परेशान तो पहले से ही थी—बड़की को लेकर...।

"बस लाटरी ही निकल आई समझो मां—सेवन हन्ड्रेड डैश थर्टिन हन्ड्रैड की लाटरी—क्या कमाल कर इन्टरव्यू दिया है तेरे बेटे ने—सब के सब फ्लैट हो गए।"

"मगर लल्लू...।"

"देखो मां—अब तू ये लल्लू तो कहा मत कर—जव तू ही कहेगी तो वहां का चपरासी तक कहा करेगा मुझे लल्लू...। नार्ड, आई एम मिस्टर एल प्रसाद डीयर मदर...एण्ड-एण्ड" कहते हुए आगे की अंग्रेजी ना आने के कारण हिन्दी में उतर आया।

"चिन्ता मत कर मां—अव तेरा लल्लू आफिसर वनने जा रहा है—टू सरवेंट आगे और फौर सरवेंट पीछे—अव तेरे सारे दुख दूर—वस अव तो तू लल्लू के आसरे बैठ कर राज कर रा

"बस डाक्टरनी साहिबा बस बहुत लैक्चर हो चुका—हम भी इतने बेवकूफ नहीं हैं—सब समझते हैं हम भी—आपको नसबंदी के आपरेशनों का कोटा पूरा करना होता होगा ना—तभी तो और कोई नहीं मिला तो हमारी बीबी को ही फंसा लिया आपने—और वह कमबख्त भी आपकी बातों में आ गई...।"

"देखिए राम अजोर जी—आप हम पर झूठा इल्जाम लगा रहे हैं—हम आपके परिवार को खुश देखना चाहते हैं—आपको सुखी बनाने के लिए आपकी मदद करना चाहते हैं और...।"

"और वह मदद नसबन्दी से मिलती है—सौ सवा सौ रुपये का इनाम मिलता है नसबन्दी करवाने में और ये सौ सवा रुपये परिवार को खुशहाल बना देते हैं—यही ना...।"

"नहीं-बिल्कुल गलत सोचा है आपने—नसबन्दी सौ सवा सौ रुपयों के लिए नहीं बल्कि बढ़ते हुए परिवार पर रोक लगाने के लिए करवाई जाती है—और छोटा परिवार सुखी परिवार का नारा तो आपने सुना ही होगा ।"

"नहीं—इन्होंने अभी तक ना कुछ देखा है और ना ही कुछ सुना है—मगर अब ये सब कुछ देख भी लेंगे और सुन भी लेंगे...।" रज्जो बीच में ही बोल उठी थी।

"रज्जो तुम ..।"

"ठीक कह रही हूं दीदी—इस तरह घिसट घिसट कर जीने से तो मर ही जाना अच्छा है—एक दिन यही होगा कि या तो किसी दिन गले में फांसी लगा लूंगी या फिर रेलगाड़ी के सामने खड़ी हो जाऊंगी—तभी अपने आप सब कुछ जान जाएंगे ये...।" भारी हो उठा रज्जो का स्वर—पलकों पर आंसू थिरक उठे।

राम अजोर सन्नाटे की सी हालत में रज्जो की तरफ देखता रह गया।

□□□□

गाह। एक नहीं कितनी की बहन जी कार्य करती थी यहां यह संस्था सताई गई नारियों को शरण, सलाह और कानूनी सहायता ही नहीं देती थी—कुछ कर दिखाने की आकांक्षा रखने वाली नारियों को रोजगार के अच्छे अवसर भी देती थी यहां तक कि संस्था के नियमों का पालन करते हुए स्वरोजगार के अवसर भी।

सुमित्रा बहन समस्याओं के समाधान के लिए थी और श्याम लता बहन कानूनी सलाह के लिए।

बड़की की समस्या का समाधान सुमित्रा बहन के पास था और उन्होंने बड़की को समझाया भी था।

"सुमित्रा बहन जी मैं...।"

'बस रहने दो गुणवंती—तुम्हारी समस्या को पूरी तरह से समझ गई हू मैं...।"

बड़की खामोश ही रही—सुमित्रा बहन के ही आगे कुछ कहने के इन्तजार में।

"तुम्हारी समस्या गंभीर तो है गुणवंती मगर ऐसी गंभीर भी नहीं कि हल ही ना निकल सके—हल तुम खुद ही निकाल सकती हो—अपने आप ही—बिना किसी की सहायता के।"

"बताईए—मुझे क्या करना होगा बहन जी...।" झुका हुआ चेहरा उठाया बड़की ने।

"जिस तरह की हिम्मत आज दिखाई है—वही हिम्मत हमेशा अपने अन्दर कायम रखनी होगी ये तो तुम्हारी जंग का प्रारम्भ है—इसी जंग को आगे भी जारी रखना होगा...।"

"आप मेरे परिवार से परिचित नहीं है सुमित्रा बहन जी तभी...।"

"देखो गुणवंती—यह मत भूलो कि मुडना तो आखिर लोहे को भी पड़ता है—ऊपर से कितना कठोर दिखता है वह...।"

"मगर...।"

"इस मगर को ही अपने अन्दर से हटा दो बड़की—हर समस्या का समाधान अपने आप हो जाएगा। याद रखो कि कुछ १

"नो—थैंक्स—आई एम गुड इन स्टैंन्डिंग...। वो क्या है कि दादा जी ने आई मीन हमारे ग्रांड फादर ने बचपन में ही सिखाया हुआ है कि बड़ों के सामने बैठा नहीं जाता और फिर आप सब तो इस वक्त मेरे लिए दुनिया में ही सबसे बड़े हो—सैवन हन्ड्रेड डैश थर्टीन हैन्ड्रेड वाला केस है ना. । ह-हां—मैं कुछ ज्यादा ही बोल गया दिखता हूं—छुटकी और नन्हे दोनों ने ही समझाया था कि इन्टरव्यू के वक्त ज्यादा मत बोलना ..।"

"नहीं नहीं—आप ज्यादा कहां बोले हैं.... इतना तो बोलना ही पड़ता है ना ।"

महिला सदस्या मुस्कराते हुए ही बोली।

"ओह—जी फिर ठीक है—थैंक्यू मैडम...।" लल्लू ने जैसे चैन की सांस ली।

संयोग से उसी वक्त चपरासी साक्षात्कार लेने वाले सदस्यों के लिए चाय ले आया—लल्लू से पूछना तो मात्र एक औपचारिकता को ही पूरा करना था मगर. ।

"आप चाय पीना पसन्द करेंगे मिस्टर एल प्रसाद...।" महिला सदस्या ने ही पूछा—संभवत उसे ही लल्लू का भोला भाला अंदाज अधिक पसन्द आ रहा था।

"नो मैडम—नो टी ..। वो क्या है जी—जब चाय और दूध दोनों ही सामने पड़े हों तो मैं दूध ही पीना ही पसन्द करता हूं—सेहत भी बनती है और दिमाग भी तर रहता है।" और इससे पहले कि कोई कुछ सोच समझ पाता—लल्लू यानि एल प्रसाद ने ट्रे में रखा मिल्क पोट उठाकर मुंह से लगा लिया।

किसी से कुछ कहते ही नहीं बना।

बस यही शुरूआत थी लल्लू के इन्टरव्यू की।

और जिस हिसाब से उसने इन्टरव्यू की शुरूआत की उसी हिसाब से इन्टरव्यू में पूछे गए सवालों का उलटा सीधा जवाब देने के बाद लल्लू जब केबिन से बाहर निकला तो बहुत खुश था—बेहद खुश।

सवार कोई और नहीं—अश्वनी था—डाक्टर अश्वनी।

□□□□

इस तरह सड़क पर खड़े होकर बातें करना बड़ा अजीव सा था वड़की के लिए और इसीलिए जब अश्वनी ने एक एक कप काफी के लिए आग्रह किया तो इन्कार नहीं कर सकी वड़की।

एक तो अश्वनी पेशे से डाक्टर था—दूसरा चेहरे पढ़ने का अनुभव भी था उसके पास—वड़की की परेशानी भरी मुद्रा—उदास चेहरा—वहन जी के कार्यालय में आना—अश्वनी ने वड़की को जरा सा कुरेदा तो वह अश्वनी को अपना एक अच्छा मित्र और शुभ चिन्तक समझकर सब कुछ बताती चली गई।

अश्वनी खामोशी से सुनता रहा था सब कुछ—चेहरे की गंभीरता वढ़ती चली गई थी।

और जब वड़की कह चुकी थी तो एक अजीव सी खामोशी छा गई थी वहां।

आखिर इस खामोशी को अश्वनी ने ही तोड़ा।

"एक वात कहूं गुणवंती जी...।"

उत्तर में वड़की ने खामोशी से सिर्फ़ चेहरा ही उठाया—निगाहें अश्वनी के चेहरे पर जा टिकी।

"कल की गुणवंती और आज की गुणवंती में जमीन आसमान का अंतर दिखाई दे रहा है मुझे।"

"अश्वनी जी आप...।"

"सच कह रहा हूं गुणवंती जी—आप तो दो ही दिन में विल्कुल वदल गई...।"

"आपके वताए हुए रास्ते पर चलने की ही तो कोशिश कर रही हूं मैं...।" सकुचाया हुआ मगर श्रृद्धा से भरा हुआ था वड़की का स्वर।

वड़की—तेज कदमों से चलते हुए दूसरे कमरे में घुस गई—चेहरे पर एक दृढ़ संकल्प के भाव लिए हुए।

हतप्रभ से वहीं खड़े हुए वसेसर राम भागवंती की तरफ देखते हुए मुस्करा से उठे।

एक अजीव सी मुस्कराहट।

□□□□

समाज के वीच वसेसर राम जैसे परिवार की जिन्दगी तो घिसट घिसट कर ही चलती है—जहां कमाने वाले हाथ कम और खाने वाले मुंह ज्यादा हों—वहां ऐसा ही होता है और वसेसर राम को तो उड़ाने की आदत भी थी शराव में अपनी कमाई उड़ाने की आदत...।

खैर...। इन कुछ दिनों में कुछ हुआ तो वह यह कि मंझली की रूपा नाइट प्रीतम उस्ताद के संरक्षण में सफल रही—मंझली की निगाहों में तो वेहद सफल—प्रीतम उस्ताद उसके ऊपर कुछ ज्यादा ही मेहरवान थे—और अपनी मेहरवानियों की पूर्ति मंझली के खूवसूरत जिस्म से करना चाहते थे मगर मंझली वड़ी होशियारी से अपने आपको वचाए भी रही।

नन्हें के सिर पर तो डी.आई.ए. ववीजां सतवीजा का भूत सवार था—यानि कि कामिया का भूत—कामिया उसके दिलो दिमाग पर अपना कव्जा करती जा रही थी—नन्हें अपने दोस्त आनिदों से कामिया और उसके अमीर पिता किशोरी लाल के वारे में काफी जानकारी हासिल करने के वाद कामिया के ही एक परिचित के वच्चे की वर्थ डे पार्टी में विन वुलाये मेहमान की तरह मगर वेश वदलकर जा पहुंचा था—अकेला ही नहीं—साथ में अपनी वहन रज्जो की तीन तीन लड़कियां लेकर—हां राम अंजौर को रज्जो की जिद के आगे झुककर नसवन्दी तो करवानी ही पड़ी।

पिता बसेसर राम और दादी इमरती देवी से ही हुआ—बसेसर राम जी तो बहन जी के कार्यालय तक भी हो आए मगर कोई नतीजा नहीं—उसने जो एक बार अधेड़ उम्र के महेन्द्र के साथ विवाह से इन्कार किया तो इस इन्कार को कोई भी हां में नहीं बदल सका। वैसे तो बसेसर और दादी जी के सिवा और कोई भी तो तरफदार नहीं था इस रिश्ते का—मां भागवंती और दादा जी यानि रिज्जक राम सदा ही उसके विचारों को मजबती देते रहे।

हां—यहां पर डाक्टर अश्वनी का जिक्र करना भी जरूरी है—मां भागवंती के एकाएक बीमार हो जाने पर बड़की को और कोई रास्ता ना देखकर डाक्टर की मदद लेनी पड़ी—भागवंती तो मालूमी से इलाज से ही ठीक हो गई मगर अश्वनी तो इस परिवार के एक सदस्य की तरह ही हो गया—सभी को तो पसन्द था वह—हर माहौल में घुल मिल जाने वाला—हां बड़की और अश्वनी प्रत्यक्ष में तो चाहे खामोश थे मगर निगाहों ही निगाहों में तो खामोश रह कर बहुत कुछ कह सुन चुके थे।

बाकी रही छुटकी की बात—तो छुटकी जिस दिन से डाक्टर अर्पणा से उसकी बेटी के द्वारा उसके सिर में तेल डालने की बात कह आई थी—अर्पणा उसी दिन से छुटकी को नहीं भुला सकी थी।

छुटकी की भोली भाली और समझदारी भरी बातें तो किसी के भी मन पर अधिकार जमा सकती थीं और डाक्टर अर्पणा के साथ भी ऐसा ही हुआ था।

□□□□

"अरी बड़की—नाक तो तूने इस तरह नीची करवा दी जैसे वाकई घर से भाग गई हो—ना जाने किस जन्म का बदला ले रही है तू हमसे...।"

"बदला तो आप लेना चाहते हैं बापू—उस बूढ़े महेन्द्र से मेरी शादी करवा कर...।"

"देखा-देखा भागवंती—कैसे बड़बड़ा रही है बत्तमीज मेरे सामने—कल तक यही लड़की सिर झुकाए हुए किस तरह खामोश रहा करती थी—और आज...।"

"आज की बड़की और कल की बड़की में जमीन आसमान का अन्तर है बापू—कल की बड़की को न्याय अन्याय सब कुछ खामोशी से सिर झुकाए सहते चले जाने के सिवा और कुछ आता ही नहीं था—और आज की बड़की सिर उठाकर जीने की कोशिश कर रही है—अपने अधिकारों के लिए लड़ना सीख रही है आज की बड़की और...।"

"और बाप की रही सही इज्जत का जनाजा निकालना सीख रही है आज की बड़की...।"

"नहीं बापू मैंने आपकी इज्जत के साथ कोई खिलवाड़ नहीं किया—घर के बीच किसी की अलग-अलग इज्जत होती भी नहीं—बहन तो...।"

"ले भागवंती—ये तो घर से भागकर बहन जी के आफिस में गई थी—बहन जी मेरे घरवाले जुल्म कर रहे हैं मुझ पर—बताइए क्या करना चाहिए मुझे...।"

"हां बापू—ठीक है—यही पूछने गई थी मैं—और जवाब में यह सीखकर आई हूं कि अपने अधिकारों के लिए लड़ने के लिए अपने आपको मजबूत बनाना होगा मुझे—खुद अपने पैरों पर खड़ा होना होगा—और अपने पैरों पर खड़े होने के लिए मैं नौकरी की तलाश कर रही हूं बापू—हो सकता है दिन दो दिन में ही बहन जी के ही कार्यालय में काम शुरू कर दूं...।"

और उसके बाद कुछ कहने सुनने के लिए रुकी नहीं

कामिया नन्हें की शरारतों से तो नहीं हां उसके अन्दर के आत्मविश्वास से जरूर प्रभावित हो रही थी—नन्हें के विषय में उसने अपनी सहेलियों द्वारा काफी जानकारी भी हासिल कर ली थी और नतीजा कुल मिलाकर यह था कि नन्हें पढ़ाई लिखाई में बेहद होशियार हैं—खेलों में भी सबसे आगे—हां बस हाथ बढ़ाकर आकाश को छू लेने की तमन्ना तो उसमें सदा से ही रही है और कामिया भी तो नन्हें के सामने आकाश के चांद की तरह ही थी।

लल्लू—बेचारा लल्लू ही रहा—इन्टरव्यू देने के तुरन्त बाद सैवन हैन्ड्रेड डैश थर्टीन हन्ड्रेड यानि कि सात सौ से तैरह सौ तक के ग्रेड के सपने देखने शुरू कर दिए और जब इन्टरव्यू में फेल हो गए—जिन्दगी के तमाम महल एक ही झटके में ढह गए—बीच बाजार खड़े खड़े लुट गए लल्लू जी—मगर ऐसे में भी वह यह बात कैसे स्वीकार करते कि इन्टरव्यू में फैल होना उनकी अपनी कमजोरी रही होगी—उनकी निगाहें में तो यह सीधा सादा सिफारिश का मामला था उनके कहे अनुसार उन्हीं का सलैक्शन इस इन्टरव्यू में किया गया होगा जिनके चाचा ताऊ इन्टरव्यू ले रहे होंगे या फिर जिन्होंने हजारों की मोटी रिश्वत दी होगी—अपनी कमजोरी को दबाए रखने का बस एक यही साधन था उसके पास...।

बड़की...। बड़की का सिर जब तक झुका रहा—झुका रहा। होंठ जब तक सिले रहे तभी तक सिले रहे—अब जब तक एक बार उसने अपने अधिकारों और स्वाभिमान के लिए सिर उठा लिया तो यह उठा हुआ सिर अब झुकाना मुश्किल था—उसने नौकरी की तलाश की—और फिर पूरी तरह से सोचविचार करके बहन जी के कार्यालय में काम शुरू कर दिया बहन जी के पास के सिर्फ नौकरी ही नहीं थी—स्वरोजगार की स्कीम भी लागू थी उसके ऊपर यानि कि वह जिस क्षेत्र में सहयोग कर रही थी—उस क्षेत्र में होने वाले लाभ में मुनाफे की हिस्सेदार भी थी वह।

घर में बड़की का सबसे ज्यादा विरोध हुआ तो उसके अप

हैं जी—इस घर में एक हम ही तो है जो उसके साथ अंग्रेजी में बात कर सकते हैं...।"

"हां—भाईयों और बहनों—आपमें से किसी को भी हमारे लल्लू भईया की टांग तोड़ अंग्रेजी पर संदेह नहीं होना चाहिए...।"

"और भाईयो और बहनों—आपको इन नन्हें की बे फालतू की बकवास पर ध्यान नहीं देना चाहिए- मोना को आ जाने दीजिए—फिर देख लीजिए हमारा कमाल...।"

"और भाईयों और बहनो—आप सबको यह भी जान लेना चाहिए कि विलयिम हैरिस की लड़की मोना को हिन्दी बोलना और लिखना दोनों ही आता है...।" दादा जी भी उन्हीं के अंदाज में बोलते हुए कमरे से बाहर निकल गए।

"कोई बात नहीं लल्लू भैया—उसे हिन्दी को अंग्रेजी में बोलना सिखा देंगे।"

"देख-देख नन्हें तू...।" लल्लू तीव्रता से नन्हें की तरफ झपटा।

मगर नन्हें बड़ी फूर्ती से अपने आपको लल्लू की पकड़ से बचाता हुआ कमरे से बाहर निकल गया।

अब कमरे में लल्लू अकेला ही रह गया—मोना की काल्पनिक तस्वीर की कल्पना करता हुआ।

□□□□

"थप...थप...।"

दरवाजे पर हुई थपथपाहट के साथ ही आगे बढ़कर द्वार खोला मंझलीं ने -इस वक्त घर पर अकेली ही थी वह। दरवाजा खोलते ही उसने आंगतुक ही तरफ आश्चर्य से देखा—नवयुवक था वह—आकर्षक व्यक्तित्व का मालिक—बगल में हेलमेट को दबाए हुए।

बातें करनी होंगी।"

"अरे आप कैसी बातें करती हैं अर्पणा—आपकी ही नहीं आज हमारी भी तो छुट्टी है—वो कहावत सुनी है ना आपने—खूब गुजरेगी—मिल बैठेंगे जब दीवाने दो...।"

"मगर दो दीवानें भी कब तक दिवानापन कर सकते हैं सुधीर—कुछ ही समय में आप अपनी किताबों में डूब जाएंगे—मैं फिर अकेली रह जाऊंगी...।"

"हम तो चाहते हैं अर्पणा—आप फिर अपनी सोची हुई रूचियों को उभारने की कोशिश करें—आप डांस भी तो अच्छा कर लेती थीं अपने कालिज के दिनों में—हमारा विश्वास है—आप अभी भी बहुत अच्छी डांसर होंगी...।"

"हां—हां...। शायद आपकी बात सही भी हो मगर सुधीर अब खुद नाचने की उम्र नहीं है हमारी—इस बात की तमन्ना भी नहीं होती हमारी—हां अगर हमारे कोई बच्ची होती तो उसे जरूर सिखाती मैं...।" कहते हुए बोझिल होता चला गया स्वर।

सुधीर सिंहा चंद क्षणों तक तो अर्पणा की तरफ देखते हुए ना जाने क्या सोचते रहे और फिर एक गहरी सांस लेते हुए बोले।

"हम जानते हैं अर्पणा—मां बनने की चाह कितनी बलवती है आपके अन्दर—मगर ममता की प्यास सिर्फ आपके अन्दर ही नहीं है—हां यह बात दूसरी है कि हम...।"

"हां यह बात दूसरी है कि आप इस प्यास को अन्दर ही अन्दर जब्त करते रहे हैं यही ना। मगर आप यह बात भूल रहे हैं सुधीर—नारी चाहे कितनी भी मजबूत क्यों ना हो—किसी ना किसी पहलू से जरूर कमजोर होती है और फिर मातृत्व का पहलू तो नारी के लिए बहुत अहम पहलू है सुधीर...।" दर्द से भरता चला गया अर्पणा का स्वर।

खामोश रहे सुधीर सिन्हा—कुछ समझ नहीं सके कि वह कैसे दिलासा दें अर्पणा को—जीवन की यह रिक्तता तो उन्हें भी टीस देती रही थी।

आए...।"

"अच्छा एक मिनट रूकिए—मैं जरा ड्रेस चेंज कर लूं...।"

"ओह श्यौर...। मगर आप इस वक्त भी कम खूबसूरत नहीं लग रही मिस रूपा...।"

उत्तर में मुस्करा दी मंझली-प्रीतम उस्ताद के पास जाते हुए उसे इन सब बातों को सुनने सहने की आदत पड़ चुकी थी और फिर वह जानती थी कि यह सब तो फिल्मी दुनिया में आम बातें हैं—बेहद मामूली।

कुछ ही समय में मंझली ने घर के द्वार पर ताला लगाकर चाबी पड़ोस में रहने वाली मुन्नी को दे दी थी।

और अब वह त्रिभुवन पांडे उर्फ टोनी की मोटर साईकल के पीछे उससे सटकर बैठी हुई मेन रोड पर तैर सी रही थी—मोटर साईकल अच्छी चला लेता था टोनी।

□□□□

"वैसे कामिया—तेरा क्या ख्याल है अपने उस रोमियो के बारे में—हां नन्हें ही तो नाम है उसका—चन्द्र प्रकाश उर्फ नन्हें...।"

"मुझसे क्या पूछती है विनिता—तूने खुद ही तो उसके बारे में इतनी जानकारी इकटठी की है...।"

"हां मगर मेरी सारी भागदौड़ तेरे लिए ही थी...।"

"हां विनिता—सच्चाई जानना चाहती थी मैं—उसकी असलियत जानना चाहती थी—इसीलिए...।"

"तो अब तक क्या देखा समझा जाना तूने...।" विनिता की निगाहें प्रश्नवाचक मुद्रा में कामिया के चेहरे पर जम सी गई।

"यही कि वह ना तो दिल का ही बुरा है और ना ही देखने भालने बातचीत में...।"

"दिल का कैसे बुरा हो सकता है—दिल तो उसका तुझ पर

"भाईयों और बहनों—जहां तक मैं देख रहा हूं—महसूस कर रहा हूं—रिटायर्ड सूबेदार श्री रिज्जक रामयानि हमारे परम प्रिय दादा जी के चेहरे की चमक एकाएक कई गुना बढ़ गई है और जहां तक मैं सोच रहा हूं इसका कारण हाथ में पकड़ा हुआ वह पत्र है जो अभी विदेश से आया है—हां तो डीयर दादा जी क्या आप इस पत्र के विषय में जनता जनार्दन को कुछ बताना चाहेंगे—एल.आई.जी. जनता फ्लैट्स की यह जनता आपके स्पेशल कमेंटस जानने के लिए बेताब हो रही है...।" कहते हुए नन्हें ने हाथ में पकड़े काल्पनिक माइक का काल्पनिक मुंह दादा जी की तरफ कर दिया।

"दादा जी— आप बकर चकर पर ध्यान दिए बिना लैटर का मैटर बता दीजिए जी—वो क्या कहते हैं जी—ब्रीफ में...।" इस बार लल्लू का स्वर उभरा।

"ठीक है भाई—जब तुम सब इतने बेताब हो तो बता देते हैं हम भी—फौज में मेरे सीनियर आफिसर थे ना—विलियम हैरिस—आजकल वह विदेश में हैं—उनकी ही बच्ची भारत घूमने के लिए आ रही है...।"

"बच्ची...।" लल्लू ने सवालिया निगाहों से दादा जी की तरफ देखा "बच्ची और अकेली आ रही है—वाट डू यू मीन ग्रांड पा...।"

"अरे —तू भी लल्लू का लल्लू ही रहेगा रे लल्लू—जब तुम सब इतने बड़े होकर भी मेरे सामने तो बच्चे ही हो—तब मोना क्या तुम सबसे अलग है।"

"मोना...।"

"हां लल्लू—वैसे तो मोना तुम्हारी ही हम उम्र है—पढ़ी लिखी है—समझदार है...।"

"समझदार तो अपनु भी कम नहीं है ग्रांड पा—वो क्या कहते

आए...।"

"अच्छा एक मिनट रूकिए—मैं जरा ड्रेस चेंज कर लूं...।"

"ओह श्यौर...। मगर आप इस वक्त भी कम खूबसूरत नहीं लग रही मिस रूपा...।"

उत्तर में मुस्करा दी मंझली-प्रीतम उस्ताद के पास जाते हुए उसे इन सब बातों को सुनने सहने की आदत पड़ चुकी थी और फिर वह जानती थी कि यह सब तो फिल्मी दुनिया में आम बातें हैं—बेहद मामूली।

कुछ ही समय में मंझली ने घर के द्वार पर ताला लगाकर चावी पड़ोस में रहने वाली मुन्नी को दे दी थी।

और अब वह त्रिभुवन पांडे उर्फ टोनी की मोटर साईकल के पीछे उससे सटकर बैठी हुई मेन रोड पर तैर सी रही थी—मोटर साईकल अच्छी चला लेता था टोनी।

□□□□

"वैसे कामिया—तेरा क्या ख्याल है अपने उस रोमियो के बारे में—हां नन्हें ही तो नाम है उसका—चन्द्र प्रकाश उर्फ नन्हें...।"

"मुझसे क्या पूछती है विनिता—तूने खुद ही तो उसके बारे में इतनी जानकारी इकटठी की है...।"

"हां मगर मेरी सारी भागदौड़ तेरे लिए ही थी...।"

"हां विनिता—सच्चाई जानना चाहती थी मैं—उसकी असलियत जानना चाहती थी—इसीलिए...।"

"तो अब तक क्या देखा समझा जाना तूने...।" विनिता की निगाहें प्रश्नवाचक मुद्रा में कामिया के चेहरे पर जम सी गईं।

"यही कि वह ना तो दिल का ही बुरा है और ना ही देखने भालने बातचीत में...।"

"दिल का कैसे बुरा हो सकता है—दिल तो उसका तुझ पर

"आप...।"

"नमस्कार रूपा जी—जानता हूं आप मुझे नहीं जानती मगर देख लीजिए मैं आपको जानता हूं...।"

"मगर...मगर आप...।"

"ना—घबराइए मत मिस रूपा—मुझे त्रिभुवन कहते हैं—वैसे यार दोस्त मुझे प्यार से टोनी कहा करते हैं और यार दोस्तों के बीच में टोनी के नाम से ही जाना जाता हूं...।"

"मगर...।"

"चन्द रोज पहले आपका स्टेज शो देखा तो आपके फैन हो गए हम—तभी से आपसे मिलने की तमन्ना दिल में थी—और फिर सच पूछिए तो अपना काम भी कुछ ऐसा ही है—आप जैसी दुनिया की भीड़ में खोई प्रतिभाओं को खोजकर फिल्मों तक ले जाना—उन्हें उनको उचित स्थान दिलाना...।"

फिल्मों के नाम से ही मंझली की निगाहों में चमक उभर आई—और यह चमक अनुभवी टोनी की निगाहों से भी छिपी नहीं रह सकी।

"अगर आप चाहें तो मैं आपकी भी मदद कर सकता हूं मिस रूपा...।"

"आप-आप मेरी मदद करेंगे मिस्टर टोनी...।" उत्तेजित हो उठी मंझली—"आप जानते हैं फिल्मी हस्तियों को।"

"अब मैं खुद ही क्या कहूं मिस रूपा—चार दिन आप साथ रहेंगी तो खुद ही जान जाएंगी हां आपके घर में...।"

"सब इस वक्त बाहर गए हुए हैं—ह-हां—आप अन्दर तो आईए ना...।"

"नहीं मिस रूपा—आइए कहीं बाहर ही चलते हैं—किसी रेस्टोरेंट में बैठ कर आराम से बात करेंगे...।"

"जी मगर...।"

"घर में रहकर तो आप फिल्मों तक नहीं पहुंच सकेंगी मिस रूपा—ऐसा तो बहुत कम ही होता है ना कुंआ प्यासे के पास

दरवाजे के समीप पहुंचते हुए वड़की का स्वर सकुचाहट भरा था।

"मगर वड़की जी ये चप्पल डाक्टर...।" वुदवुदाते हुए अपने दिमाग पर और जोर डाला अश्वनी ने और फिर दूसरें ही क्षण हंस पड़ा—मुक्त हंसी।

"हां तो आपने हमारी असफलता के झंडे यहां भी गाड़ ही दिए गुणवंती जी...।"

"असफलता...।"

नन्हें छुटकी और लल्लू तीनों की निगाहें डाक्टर अश्वनी के चेहरे पर जम गईं—मंझली तो घर पर थी ही नहीं।

जी हां—इनकी चप्पल का आपरेशन काफी सिरियस था इसीलिए मुझ जैसे जूनियर डाक्टर को ऐड़ी चोटी के प्रयास के वाद भी नाकामयावी मिली।"

"कामयावी नाकामयावी तो जिन्दगी के साथ जुड़ी हुई हैं डाक्टर साहव—आप अन्दर तो चले आइए...।"

"इस अपरिचित स्वर के साथ निगाहें घुमाई अश्वनी ने—कोई व्यक्ति दूसरे कमरे से चलता हुआ इधर आया था।

यह कोई और नहीं बसेसर राम ही थे।

"मीट माई फादर श्री वसेसर राम...।"

"ओहनमस्कार वसेसर राम जी—आपके विषय में सुना तो बहुत था मगर मुलाकात आज ही हुई—वैसे जव मां जी बीमार थीं तव...।"

"तव हम शहर से वाहर गए हुए थे डाक्टर साहव—हां वैसे आपने क्या सुना था हमारे वारे में—यहीं सब कुछ बताया होगा इन सबने कि हमारे वापू शराव वहुत पीते हैं नाकारा हैं और...।"

"नहीं नहीं—ऐसा कुछ भी नहीं बताया गया मुझे—हां मगर कुछ वताया गया तो यह कि आप गाते बहुत अच्छा हैं—विशेषकर सहगल की आवाज में तो हुवहू गालेते हैं...।"

कमरे में आने के पश्चात पलंग पर ही वैठता हुआ वोला था

"आप...।"

"नमस्कार रूपा जी—जानता हूं आप मुझे नहीं जानती मगर देख लीजिए मैं आपको जानता हूं...।"

"मगर...मगर आप...।"

"ना—घबराइए मत मिस रूपा—मुझे त्रिभुवन कहते हैं—वैसे यार दोस्त मुझे प्यार से टोनी कहा करते हैं और यार दोस्तों के बीच में टोनी के नाम से ही जाना जाता हूं...।"

"मगर...।"

"चन्द रोज पहले आपका स्टेज शो देखा तो आपके फैन हो गए हम—तभी से आपसे मिलने की तमन्ना दिल में थी—और फिर सच पूछिए तो अपना काम भी कुछ ऐसा ही है—आप जैसी दुनिया की भीड़ में खोई प्रतिभाओं को खोजकर फिल्मों तक ले जाना—उन्हें उनको उचित स्थान दिलाना...।"

फिल्मों के नाम से ही मंझली की निगाहों में चमक उभर आई—और यह चमक अनुभवी टोनी की निगाहों से भी छिपी नहीं रह सकी।

"अगर आप चाहें तो मैं आपकी भी मदद कर सकता हूं मिस रूपा...।"

"आप-आप मेरी मदद करेंगे मिस्टर टोनी...।" उत्तेजित हो उठी मंझली—"आप जानते हैं फिल्मी हस्तियों को।"

"अब मैं खुद ही क्या कहूं मिस रूपा—चार दिन आप साथ रहेंगी तो खुद ही जान जाएंगी हां आपके घर में...।"

"सब इस वक्त बाहर गए हुए हैं—ह-हां—आप अन्दर तो आइए ना...।"

"नहीं मिस रूपा—आइए कहीं बाहर ही चलते हैं—किसी रेस्टोरेंट में बैठ कर आराम से बात करेंगे...।"

"जी मगर...।"

"घर में रहकर तो आप फिल्मों तक नहीं पहुंच सकेंगी मिस रूपा—ऐसा तो बहुत कम ही होता है ना कुंआ प्यासे के पास

"काश आप जैसी औलाद हमारे भी होती डाक्टर व...।"

"मां जी की ही तरह आप भी मुझे बेटा बोल सकते हैं बसेसर जी—वैसे आपकी औलाद में भी क्या कमी है।"

"अब क्या कहें और क्या ना कहें अश्वनी बेटे—ये छोटा नन्हें ो इसे तो किसी फिल्म कम्पनी में हीरो होना चाहिए था—और ना ये लल्लू तो हीरो नहीं जीरो है बिल्कुल जीरो—और आज तो ये बड़की भी खूब रंग दिखा रही है...।"

"ओह तो आपको गुणवंती जी जैसी सीधी सादी लड़की से भी कायत है बसेसर राम जी।"

"कल तक तो सीधी ही लगती थी मगर अब तो लगता है—ये ही सीधा करने की कसम खाए हुए है।"

"लगता है आप बहुत नाराज है गुणवंती जी से...।" सब जानते बूझते भी अंजान बना रहा अश्वनी।

"सुनिए जी आप...।"

"टोक मत भागवंती—कहने दे—डाक्टर साहब भी अपनों से हैं—कौन से पराए हैं जो...।"

बड़की तो पहले ही उठकर दूसरे कमरे में चली गई —जानती थी कि उसके पिता बसेसर राम को चुप करा पाना मुमकिन नहीं।

"देखो अश्वनी बेटा—हम लोग कोई लखपति या करोड़पति हैं नहीं। अपना पेट काट कर पढ़ाया लिखाया है इन्हें और...।"

"बात गुणवंती जी की हो रही थी बसेसर राम जी...।"

"हां बेटे—उसी बात पर आ रहे हैं हम—हमने बड़की के ए एक नहीं कितने ही लड़के देखे—मगर कभी वो ना कर गए र कभी हमें ज्यादा दहेज़ ना दे पाने की मजबूरी की वजह से पी साथ लेनी पड़ी और अब जब निगाह में अच्छा भला लडका या तो...।"

"तो...।"

आया है ना...।"

"प्लीज विनिता-मजाक नहीं...।"

"ठीक है—तब फिर तू ही बता...।"

"कुछ कहने बताने लायक है ही क्या विनिता—बस अजीब दीवानापन है उसका—पता नहीं मुझसे चाहता क्या है वह...।" खोया हुआ सा स्वर था कामिया का।

"दे दे प्यार दे—प्यार दे...।"

"ओह शटअप विनिता...।" कामिया ने उसकी पीठ पर धप्प सी जमा दी।

मगर शरारत के मूड में थी विनिता- शरारती निगाहों से कामिया की तरफ देखते हुए खिलखिला उठी थी वह—बेतहाशा।

□□□□

दरवाजा खोलते ही छुटकी की निगाह अश्वनी पर पड़ी—डाक्टर अश्वनी पर और अश्वनी का उस घर में आना सभी के लिए एक सुखद आश्चर्य था।

"हैलो मिस छुटकी...।"

"हैलो चप्पल डाक्टर...।"

"ए छुटकी बकबक ही करेगी या डाक्टर साहब को अन्दर भी आने देगी—प्लीज कम इन डाक्टर अश्वनी—मीट विद मी—आई एम मिस्टर एल. प्रसाद...।"

"उर्फ मिस्टर लल्लू...।"

"देखिए—देखिए डाक्टर साहब यह नहीं चलेगा—वरना अपुन भी डाक्टर अश्वनी से चप्पल डाक्टर पर आ जाएंगे...।"

"मगर ये चप्पल डाक्टर है क्या बला...।"

"अ...आप...आप अन्दर तो आइए ना—ये लोग तो ऐसे ही बकवास करते रहते हैं।"

काम करने की चाह को लेकर भी तो परेशान हैं...।''

''हम तो अपनी जिन्दगी से भी परेशान हैं अश्वनी वेटे...।'' एक गहरी सांस भर उठे वसेसर राम।

''नहीं-नहीं–ये कैसी वात कर रहे हैं आप...।''

''सच ही तो कह रहा हूं वेटे–परेशान हैं तभी तो पीते हैं–पीते हैं–तभी तो जीते हैं अब तुम ही वताओ–जवान लड़की को कव तक घर में विठाया जा सकता है–क्या मुझे अपनी वड़की प्यारी नहीं मगर जात विरादरी वाले थोड़े ही अपना मुंह वन्द रखते हैं महेन्द्र में भी किस वात की कमी है–और फिर सवसे वड़ी वात तो यह है कि वह खुद ही विना दहेज के वड़की से शादी करना चाहता है और...।''

''और गुणवंती जी का हाथ थामने के लिए मैं यही प्रस्ताव आपके सामने रखूं तो...।''

''क्या...।'' वसेसर राम अवाक से अश्वनी की तरफ देखते रह गए–यकीन ही नहीं हो पा रहा था कि अश्वनी जो कह रहा है–वह सच भी हो सकता है।

वसेसर राम ही नहीं सभी अश्वनी की तरफ देख रहे थे–एक टक।

''ये-ये तुम क्या कह रहे हो अश्वनी वेटे...।''

''जो कह रहा हूं वहुत सोच समझकर कह रहा हूं वसेसर राम जी–सच पूछिए तो इसी वारे में वात करने के लिए मैं आज आपके घर आया था–और मेरे कुछ प्रयास किए विना ही खुद व खुद भूमिका भी वन गई...।''

''तो–तो क्या...।''

''यह तो आप जानते ही हैं–गुणवंती जी और मैं पहले से ही एक दूसरे को जानते हैं–मगर मैं उन्हें चाहता भी हूं–इसीलिए उनसे शादी भी करना चाहता हूं–दहेज का लालच मुझे विल्कुल भी नहीं–अच्छा वुरा जैसा भी हूं–आपके सामने हूं–अगर आप मुझे अपनी वड़की के योग्य समझें मुझे तो विवाह पर आपव

अश्वनी।

"वाह—कमाल ही हो गया डाक्टर साहब—हमारी इतनी तारीफ किसने कर दी आपसे...।"

"मेरे ख्याल से तो सभी ने ही आपकी तारीफ की—हां मां जी कहां गईं—इधर से गुजर रहा था—सोचा मां जी की सेहत के बारे में भी पूछ लूंगा—कहीं बाहर गई हुई हैं शायद...।"

"नहीं मैं भी यहीं हूं अश्वनी बेटे...।"

"ओह नमस्कार मां जी—कहां छिपी हुई थीं आप—हां शायद अपने लिए चाय बना रही थी—तभी...।"

"अपने लिए नहीं अश्वनी बेटे—तुम्हारे लिए...। तुम्हारी आवाज सुनी तो सोचा—तुम इतनी दूर से आ रहे हो थक गए होंगे—इसीलिए चाय बना दी।" स्नेह पूर्ण स्वर में बोलते हुए भागवंती ने चाय का कप अश्वनी की तरफ बढ़ा दिया।

चाय का कप हाथ में लेते हुए अश्वनी श्रद्धा भरी निगाहों से भागवंती की तरफ देखता रह गया—ना जाने क्यों।

"क्या बात है अश्वनी बेटे—तू...।"

"कुछ नहीं मां जी—सोच रहा था कि अगर मेरी मां होती तो इसी तरह हमेशा ख्याल रखती मेरा...।"

कहते हुए एक गहरी सांस ली थी अश्वनी ने।

"तो-तो क्या बेटे...।"

"नहीं मां जी—मां और बाप दोनों का ही साया नहीं है मेरे सर पर—बचपन में ही अनाथ हो गया था मैं अगर मेरे चाचा जी मुझे अपनी औलाद की तरह नहीं पालते पोसते तो।"

"सगे सब कुछ नहीं होते—तुम्हारी मां जैसी तो हूं ही बेटे...।"

"मुझे तो आप सगी मां से भी बढ़कर ही लगती है मां जी...।"

और अश्वनी की यह श्रद्धा ही भाव विभोर करती चली गई भागवंती को—पलकें अनायास ही नम होती चली गई।

भारत देश के दर्शन की इच्छुक बेटी मोना आज ही विमान द्वारा दिल्ली पहुंची थी—नन्हें ने ही उसे पालम एयरपोर्ट पर रिसीव किया था—वैसे तो मोना के लिए पहले से ही एक फाइव स्टोर होटल में सूइट बुक था मगर उसने फाइव स्टार होटल के स्थान पर बसेसर राम जी के घर पर ही रहने की इच्छा जाहिर की थी।

सबके लिए यह एक आश्चर्य की बात थी—मगर फिर भी नन्हें की तो जैसे मौत ही आ गई—चूंकि मोना अब उनके घर पर रह रही थी मगर उसका सामान होटल में ही था इसलिए वहां रहने की जिम्मेदारी नन्हें के ही कन्धों पर आ पड़ी थी—फाइव स्टार होटल के तौर तरीके उसी को ही पूरी तरह से मालूम थे ना।

मगर नन्हें तो इस बात को ख्वाब में भी नहीं सोच सकता था कि इस होटल में एक रात गुजारने के साथ ही उसकी जिन्दगी इस तरह करवट बदल लेगी कि वह सोच भी नहीं सकेगा कि ये सब क्या—क्यों और कैसे हो गया। घटना बहुत छोटी सी मगर महत्वपूर्ण थी।

हुआ यह था उस होटल में रात गुजारने के बाद नन्हें सुबह जब शाही अंदाज में उठा था तो उसे पलंग पर ही तकिए के नीचे एक कंगन मिला था—कंगन देखने में तो काफी खूबसूरत और चमक लिए हुए था मगर नन्हें ने यही सोचा था कि अगर कंगन असली सोने का होता तो मोना उसे इस तरह लापरवाही से छोड़कर ही क्यों जाती—अलमारी में लाक करके जाती [illegible] [illegible] अपनी कलाई में ही पहने रखती।

और इसी सोच के साथ नन्हें को शरारत सूझी [illegible] [illegible] कंगन को क्यों ना असली सोने का ही बनाकर [illegible]

"तो अब ये उस लड़के से शादी के लिए साफ साफ इन्कार कर रही है—इन्कार भी क्या रही है जी सरासर बगावत करती दीख रही है...।"

"ये-ये आप क्या कर रहे हैं बसेसर राम जी—कोई तो वजह होगी जी...।"

"इससे बढ़कर और क्या वजह हो सकती है अश्वनी बेटे कि ये रिश्ता बड़की के इसी नाकारा बाप बसेसर राम ने तलाश है—और जब इस घर में बसेसर राम ही किसी को पसन्द नहीं तो..."

"आप तो हमारे स्वीट स्वीट फादर हो जी—एक दम सहगल डुप्लीकेट—हां वो क्या है—जब थोड़ी इगलिंश गले से नीचे उता लेते हो ना तभी थोड़े से नमकीन हो जाते हो आप...। हां वै बड़की का रिश्ता भी आपने कहां सन्तो चाची ने सुझाया थ जी—आपने तो बस उस सुझाव पर ऐसी मोहर ठोकी कि...।"

"क्यों रे लल्लू—क्या खराबी है उस लड़के में—जो ह अपना इरादा बदल लें...।"

"देखो बापू—लड़का तो कहा मत करो उसे—वो तो पू आदमी था—फुल एण्ड फिल मैन...।"

"और बसेसर राम जी जहां तक मेरी भी थोड़ी बहु जानकारी की बात है महेन्द्र नाम के उस आदमी की चाहत दू शादी की है—पहले भी तीन तीन बच्चे हैं उसके...।"

"तू...तुम्हें यह सब बातें कैसे मालूम अश्वनी बे

"जिस तरह आपने आज पहली ही मुलाकात में समझा—उसी तरह आपके परिवार वाले भी मुझे रहे हैं बसेसर राम जी...।"

खामोश रहे बसेसर राम—ना जाने

"आप की बड़की यानि गुणवंती करके कोई अपराध तो नहीं कर रहीं व अधिकार है—और हां आप गुणवंती

करना चाहती है। टोनी ने ही मंझली को बड़े-बड़े होटलों के तौर तरीके सिखाए—वहां बैठना—खाना पीना—वहां प्रयोग किए जाने वाले अंदाज—सभी कुछ तो टोनी ने सिखाया उसे।

और टोनी ने ही उसे सेठ नरेन्द्र केसरी उर्फ निक्का से मिलवाया—केसरी उर्फ निक्का विगड़ा हुआ रईस था—घर में पत्नी होते हुए भी जवान खूबसूरत लड़कियों पर नजर रखने वाला रईस—वैसे तो उसके पास धन कमाने के लिए कितने ही काले धन्धे थे और इन्हीं काले धन्धों से कमाए काले धन का उपयोग वह फिल्म बनाने में करना चाहता था।

निक्का को पहली निगाह में तो रूपा बेहद साधरण ही लगी मगर फिर टोनी की बातों में आकर उसे लगा कि वह रूपा को अपनी फिल्म में बतौर हीरोइन ले सकता है—और उसने रूपा को इस सम्बन्ध में हल्का सा संकेत भी दे दिया।

इधर-मोना भारत में क्या आई—भारत की होकर रह गई—भारत बेहद पसन्द आया था उसे—और बसेसर राम के परिवार से तो वह चन्द एक दिनों में ही बेहद घुलमिल गई थी—परिवार के ही एक सदस्य की तरह। हां—मोना के पिता विलयम हैरिस सेठ किशोरी लाल के अच्छे दोस्तों में से थे—सेठ किशोरी लाल को जब यह पता चला कि मोना भारत आई हुई है और यहीं दिल्ली में जनता कालोनी के एक साधारण से परिवार के बीच ठहरी हुई है तो उन्हें आश्चर्य तो जरूर हुआ मगर उन्होंने तुरन्त ही मोना को आमंत्रित करते हुए अपनी कार को ड्राइवर सहित वहां भेजा।

सेठ किशोरी लाल ने मोना को जब कामिया से मिलवाया तो कामिया और मोना में जल्दी से अच्छी मित्रता हो गई—और जब मोना ने कामिया के हाथ में सोने का कंगन देखा तो चौंक उठी और कह ही उठी कि बिल्कुल ऐसा ही कंगन उसके पास भी है।

और जब मोना ने किशोरी लाल और कामिया को अपना होटल का एड्रेस दिया तो दोनों ही चौंक पड़े—क्योंकि उनके हिस्

सिर्फ आर्शीवाद ही चाहिए...।"

अभी भी समझ नहीं पा रहे थे वसेसर राम कि क्या कहें और और क्या ना कहें—और इससे पहले वह कुछ कह पाते—दरवाजे पर खड़े सब सुनते दादा जी ने आगे बढ़कर अश्वनी के हाथों को थाम लिया।

"तुमने हमें उबार लिया अश्वनी बेटे...।" बस इतना ही कह सके दादा जी।

"हमें तो अभी तक कुछ कहने के लिए शब्द ही नहीं मिल प रहे अश्वनी बेटे...।"

"कुछ कहने की जरूरत भी क्या है वसेसर राम जी—मेरी तरफ से तो आप बात पक्की समझिए—हां इस दुनिया में अगर मेर कोई है तो मेरे चाचा जी ही है—मैं उन्हें चिट्ठी डाल देता हूं—वैसे मुझे पूरा यकीन है कि उन्हें मेरे चुनाव पर खुशी ही होगी—मग फिर भी एक बार वह गुणवंती जी को देख लेते तो...।"

"हां-हां क्यों नहीं बेटे-ये तो बहुत अच्छी बात है कि तु अपने बड़े बूढ़ों को इतना मान देते हो—इसी बहाने हम भी दर्श कर लेंगे उनके...।" दादा जी अश्वनी की पीठ पर स्नेह भरा हा रखते हुए बोले।

"अच्छा तो अब मुझे इजाजत दीजिए...।"

"अरे—ऐसे बिना मुंह मीठा किए ही चले जाओगे बे जा रे नन्हें—जा दौड़कर बरफी का एक डिब्बा तो ले आ...।

"नहीं-अभी नहीं वसेसर राम जी—चाचा जी को अ दीजिए—फिर चाहे बरफी के साथ कुछ और भी मंग लीजिएगा...।"

और फिर उठ खड़ा हुआ था डाक्टर अश्वनी—दरवाजे दरार से उसे एक टक देखती हुई बड़की की आखों में आंसू भ चले गए थे—ना जाने किस सोच के साथ।

□□□□

पहले किसी से हुई तो कामिया से ही हुई मगर जब वह कामिया को देखते ही पहले की तरह चहक नहीं सका—उठा हुआ सिर झुकता चला गया—अपने अपराध का बोध था उसे।

कामिया ने भी उससे चन्द शब्दों की औपचारिक बात की—सहज भाव में ही—बिना किसी नाराजगी के—और इससे पहले कि यह बातचीत आगे बढ़ पाती—वहां सेठ किशोरी लाल आ गए।

सेठ किशोरी लाल ने वहां आते ही कामिया को वहां से जाने का संकेत दिया और कामिया के जाने के बाद उस हाल नुमा ड्राइंगरूम में सेठ किशोरी लाल और नन्हें ही आमने सामने थे—अकेले।

"सेठ किशोरी लाल जी मैं...।"

"एक मिनट मिस्टर चन्द्र प्रकाश उर्फ नन्हें—उर्फ ना जाने क्या क्या...।"

"सर मैं...।"

"तुम क्या...। तुम हो ही क्या—बच्चे हो हमारे सामने—और बच्चे जानते हो तुम तुम्हें तुम्हारे अपराध की क्या सजा मिल सकती है—हम धोखाधड़ी और चार सौ बीसी के इल्जाम में जेल की सलाखों के बीच में कैद करवा सकते हैं तुम्हें...।"

"किशोरी लाल जी—मैं बहुत शार्मिंदा हूं...।"

"मगर सिर्फ शार्मिंदा होने से तो तुम्हारा अपराध नहीं धुल पाता मिस्टर नन्हें...।"

"सर...सर आप जो कहें—मैं वही करने को तैयार हूं—या फिर आप जो भी सजा चाहें—दे सकते हैं मुझे...।" सिर झुकाए हुए ही बोला था नन्हें।

"नहीं—अगर हमने तुम्हें सजा ही देनी होती तो उसी वक्त दे देते—जिस वक्त हमें तुम्हारी इस हरकत का पता चला—और हमारी सजा देने की हालत में इस वक्त तुम यहां नहीं जेल सलाखों के पीछे होते...।"

में दिया जाए और अपनी इस योजना को कार्य रूप देने के लिए उसने एक अच्छा खासा ड्रामा किया।

कामिया के पिता सेठ किशोरी लाल के एक परिचित सरदारी लाल विदेश में रहते थे नन्हें सरदारी लाल के दोस्त का वेश बनाकर कामिया से मिला—और कामिया वेश बदले हुए नन्हें से यकीनन प्रभावित हुई तभी तो उसने नन्हें को अपने घर पर आमंत्रित किया और हर स्थिति का पूरे आत्मविश्वास के साथ सामना करने वाला नन्हें अपने वेश बदले रूप में सेठ किशोरी लाल के सामने भी जा पहुंचा।

सेठ किशोली लाल तो चेहरे पढ़ने में माहिर थे—उन्हें तुरन्त ही नन्हें की बातों से किसी धोखे की आशंका हुई मगर जब उन्हें पता चला कि नन्हें ने कामिया को सरदारी लाल के द्वारा भेजा सोने का कंगन दिया है और वह वेश कीमती कंगन वास्तव में ही सोने का है तो उन्हें नन्हें पर कोई शक नहीं रहा।

मगर नन्हें को तो यह बात पहली बार पता चली कि मोना का वह कंगन जो उसने कामिया को दे डाला है—वास्तव में ही असली सोने का है—नन्हें के चेहरे का तो रंग ही उड़ गया—कामिया से कंगन वापिस लेने की तो हिम्मत ही नहीं थी उसके पास—उसकी पोल जो खुल जाती।

इधर मंझली त्रिभुवन पांडे उर्फ टोनी से क्या मिली—उसके तो पर ही लग गए—टोनी की जान पहचान—उसका जिन्दगी को जीने का अंदाज—उसकी बड़ी बड़ी बातें—मंझली तो जीते जागते भी ख्वाब देखने लगी।

त्रिभुवन ने मंझली को समझाया कि अगर उसे आकाश की ऊंचाईयों को छुना है तो जनता कालोनी में रहते हुए भी वहां की इमेज से अपने आपको दूर रखना होगा। और इस नयी इमेज के हिसाब से मंझली बसेसर राम की बेटी नहीं—अपितु एक अमीर की इकलौती संतान थी—मसूरी में पली पढ़ी बढ़ी हुई लाखों करोड़ों की मालकिन मिस रूपा—वह रूपा जो फिल्मों में तो बस शौकिया काम

"आपने मुझे माफ कर दिया—मेरे लिए इतना ही बहुत है—सच पूछिए तो सर—आपका अहसान जिन्दगी भर नहीं भुला पाऊंगा मैं—अच्छा अब मैं चलूं सर...।"

"हां—जाना तो तुम्हें होगा ही मिस्टर चन्द्र प्रकाश—मगर एक बात तो हम कहना भूल ही गए...।"

"जी...।"

"कामिया ने हमसे आज तक कोई भी बात नहीं छुपाई—तुम्हारी हर हरकत के बारे में जानकरी है हमारे पास—हमें तुमसे कहना है तो सिर्फ इतना ही कि आज के बाद तुम कभी भी कामिया से मिलने की कोशिश नहीं करोगे—अगर कामिया कभी तुम्हारे रास्ते में—तुम्हारे सामने आ भी गई तो तुम अपना रास्ता बदल लोगे...।"

"जी...।" बस इतना ही कह सका नन्हें—सिर झुकाए हुए।

"जाओ—अब तुम जा सकते हो—और हां—हमारी इस बात को मत भूलना कि हम तुम्हारी हर तरह से मदद करने को तैयार हैं—हां हम ड्राइवर से बोल देते हैं कि वह तुम्हें घर तक छोड़ आए।

सेठ किशोरी लाल का यह रूपअप्रत्याशित था नन्हें के लिए मगर फिर भी खामोश ही रहा था वह।

कुछ ही समय में सेठ किशोरी लाल की कीमती कार में समाया हुआ वह घर की तरफ बढ़ रहा था।

□□□□

अपनी आदत से मजबूर बसेसर राम जी का कसूर सिर्फ इतना ही था कि उन्होंने प्रीतम उस्ताद को अपना दोस्त समझकर उसके कुछ रुपये उधार ले लिए थे—प्रीतम उस्ताद मंझली को पूरी तरह से अपने काबू में रखना चाहता था इसीलिए उसने ये बसेसर राम को दिए भी थे—वरना तो...।

से उसी होटल के उसी सूइट नम्बर में उनके परिचित सरदारी लाल का दोस्त ठहरा हुआ था और—जब मोना ने कहा था कि वहां तो रोज रात को नन्हें सोता है तो कामिया क्षणभर में ही सब समझ गई—वह जान गई कि—यह कंगन उसे सरदारी लाल अंकल के दोस्त ने नहीं बल्कि नन्हें ने ही दिया है—अब चूंकि यह बात किशोरी लाल जी के सामने ही खुल गई थी तो उसने अपने पिता सेठ किशोरी लाल से कुछ भी छिपाना उचित नहीं समझा।

सब कुछ सुनने के बाद किशोरी लाल की मुख मुद्रा गंभीर हो गई—उनके आदेश पर कामिया ने मोना का कंगन तो तुरन्त ही वापिस कर दिया और साथ ही मोना से यह भी कहा कि वह नन्हें से कहे कि उसका भेद खुल चुका है और उसे सेठ किशोरी लाल से तुरन्त ही मिलना है।

मोना ने नन्हें की इस गंभीर हरकत को उसका बचपना समझकर ही भुला देना उचित समझा और साथ ही सेठ किशोरी लाल का संदेश भी नन्हें तक पहुंचा दिया।

नन्हें जो अभी तक इसी बात को लेकर बेहद परेशान था—अब उसकी जान में जान आई मोना के सामने तो उसने अपने आपको शर्मिंदा महसूस किया ही—साथ ही अब उसे कामिया और सेठ किशोरी लाल से मिलकर अपनी भूल के लिए अनायास ही क्षमा याचना करनी थी। वैसे यह सोचकर तो उसने चैन की सांस ली ही थी कि सेठ किशोरी लाल उसके खिलाफ कोई गंभीर कदम नहीं उठाएंगे अगर उन्होंने उसे उसके अपने अपराध की सजा ही देनी होती तो पुलिस के द्वारा आराम से गिरफ्तार करवा देते उसे। मगर ऐसा कुछ नहीं होने वाला—इसी सोच ने बल दिया नन्हें को।

इस घटना के दूसरे ही दिन वह किशोरी लाल से मिलने उनकी कोठी पर जा पहुंचा—मगर आज वह अपने असली रूप में था—पूरी तरह से नन्हें के सही रूप में—काफी डरा सहमा हुआ सा नन्हें...।

सेठ किशोरी लाल के घर पर अगर उसकी मुलाकात सबसे

थी...।"

"तब...। तब फिर...।"

"इसे सिर्फ संयोग ही कहा जा सकता है कि जिनके साथ गुणवंती जी की यह बात हुई—वह मेरे चाचा जी थे—वैसे इस बात से हम सब अंजान थे—मगर जब मैंने चाचा जी को चिट्ठी लिखकर आप सबके बारे में विस्तार से बताया तो उनका यह जवाब आ गया कि उन्हें यह रिश्ता मन्जूर नहीं—क्योंकि गुणवंती जी और उनका सामना पहले ही हो चुका है...।"

"तुम एक बार उन्हें सच्चाई बताने की कोशिश तो करो बेटे—बड़की उनसे अपनी भूल के लिए माफी भी मांग लेगी...।"

"नहीं बापू—मैंने जब कोई अपराध ही नहीं किया तो माफी किस बात की।" बड़की पहली बार ही बोली मगर दृढ़ स्वर में।

"नहीं गुणवंती जी—मैं आपको क्षमा मांगने के लिए कह भी नहीं रहा—दरअसल गलती ना चाचा जी की थी और ना ही आपकी—उन्होंने जो कहा था वह दहेज के लालच की नीयत से नहीं कहा था और आप पहले ही बहुत कुछ सहन कर चुकी थी—खैर मैं खुद चाचा जी से बात करके उन्हें समझाने की कोशिश करूंगा—और इसीलिए मैं आज ही बस से उनके पास जा रहा हूं...।"

"बस बेटा—अब तुम ही कुछ कर सकते हो...।" बसेसर राम ने अश्वनी का हाथ पकड़ लिया। "हमारी इज्जत तो अब तुम्हारे ही हाथ में है बेटे...।"

"अरे—आप कैसी बात कर रहे हैं बसेसर राम जी—गुणवंती जी को खो देने की बात तो मैं सोच भी नहीं सकता...।"

और अश्वनी की इस बात से काफी बल मिला सभी को—हां सभी के मन में यह बात जरूर थी कि काश बड़की उस दिन जटा शंकर जी के सामने खामोश ही रहती—तब...।

मगर बड़की तो सिर झुकाए हुए ना जाने क्या ही सोच रही थी—उसके मन की बात तो सिर्फ वही जान

नन्हें खामोश ही रहा—सिर झुकाए हुए—कहता तो कहता भी क्या।

"देखो नन्हें—सच पूछो तो हमें तुमसे कोई भी शिकायत नहीं...।"

"जी...।" झटके से चेहरा उठाया नन्हें ने चकित स किशोरी लाल की तरफ देखता रह गया था।

"हां बरखुरदार—हम जानते हैं तुम गरीब हो मगर बेह होशियार भी हो—पढ़ने लिखने में ही नहीं हर काम में काफ तेज—तुम्हारी पूरी रिपोर्ट है हमारे पास—तुम हाथ बढ़ाकर चां को छू लेने की चाह रखते हो ना...।"

नन्हें खामोश ही रहा पूर्ण वत।

"जिस दौर से आज तुम गुजर रहे हो मिस्टर चन्द्र प्रका उर्फ नन्हें—जिन्दगी के उसी दौर में कभी हम भी थे।"

"आप...प...।"

"हां—हम अपनी ही बात कर रहे हैं—तुम्हारी ही तर गरीब मगर होशियार थे हम—हर काम में अव्वल—आगे बढ़ की तमन्ना हमारे रोम रोम में बसी हुई थी मगर आगे बढ़ने का मौ नहीं मिलता था—और हमारे नसीब ने जब हमें मौका दिया तो त खुद ही देख लो—कहां से कहां आ पहुंचे हैं—हम एक बार ऐसे अ बढ़े कि आज तक पीछे मुड़ कर नहीं देखा...।"

"सर आप...।"

"जाओ—हमने तुम्हें माफ कर दिया—सिर्फ माफ ही न किया बल्कि तुम्हारे सिर पर अपना हाथ भी रख दिया...।"

"जी...। जी मैं समझा नहीं...।"

"जल्दी क्या है मिस्टर चन्द्र प्रकाश—समझ जाओगे—और एक बार समझ जाओगे तो सारी जिन्दगी भी सु जाएगी तुम्हारी—हां तुम्हें जब भी किसी मामले में हमारी मदद जरूरत पडे—निसंकोच चले आना हम तुम्हारी हर तरह से म करेंगे...।" अपनेपन से भरा हुआ स्वर था सेठ किशोरी लाल

कुछ बोला नहीं वह धूर्त प्रीतम उस्ताद—बस खामोशी से मंझली के तेवर देखता रह गया।

"तुम्हारे हमारे ऊपर तीन हजार चार सौ पहचत्तर रुपये ही निकलते हैं ना—मैं लाई हूं रुपये ये देखो।" कहते हुए मंझली ने हाथ में पकड़ा हुआ पर्स खोलकर प्रीतम उस्ताद को रुपयों की झलक दिखाई और फिर आगे बोली।

"मगर इससे पहले मुझे वह रसीद चाहिए जो तुमने मेरे बापू से लिखवा ली थी—और हां रकम वसूली की रसीद भी...।"

"मगर रूपा बेटी तुम...।"

"बस खबरदार जो अब मझे बेटी या कुछ और कहा चाचा ए बुजुर्गवार—फिर तुम्हारी बुर्जुगी का ख्याल नहीं करूंगी मैं।"

और मंझली के इस तीखे व्यंग पर अन्दर तक तिलमिला, उठा प्रीतम उस्ताद—पास ही बैठी हुई रेनूका से बोला।

"जाओ रेनुका—बसेसर राम वाली रसीद ले आओ—और एक खाली कागज और पैन भी...।"

और रेनुका ने प्रीतम उस्ताद के आदेश का यंत्रवत पालन किया—वह प्रीतम उस्ताद की पत्नी तो नहीं हां रखैल अवश्य थी।

प्रीतम उस्ताद ने खामोशी से दोनों रसीदें मंझली को दे दीं बसेसर राम के कर्ज की भी और रकम वसूली की भी—और फिर अपना खाली हाथ मंझली की तरफ बढ़ा दिया—"लाओ रुपये लाओ...।"

और मंझली ने रुपयों का वह पुलिंदा प्रीतम उस्ताद की तरफ बढ़ा दिया।

"अच्छी तरह से गिन लो प्रीतम उस्ताद—मैं नहीं

तो तुम्हारे चाचा आने वाले थे ना दिल्ली में—कल तो वह वड़की को देखने के लिए आने वाले हैं ना—तुम विल्कुल भी चिन्ता मत करो—हमने सव इंतजाम कर लिया है।"

"अव इन्तजाम का कोई फायदा नहीं दादा जी...।" किसी तरह कह ही उठा था अश्वनी।

"क्या...।"

सव अवाक् रह गए—एक टक अश्वनी की तरफ देखते हुए—हर दिल को अपनी धड़कने तेज होती जान पड़ीं—वस वड़की ही अपने आप पर पूरी तरह से काबू रखे हुए अश्वनी की तरफ एक टक देखती रही।

"जानते हो वेटा—ये तुम क्या कह रहे हो—तुमने तो खुद ही वड़की का हाथ मांगा था।" वसेसर राम का स्वर लड़खड़ा उठा।

"गुणवंती जी को पाना तो अभी भी मेरा ख्वाव है वसेसर राम जी—मेरी जिन्दगी में गुणवंती जी जैसी नारी आए इससे वड़ी वात हो सकती है मेरे लिए...।"

"तव...तव फिर...।"

"चाचा जी आपकी वड़की को एक वार पहले भी देख चुके हैं वसेसर राम जी...।"

"ये...ये तुम क्या कह रहे हो वेटे—ऐसा भला किस तरह हो सकता है...।"

"मेरे चाचा जी का नाम जटा शंकर है दादा जी...।"

"क्या...।" वुरी तरह से चौंक पड़े वसेसर राम जी—"जो वड़की को जयपुर से या कानपुर देखने के लिए आए थे...।"

"जी हां—और जटा शंकर जी के साथ् वड़की की क्या वात हुई ये वड़की जी मुझे पहले भी वता चुकी हैं...।"

"वेटे—तुम तो जानते ही हो—वड़की उस वक्त...।"

"नहीं वसेसर राम जी—मैं यह नहीं कह रहा कि गुणवंती जी ने जटा शंकर जी को कुछ कहकर कोई गलत कदम उठया—मैंने तो खुद ही गुणवंती जी की इस साइस के लिए तारीफ की

कुछ बोला नहीं वह धूर्त प्रीतम उस्ताद—बस खामोशी से
झली के तेवर देखता रह गया।

"तुम्हारे हमारे ऊपर तीन हजार चार सौ पहचत्तर रुपये ही निकलते हैं ना—मैं लाई हूं रुपये ये देखो।" कहते हुए मंझली ने हाथ में पकड़ा हुआ पर्स खोलकर प्रीतम उस्ताद को रुपयों की झलक दिखाई और फिर आगे बोली।

"मगर इससे पहले मुझे वह रसीद चाहिए जो तुमने मेरे बापू से लिखवा ली थी—और हां रकम वसूली की रसीद भी...।"

"मगर रूपा बेटी तुम...।"

"बस खबरदार जो अब मझे बेटी या कुछ और कहा चाचा ए बुजुर्गवार—फिर तुम्हारी बुर्जुगी का ख्याल नहीं करूंगी मैं।"

और मंझली के इस तीखे व्यंग पर अन्दर तक तिलमिला, उठा प्रीतम उस्ताद—पास ही बैठी हुई रेनूका से बोला।

"जाओ रेनुका—बसेसर राम वाली रसीद ले आओ—और एक खाली कागज और पैन भी...।"

और रेनुका ने प्रीतम उस्ताद के आदेश का यंत्रवत पालन किया—वह प्रीतम उस्ताद की पत्नी तो नहीं हां रखैल अवश्य थी।

प्रीतम उस्ताद ने खामोशी से दोनों रसीदें मंझली को दे दीं बसेसर राम के कर्ज की भी और रकम वसूली की भी—और फिर अपना खाली हाथ मंझली की तरफ बढ़ा दिया—"लाओ रुपये लाओ...।"

और मंझली ने रुपयों का वह पुलिंदा प्रीतम उस्ताद की तरफ बढ़ा दिया।

"अच्छी तरह से गिन लो प्रीतम उस्ताद—मैं नहीं

वही।

□□□□

"ओह—तो यह वात है...।" त्रिभुवन पांडे उर्फ टोनी
मुखमुद्रा गंभीर हो उठी।

"मैं सच कह रही हूं टोनी—अव इस तरह हमारा मिल
किसी भी तरह संभव नहीं।"

"और इसमें सिर्फ प्रीतम उस्ताद का हाथ है— उसने तुम्ह
पिता जी को उधार की आड़ में डराया धमकाया ना...।"

"हां...।" स्वीकार किया मंझली ने—"और
टोनी—प्रीतम उस्ताद ने जो रकम वापू को दी है—वह भी तो व
नहीं—सव कुछ जोड़ जाड़ कर तीन हजार चार सौ पहचत्तर रु
वता रहा है वह...।"

"जव तुम हीरोइन वन जाओगी ना—तव यह रकम तु
वेहद मामूली लगेगी।"

"सच टोनी...।"

"जी हां—मिस रूपा—पता नहीं उस वक्त आपको यह
चिन्तक टोनी याद रही रहेगा या नहीं—फिलहाल टोनी इस व
आपको प्रीतम उस्ताद के चंगुल से निकालने के लिए आपकी
पूरी मदद करेगा—चिन्ता मत करो रूपा—हम शाम तक प्री
उस्ताद का सारा कर्ज अदा कर देंगे...।"

"ये—ये तुम सच कह रहे हो टोनी...।" रूपा को जैसे यव
ही नहीं हुआ।

"क्या वात है रूपा—आज तुम्हें टोनी की हर वात झूठ
लग रही है—वैसे सच पूछो तो तुम्हारी मदद में नहीं केसरी कर र
है—केसरी यानि कि निक्का...।"

"मगर...।"

वम्बई को है—इस शहर को नहीं—मगर तुम हमेशा यही कहती रहीं कि तुम्हारे घरवाले इजाजत नहीं देंगे...।"

"मगर अव किसी की भी इजाजत की जरूरत भी नहीं—यहा रही तो इसी तरह से घुटघुट कर मर जाऊंगी या फिर कोई प्रीतम उस्ताद मार डालेगा मुझे—चलो टोनी वम्बई ही ले चलो मुझे—आज ही और इसी वक्त ही—प्लीज टोनी...।"

और टोनी ने मुस्कराते हुए अपनी मोटर साईकल को आगे वढ़ा दिया—डरी सहमी हुई मंझली उसकी कमर में वांह फंसाते हुए उससे चिपक सी गई थी—निसन्देह असुरक्षा की भावना के कारण।

□□□□

"चाचा जी आप...।"

"देखो अश्वनी वेटे—हमने तुमसे ज्यादा दुनिया देखी है—हमने तुम्हें जो कुछ चिट्ठी में लिखा था उस वात में कोई भी फेर वदल संभव नहीं...।"

"मगर चाचा जी...।"

"हमने जो वात एक वार कह दी—वही वात वार वार कहेंगे—हां तुम्हें याद होगा—दिल्ली से इधर आते समय हमने तुमसे पूछा भी था कि तुम उसकी इतनी तरफदारी क्यों कर रहे हो अश्वनी—अगर तुम उसे जानते और चाहते हो—और उससे शादी करना चाहते हो तो हम तुम्हारे रास्ते में आड़े नहीं आएंगे...।"

"उस वक्त मैं नहीं जानता था चाचा जी कि आप गुणवंती के वारे में वात कर रहे हैं। और फिर आपने सिर्फ इतना ही कहा था कि आप जनता कालोनी में रहने वाले एक—गरीव परिवार की लड़की देखने गए थे अता पता तो भी कुछ नहीं वताया था ना आप...।"

वही।

□□□□

"ओह—तो यह वात है...।" त्रिभुवन पांडे उर्फ टोनी की मुखमुद्रा गंभीर हो उठी।

"मैं सच कह रही हूं टोनी—अव इस तरह हमारा मिलना किसी भी तरह संभव नहीं।"

"और इसमें सिर्फ प्रीतम उस्ताद का हाथ है— उसने तुम्हारे पिता जी को उधार की आड़ में डराया धमकाया ना...।"

"हां...।" स्वीाकर किया मंझली ने—"और फिर टोनी—प्रीतम उस्ताद ने जो रकम वापू को दी है—वह भी तो कम नहीं—सव कुछ जोड़ जाड़ कर तीन हजार चार सौ पहचत्तर रुपये वता रहा है वह...।"

"जव तुम हीरोइन वन जाओगी ना—तव यह रकम तुम्हें वेहद मामूली लगेगी।"

"सच टोनी...।"

"जी हां—मिस रूपा—पता नहीं उस वक्त आपको यह शुभ चिन्तक टोनी याद रही रहेगा या नहीं—फिलहाल टोनी इस वक्त आपको प्रीतम उस्ताद के चंगुल से निकालने के लिए आपकी पूरी पूरी मदद करेगा—चिन्ता मत करो रूपा—हम शाम तक प्रीतम उस्ताद का सारा कर्ज अदा कर देंगे...।"

"ये—ये तुम सच कह रहे हो टोनी...।" रूपा को जैसे यकीन ही नहीं हुआ।

"क्या वात है रूपा—आज तुम्हें टोनी की हर वात झूठ क्यों लग रही है—वैसे सच पूछो तो तुम्हारी मदद में नहीं केसरी कर रहा है—केसरी यानि कि निक्का...।"

"मगर...।"

"मगर क्या रूपा—अपनी फिल्म के लिए बतौर हीरोइन साइन कर रहा है तुम्हें—साइनिंग एमाउंट भी नहीं देगा क्या—ये देखो पूरे पांच हजार रुपये दिए हैं उसने—प्रीतम उस्ताद का कर्ज उताने के बाद भी हमारे पास सवा हजार रुपये और बचेंगे।"

अब तो अविश्वास की कोई बात ही नहीं थी—टोनी की तरफ देखती रह गई थी वह—टोनी के हाथ में पकड़े हुए रुपये इस बात का खुला सबूत थे कि अब शीघ्र ही उसकी जिन्दगी का सबसे बड़ा ख्वाब पूरा हो जायेगा।

□□□□

अवाक् रह गया नन्हें।

उसने तो ख्वाब में कभी नहीं सोचा था कि यहां इस तरह कामिया से सामना हो जाएगा उसका...। कहां तो वह कामिया से मिलने के अवसर तलाशता रहता था और कहां अब कामिया सामने खड़ी थी और वह हतप्रभ सा खड़ा था।

"कामिया जी आप...।"

"पहले हमारी जान पहचान भी नहीं थी मिस्टर चन्द्र प्रकाश और उस वक्त आप हमें सिर्फ कामिया कह कर ही बुलाया करते थे—और आज तो हम भले ही एक दूसरे गहरे परिचित ना हों—मगर अपरिचित भी तो नहीं हैं...।"

"कल की और आज की बात में बहुत अन्तर है कामिया जी...।"

"नहीं—हमारी निगाहों में तो कोई भी अन्तर नहीं फिर सच पूछिए तो कल तक भी हमें आपकी शरारतें बुरी नहीं लगी थीं और आज तो...।"

चाहती—हमारा तुम्हारा कोई भी हिसाब किताब बाकी रहे...।"

रुपयों को उसी तरह बिना गिने ही रेनुका को थमाता हुआ मुस्करा उठा प्रीतम उस्ताद "हिसाब किताब तो मैं भी बराबर कर लेना चाहता हूं रूपा रानी...।" जहरीली मुस्कराहट के साथ बोला वह और दूसरे ही क्षण उसने कमर में छिपा हुआ एक लम्बा धारदार चाकू खींच लिया।

"आई...अ...।" फटी फटी आंखों के साथ प्रीतम उस्ताद को देखते हुए भय से चीत्कार कर उठी वह। और इससे पहले कि प्रीतम उस्ताद के उठे हुए हाथ से वह चाकू मंझली के सीने में उतर पाता—रुपयों को जमीन पर गिराते हुए तीव्रता से चाकू के फल को दोनों हाथों के बीच भींच लिया रेनुका ने।

"छोड़ो—छोड़ दो रेनुका छोड़ दो—हिसाब किताब चुका लेने दो मुझे...।"

"उफ—नहीं प्रीतम नहीं—पागल हो गए हो क्या—और तुम भी क्या देख रही हो—जाओ भाग जाओ यहां से...।"

और मूरत बनी थर थर कांपती रूपा को होश आ गया—मुड़कर दौड़ते कदमों के साथ कमरे से बाहर निकल गई वह।

रेनुका अभी भी चाकू के फल को हाथों में भींचे हुए थी—हथेलियों से ताजा गर्म लहू बह रहा था।

दूसरी तरफ—अपनी जान बचाकर दौड़ती हुई मंझली बाहर सड़क पर पहुंची थी—जहां टोनी मोटर साईकल स्टार्ट किए हुए उसका इंतजार कर रहा था।

"क्या बात है रूपा—बहुत घबराई हुई लग रही हो—काम हो गया ना...।"

"हां टोनी हां—काम तो हो गया—मगर मुझे यहां से ले चलो—अब यहां और नहीं रहना चाहती मैं—ना जनता कालोनी के फ्लैट में और ना ही इस शहर में...।"

"मैं तो तुम्हें हजार बार कहता रहा यार—तुम्हारी जरूरत

"आगे की कहानी भी फिल्मों की तरह ही है मिस कामिया—जब मैंने ब्रीफकेस को पूरी तरह से खाली देखा तो मैंने किशोरी लाल जी की बात मानने में कोई हर्ज नहीं समझा—वैसे भी आपका पापा का रूख बता रहा था कि मुझे उनकी बात माननी ही पड़ेगी...।"

खामोश ही रही कामिया—नन्हें को अपनी बात पूरी करने देने की सोच के साथ।

"और शाम को जब उस ब्रीफकेस को उस स्थान पर छोड़ देना चाहा—जहां का आदेश मुझे मिला था—तो वहां पुलिस के द्वारा घेर लिया गया मैं...।"

"पुलिस...।" चौंक उठी कामिया—चेहरे पर हैरत के भाव भी तैरते चले गए।

"जी हां मिस कामिया—और पुलिस स्टेशन में जब मुझ पर टार्चर किया गया—तब पहली बार पता चला मुझे कि उस ब्रीफकेस की सतहों में कोई नशीला पाऊडर भरा गया था...।"

"हमें तो अभी भी आपकी बात पर यकीन नहीं हो पा रहा है मिस्टर चन्द्र...।"

"मगर मैंने यह सब कुछ अपने तन और मन दोनों पर भोगा है मिस कामिया—आप जानती हैं पुलिस को खिला पिला कर मुझे रिहा करवाने वाली हस्ती भी आपके पिता सेठ किशोरी लाल जी ही थे...।"

"मगर यह सब कुछ क्यों किया पापा ने...।" जैसे स्वयं से ही पूछा कामिया ने।

"यह बात तो आपके पापा ही बेहतर जान सकते हैं मिस कामिया—मैं जानता हूं तो सिर्फ इतना ही कि वह चाहते हैं कि मैं उनके साथ काम करूं—और मैं इन काले रास्तों पर चलने की सोच भी नहीं सकता—मेरे ख्याल से तो इसीलिए ये सारा जाल फैलाया उन्होंने—जिससे कि ना तो मैं भविष्य में उनके किसी आदेश पर अमल करने से इन्कार कर सकूं और...।"

"चलो ऐसा ही सही—अब तो सारी तस्वीर तुम्हारे सामने आ गई है ना अश्वनी बेटे और ये रिश्ता तुम्हारे चाचा जी को मन्जूर नहीं...।"

"चाचा जी इसमें उस लड़की यानि गुणवंती का भी कोई कसूर नहीं...।"

"हां कसूर तो हमारा ही था बेटे जो रंजन के कहने पर हम उनके घर जा पहुंचे ....।"

"ऐसी बात नहीं है चाचा जी—वह बहुत अच्छी लड़की है—दूसरों की बात तो नहीं कहता मगर आपके अश्वनी की जिन्दगी को बहुत ही खूबसूरत बना देगी वह—और फिर चाचा जी।"

"बस-अब रहने दो अश्वनी बेटे—तुम अगर गुणवंती से ही शादी करना चाहते हो तो हम कौन होते हैं तुम्हें रोकने वाले...।"

"नहीं-नहीं—ऐसा मत कहिए चाचा जी...।" बुरी तरह से तड़प उठा अश्वनी—"आप खुद ही जानते हैं कि आपके सिवा इस भरी दुनिया में मेरा और कोई भी नहीं...।"

"तब फिर ये बात अच्छी तरह से जान लो अश्वनी बेटे—आज तुम उस दो राहे पर आ खड़े हुए हो जहां एक ओर वह लड़की गुणवंती है और दूसरे रास्ते पर तुम्हारा चाचा जटा शंकर चला तो एक ही रास्ते पर जा सकता है ना—चाहे जिसे चुन लो—ये अब तुम्हारे हाथ में है...।"

अश्वनी सन्नाटे की सी हालत में चाचा जटा शंकर की तरफ देखता रह गया—दिलो दिमाग में एक बवंडर सा उठ खड़ा हुआ था।

□□□□

सब बातें इतनी आसान नहीं है-जितनी तुम समझ रही हो- फिल्म लाइन में एक छोटी सी बात ही ना जाने कितने दिन खींच कर ले जाती है—अब ऐसा तो संभव नहीं है ना कि चार टाप प्रोड्यूसर तुम्हें बिना देखे हुए ही साइन कर लें और चालीस पचार हजार रुपये साइनिंग एमाउंट वसूल करके तुम अपने घरवालों का मुंह बंद कर सको। ये मत भूलो कि तुम्हारे घरवालों को पता चल चुका है कि तुम और टोनी दोनों मेरे साथ हो—किशोरी लाल खुद इस बारे में पूरी छानबीन कर रहा है...।"

"आप सेठ किशोरी लाल की ही बात कर रहे हैं ना...।"

"तुम कैसे ज़ानती हो किशोरी लाल को...।" चौंकते हुए नरेन्द्र केसरी ने मंझली की तरफ देखा।

"मैं तो नहीं मगर मेरा भाई नन्हें बहुत अच्छी तरह से जानता है...।"

"ओह तो किशोरी लाल ये सारी छानबीन तुम्हारे भाई नन्हें के कारण ही कर रहा है...।"

"हां शायद—मगर मैं वापिस नहीं जाना चाहती केसरी जी—जनता कालोनी के उस फ्लैट में घुटन महसूस होती है मुझे।"

"और इस फाइवस्टार होटल में स्वर्ग का सुख मिलता है तुम्हें।" मुस्करा उठा केसरी—अजीब सी मुस्कराहट—"वैसे रूपा कल तक तो तुम अपने आपको बहुत अमीर खानदान की इकलौती वारिस बताती रही हैं—फिल्मों में तो तुम महज शौक के लिए काम करना चाहती हो ना...।"

क्या कहती मंझली—सिटपिटा सी गई।

"आप तो सारी असालयत जानते हैं ना मिस्टर केसरी—तब फिर इन सब बातों का क्या फायदा—और यह मत भूलिए कि रूपा के बम्बई भागने के किस्से के साथ आपका नाम भी जुड़ा हुआ है—अगर यह बात ज्यादा उछली तो इसके साथ ही आपका नाम भी उछलेगा और अगर इस तरह यह बात आपकी शक्की पत्नी के कानों में पड़ती है तो...।" टोनी पहली बार बोला।

"आज...।"

"अब ये शरारतें हमें कॉफी अच्छी लगने लगी है मिस्टर चन्द्र प्रकाश...।"

"नहीं नहीं—ऐसा मत कहिए आज वरना...।"

"वरना क्या...। लगता है हमारे पापा से डर गए आप—अ वह तो बड़े अच्छे स्वभाव के इन्सान हैं।"

"हां कामिया जी—स्वभाव अच्छा है—तभी तो उन्होंने माप कर दिया हमें—मगर...।"

"लगता है कल तक जो हमें चाहने का दावा करते र आप—वो झूठा था—एक फरेब था हमारी भावनाओं के सा खिलवाड़ करने की कोशिश कर रहे थे आप...।"

"ये बात सिर्फ नन्हें ही जान सकता है मिस कामिया औ नन्हें का दिल ही जान सकता है—हां रही आपके पापा की बात त आपको अपने पिता के अच्छे स्वभाव के बारे में तो पता है मग अपने पिता के काले धन्धे के बारे में नहीं पता...।"

"मेरे पापा का धन्धा काला है या सफेद—इस बारे में मु कोई भी जानकारी नहीं मिस्टर चन्द्र प्रकाश अगर किसी बात त जानकारी है तो वह इस बात की कि मेरे पिता इस शहर की बह बड़ी हस्ती हैं पापा के बिजनेस में कोई भी रूचि नहीं है मेरी...।

"रूचि मेरी भी नहीं थी मिस कामिया मगर आप इस बात पूरी तरह से अंजान होंगी कि कल ही आपके पिता सेठ किशो लाल ने मुझे एक बार फिर बुलवाया...।"

"आपको मिस्टर चन्द्र...।" चौंक उठी कामिया।

"जी हां मुझे ही बुलाया उन्होंने और बोले कि उन्होंने म मेरे अपराध के लिए जो माफी दी है—उसकी एवज में मुझे उन एक छोटा सा काम करना होगा—उनका एक खाली ब्रीफकेस ए विशेष जगह तक पहुंचाना होगा।"

"खाली ब्रीफकेस...। यकीनन बहुत मजेदार किस्सा मिस्टर चन्दर—बिल्कुल फिल्मों की तरह...।"

मिल सकेगा इस बात का केसरी को पूरा विश्वास था।

□□□□

केसरी का सोचना पूरी तरंह से सही था—तभी तो बसेसर राम जो कि अभी अभी नन्हें के साथ सेठ किशोरी लाल के घर से लौटे थे बहुत खुश थे—ऐसे जैसे सिर से सारा बोझ उतर गया हो।

"सच पूछो तो मुझे तो सेठ किशोरी लाल जी बड़े ही भले आदमी लगे—इतनी दौलत होने के बाद भी इतना अपनापनकम से कम आज के जमाने में तो देखने में नहीं आता और...।"

"देख बेटे बसेसर—सेठ किशोरी लाल जी कैसे आदमी हैं—ये तो उनसे मिलने पर ही जानूंगा—नन्हें पर भी इतने मेहरबान क्यों हैं—ये तो नन्हें ही जान सकता है—कुछ बताता भी तो नहीं ये लड़का—खैर तू तो ये बता बसेसर तूने भी फोन पर मंझली से बात की या नहीं...।"

"की कैसे नहीं जी—बिल्कुल की—बोली बापू मैं बिल्कुल ठीक हूं इधर और मैंने राजकुमार से शादी कर ली है—राजकुमार टोनी का ही नाम है जी—दो तीन फिल्मों की बात भी चल रही है मंझली की—कहती है जब दिल्ली जाऊंगी—शान से आऊंगी...।"

"शान और मान दोनों के साथ ही आए बसेसर—तभी अच्छा है—आजकल के बच्चे कहते कुछ हैं—करते कुछ हैं—कौन जाने उसने राजकुमार से शादी भी की है या...।"

"देखो बापू—आप हमेशा उल्टा तो सोचा मत करो—उसने मुझे फोन पर साफ साफ बोला है कि उसने राजकुमार से शादी कर ली है—और हां आपको अगर ज्यादा ही शक हो रहा है तो कल ही मंझली और राजकुमार की शादी के तस्वीरें आती होंगी—उन्हें देख लीजीएगा-तब तो यकीन हो जाएगा ना आपको...।"

"अरे जाने दे बसेसर—इन्हें तो तब भी नहीं होगा

"मैं आज ही बात करूंगी पापा से...।"

"अगर आप अपने पापा से बात करेंगी तो वह फौरन जान जाएंगे कि यह सब कुछ मैंने ही आपसे कहा है—और यह बात यह किसी भी स्थिति में सहन नहीं कर पाएंगे...।"

"मगर क्यों...।"

"क्योंकि आपके सामने मेरी हैसियत मखमल में टाट की सी है और वह कभी भी मुझ जैसे टाट और आप जैसे मखमल को आमने सामने भी नहीं सहन कर सकते...।"

"चन्द्र आप...।"

"अपनी एक भूल की मैं पहले ही बहुत बड़ी सजा भुगत चुका हूं मिस कामिया—आपको चाहा है ना मैंने—जमीन पर खड़े बौने की तरह हाथ उठाकर आकाश को छूने की कोशिश की है—अपनी इस गुस्ताखी के लिए और भी ना जाने क्या क्या भोगना होगा मुझे...।"

कुछ बोली नहीं कामिया—चन्द्र की टूटी हुई मानसिक स्थिति का अनुमान लगाते हुए वहीं खड़ी रही हत प्रभ सी।

"ओ.के. मिस कामिया—हो सके तो स्ट्रीट रोमिया समझकर ही भुला दीजिएगा मुझे—आपकी शान में जो भी गुस्ताखी हुई हो मुझसे—उसके लिए माफी की मांग सकता हूं मैं—हो सके तो माफ कर दीजिएगा मुझे...।" कहते हुए दोनों हाथों को निसंकोच ही जोड़ दिया नन्हें ने।

अवाक् सी कामिया अभी भी नन्हें की तरफ ही देख रही थी—एक टक।

और कामिया को उसी स्थिति में छोड़कर एकाएक झटके से मुड़ा नन्हें और फिर पीछे मुड़कर देखे बिना ही तेज कदमों से चला गया कामिया की निगाहों से दूर निकलता चला गया क्षण प्रतिक्षण।

तूफान तो कामिया के दिल में भी उठ खड़ा हुआ था।

□□□□

मंझली उसी दिन टोनी के साथ वम्वई चली गई—हां सिर्फ टोनी और मंझली ही नहीं उनके साथ नरेन्द्र केसरी भी—केसरी यानि कि निक्का।

वसेसर राम और उनके परिवार के लिए मंझली का इस तरह घर से चले जाना एकदम अप्रत्याशित स्थिति थी—मंझली इतना वड़ा कदम भी उठा सकती है—यह तो वह सोच भी नहीं सकते थे मगर सच को झुठला भी कैसे सकते थे—मंझली जाते जाते वसेसर राम के लिए एक पत्र भी छोड़ गई थी ना।

मंझली की छानछीन करने पर पता चला कि त्रिभुवन यानि टोनी भी यहां नहीं है—और टोनी की छानवीन के वक्त नरेन्द्र केसरी के भी वहां से गायव होने का पता चला—केसरी वम्वई गया हुआ है—अपनी किसी फिल्म के सिलसिले में—केसरी की पत्नी से यही जानकारी मिली और केसरी के वम्वई जाने की वात से इस वात की भी पूरी तरह से पुष्टि हो गई कि टोनी और मंझली भी वम्वई ही गए होंगे—मंझली के हीरोइन वनने की चाह किसी से छिपी हुई नहीं थी।

मगर वम्वई जाकर भी तो इतने वड़े महानगर में मंझली को तलाश करना आसान वात नहीं थी—वैसे नन्हें इस वात से अपरिचित नहीं थां कि सेठ किशोरी लाल नरेन्द्र केसरी के प्रतिद्वंद्वी हैं और उनके पास नरेन्द्र केसरी की हर गति विधि का पूरा पूरा हिसाव किताव रहता है।

अव नन्हें को एक वार फिर मदद मांगने के लिए जाना पड़ा—मंझली को तलाश करने की मदद—और सेठ किशोरी लाल नन्हें की पूरी वात सुनने के वाद मुस्कराते हुए वोले।

"अजीव वात है चन्द्र...।"

"क्या सर...। मंझली का घर से इस तरह भाग जाना ना—हम सव खुद भी वेहद हैरान हैं कि...।"

"नहीं चन्द्र—अजीव वात यह नहीं कि तुम्हारी व हीरोइन वनने के लिए घर से भाग गई—आगे वढ़ने की लालसा

"यही तो मुसीबत है टोनी—हां रूपा अगर यहां बम्बई में ह
हना है तो जैसा में कहूंगा—वैसा ही करना होगा।"

"हां आप जो भी कहेंगे—मैं वहीं करूंगी...।"

"टोनी से शादी कर सकोगी...।"

"क्या...।" चौंक उठी मंझली—चकित सी केसरी की तर
खती रह गई।

"घबराओ मत—ये शादी सिर्फ नाम की ही शाद
ोगी—और फिर शादी भी क्या होगी—बस तुम दोनों की दुल्ह
ुल्हन के रूप में एक तस्वीर खींचनी होगी—और दो तस्वीरों में तु
ोनों एक दूसरे के गले में वरमाला डाल रहे होंगे...।"

"मगर इससे फायदा भी क्या होगा...।"

"बहुत फायदा होगा-सबसे पहला फायदा तो यह होगा कि
तब तुम्हारे घर वालों को यह पता चलेगा कि तुमने शादी कर ली
और बम्बई की फिल्मी दुनिया में अच्छी तरह से सैट होने के बाद ह
ुम वापिस दिल्ली आओगी—तब वह तुम्हारी तलाश बंद क
ेंगे—और दूसरा फायदा यह होगा कि तुम दोनों की शादी की खब
ुझे भी बदनाम होने से बचा लेगी और मेरी बीवी मुझ पर शक भ
हीं करेगी...।"

"मुझे तो मिस्टर केसरी की बात में काफी दम नजर आता
ूपा और फिर उसके सिवा और कोई चारा भी नहीं...।" टोनी
अपनी राय जाहिर की।

क्षणभर के लिए कुछ सोचती रही मंझली—और फिर उस
भी अपनी सहमति जाहिर कर दी।

"ठीक है—मगर यह सिर्फ नाम की ही शादी होगी...।"

"अरे—शादी होगी ही कहां—सिर्फ एक नाटक
होगा—अच्छा तुम ऐसा समझ लेना कि तुम अपनी पहली फिल्म व
शूटिंग में भाग ले रही हो...।"

और टोनी की इस बात पर बरबस ही मुस्करा उठी मंझली
केसरी ने भी चैन की लम्बी सांस ली। अब इस समस्या से छुटका

"सौरी सर...।"

नन्हें की तरफ देखते हुए सेठ किशोरी लाल ना जाने क्या सोच कर अनायास ही मुस्करा उठे।

"काले धन्धे और काले धन्धे वालों से तुम्हें नफरत है ना चन्दर–तब फिर हमारे पास क्यां करने आए हो...।"

खामोश रहा नन्हें–चेहरा झुकाए हुए ही–सेठ किशोरी लाल के सवाल का जवाव उसके पास था ही नहीं।

देखो चन्दर–आकाश को छूना तमन्ना है ना तुम्हारी। अगर ऊपर उठना चाहते हो तो आज नहीं लेकिन कल तो तुम्हें मेरी शरण में आना ही होगा–वरना ना तो जी सकोगे तुम और ना ही मर सकोगे–हर दम घुट घुट कर जीना होगा तुम्हें...।"

अभी भी खामोश रहा नन्हें...।

"खैर–हमें इस बात की तो खुशी हुई कि तुमने अपने आपको कामिया से दूर रखने का निश्चय कर लिया है...।"

"सर–सर आप...।"

"चौको मत चन्दर–हमें हर बात का पता रहता है...।"

'तब फिर सर–मेरी वहन मंझली...।"

"हां चन्दर उसका पता भी चला लेंगे हम–अभी और यहीं वैठे वैठे...।" पाइप का धूंआ उड़ाते हुए किशोरी लाल ने धीरे से ताली वजाई।

दूसरे ही क्षण एक सूटेड बूटेड व्यक्ति हाजिर था–यह कोई और नहीं सचदेवा था किशोरी लाल का प्राइवेट सैक्रेटरी सचदेवा।

"जी सर...।" सिर झुकाते हुए किशोरी लाल के सामने खड़ा हो गया वह–किसी खरीदे हुए गुलाम की तरह।

"केसरी वम्वई में है–जानते हो...।"

"जानता हूं सर–हमारे आदमी केसरी के बारे में रोज ही पूरी रिर्पोट फोन पर देते रहे हैं...।"

"होटल में ही ठहरा होगा वह...।"

"जी हां सर–एक फाइवस्टार होटल में सूइट लिया हुआ है

यकीन—वाल की खाल निकालने की आदत है ना इनकी—मेरी राजकुमारी सी मंझली की शादी हुई है राजकुमार के साथ और ये मीन मेख निकल रहे हैं—इनसे तो बात करना ही बेकार है बेटे—जा तू बाजार से थोड़ी मिठाई ही मंगवा ले। मुंह मीठा तो करवाना ही होगा ना सबका...।"

"फिकर नाट दादी—लिव इट टू नन्हें...।"

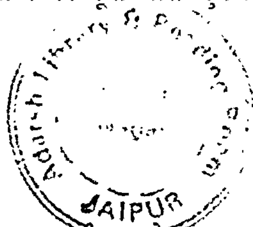
"और तू ये नाट वाट शाट ही करता रहेगा या लाएगा भी...।"

"अभी लो दादी—बस इधर से गया और उधर से आया...।"

"देख बेटा तू आ ही जाना मगर कुछ बढ़िया ही लाना और देख...।"

मगर नन्हें दादी की पूरी बात सुने बिना ही घर से बाहर निकल गया।

□□□□



"एक मिनट बड़की—मुझे कुछ कहना है तुमसे...।" गुणवंती जी के स्थान पर बड़की और आप के स्थान पर तुम प्रयोग किया अश्वनी ने—पिछले दिनों की मुलाकतों के दौरान दोनों काफी घुल मिल गए थे—इसीलिए।

"हां कहिए...।" बड़की की निगाहें अश्वनी के चेहरे पर टिक सी गई—अन्दर एक तूफान उठा होने के बावजूद प्रत्यक्ष में बिल्कुल सहज थी वह।

"अगर ठीक समझो तो किसी रेस्तरां में चलें—वहीं बैठ कर...।"

"रेस्तरां में भी तो भीड़ हो सकती है अश्वनी जी—यहीं कहिए ना—यहां भी तो आसपास कोई भी नहीं है...।"

"हां-हां—ठीक है—यहीं सही...।" अपने आप को तैयार किया अश्वनी ने—"देखो गुणवंती मैं चाहता हूं कि...।"

"कि मैं आपके चाचा जी से माफी मांग लूं...।"

"गुणवंती—तुम-तुम...।" क्षणभर के लिए तो सकपका सा गया अश्वनी और फिर स्वयं ही आगे बोला। "नहीं—मैंने यह बात कभी भी नहीं चाही गुणवंती—मेरी निगाह में तो तुमने कोई अपराध किया भी नहीं और अगर कुछ हुआ भी तो-तो अनजाने में ही हुआ—मगर चाचा जी तो अपनी जिद पर ही अड़े हुए हैं कि वह तुम्हें अपनी बहू का दर्जा भी नहीं देंगे क्योंकि तुमने उनका अपमान किया है—अगर तुम उनसे माफी मांग लो तो शायद...।"

"तो शायद चाचा जी मुझे मेरे उस अपराध के लिए क्षमा कर दें जो अपराध मैंने किया ही नहीं—और जब आप भी जानते हैं कि मैंने कोई अपराध नहीं किया तो फिर ये क्षमा किस बात की अश्वनी...।"

"गुणवंती तुम...।"

"हो सकता है अश्वनी—मेरे माफी मांगने के नाटक पर चाचा जी मुझे माफ भी कर दें और फिर हमारी शादी भी हो जाए—मगर यह तो सिर्फ एक समझौता ही हुआ ना—अपने स्वार्थ की खातिर किया गया समझौता—हम अपने स्वार्थ की खातिर अपने बनाए हुए असूल खुद ही तोड़ लें—यह बात कम से कम मुझे तो स्वीकार नहीं...।"

"गुणवंती तुम समझने की कोशिश तो करो...।"

"मैंने बहुत सोच समझकर ही ये फैसला किया है अश्वनी—आपको पाना ख्वाब है मेरा अपने ख्वाबों में मैंने सदा ही आपको चाहा है मगर आपको पाने के लिए अपने आपको धोखा नहीं दे सकती मैं—अगर आप मुझे पाना चाहते हैं—तो मेरे इसी रूप में स्वीकार करना होगा मुझे—अन्यथा यादों के सहारे ही जीवन काट लूंगी—बहन जी के कार्यालय में काम करके मैं अपने [illegible] पर खड़ी हो सकती हूं यह बात मैं जान चुकी हूं—अ

वान खून में अक्सर उबाल आ जाया करता है—तुम्हारी वहन भी
फ़िल्म हीरोइन वनने की चाह में घर से भाग गई—विना इस बात
र विचार किए हुए ही कि उसके पास हीरोइनों जैसा रंग रूप
ोग्यता भी है या नहीं...।"

"आप...। आप उसे जानते हैं सर...।"

"तुम्हें तो जानते हैं—और जब तुम्हें जानते हैं तो तुम्हारे
रिवार के एक एक सदस्य की गति विधियों की जानकारी भी तो
ोनी चाहिए हमें—हम नर्क की दुनिया के वेताज बादशाह हैं
ा...।"

खामोश रहा नन्हें— सेठ किशोरी लाल के हाथ कितने लम्बे
; यह वह उस वक्त महसूस कर चुका था जब उन्होंने उसे पुलिस
ो दस हजार की रिश्वत देकर स्मगलिंग के जुर्म से वेदाग छुड़वा
लया था। इस बात को तो वह सपने में भी नहीं सोच सकता था कि
ह पुलिस स्टेशन भी नकली था और वह पुलिस वाले भी
कली—यह सब तो सेठ किशोरी लाल के शैतानी दिमाग की छोटी
ी चाल थी—नन्हें को अपने काबू में रखने की चाल।

"अजीव वात तो यह है चन्दर कि तुमने इस वात को कैसे
ोच लिया कि हम इतने बड़े महानगर में से तुम्हारे वहन मंझली
ी तलाश कर सकते हैं...।" कहते हुए उनकी निगाहें नन्हें के
ेहरे पर टिकी रहीं—नन्हें या चन्द्र प्रकाश कहने के स्थान पर उसे
न्द्र कह कर पुकारना पसन्द था उन्हें।

"मैं जानता हूं सर—आप कुछ भी कर सकते हैं—आप सब
ुछ जानते हैं सर और...।"

"हूं—तो तुम्हें इस वात का यकीन है कि हम सब कुछ
ानते हैं—और फिर भी तम हमारी वेटी कामिया को हमारे ही
ख़िलाफ भड़काने की कोशिश करते रहे...।"

सकपका सा गया नन्हें—झुकती हुई निगाहों के साथ चेहरा
ी झुकता चला गया। झुके हुए चेहरे के साथ वह अगर कुछ कह
का तो सिर्फ इतना ही।

ता टूटने का गम भी था।

हां—बड़की ने जब एक बार जटा शंकर जी से माफी मांगने कार कर दिया तो फिर उसे कोई भी नहीं समझा पाया—वैसे अश्वनी ने ही इस बात पर अपनी हार मान ली थी तो भला ई और क्या ही समझा पाता बड़की को।

इस रिश्ते के टूटने पर बड़की के मन को चाहे जितनी गहरी लगी हो मगर प्रत्यक्ष में पूरी तरह से सहज रही वह—विगत 5 अरसे से अपने आपको काफी मजबूत बना चुकी थी वह—अब नी आवाज को बुलन्द करने की हिम्मत थी उसमें...अपने आप व्यस्त रखने का प्रयास और अपने पैरों पर खुद खड़े होने की शिश में ही वह एक बार फिर बहन जी के कार्यालय में मदद गने के लिए नहीं गई थी—ना ही किसी सलाह मशविरे के लिए ई थी—इस बार तो वह वहां नौकरी करने के लिए गई थी। और सने अपनी नौकरी के इस फैसले को बसेसर राम के लाख मझाने बुझाने पर भी नहीं बदला—अब अपना अच्छा बुरा खूब मझती थी वह—अपने भविष्य के बारे में खुद निर्णय ले सकती ।

नन्हें को मंझली की छानबीन के सिलसिले में सेठ किशोरी ाल जी की जो मदद लेनी पड़ी—उसकी एक बहुत बड़ी कीमत भी कानी पड़ी उसे किशोरी लाल का दाहिना हाथ बन गया न्हें—ना चाहते हुए भी सेठ किशोरी लाल से वह सब सीखने लगा ह—जो कुछ अक्सर फिल्मों में देखा करता था वह।

छुटकी तो पढ़ाई लिखाई में भी होशियार थी और पूरी तरह समझदार भी—इसलिए तो अर्पणा और सुधीर सिन्हा से उसका ाता ऐसा जुड़ा था कि वह छुटकी को अपनी हीं बेटी मानने लगे े—पहले तो सुधीर सिन्हा के लाख समझाने पर भी अर्पणा और बच्चा गोद लेने के लिए तैयार ही नहीं होती थी—मगर को गोद ले लेने की चाह उसके अन्दर बेहद मगर इसके लिए ना तो भागवंती और दादा जी

उसने और हां उसके साथ राजकुमार नाम का एक आवारा सा लड़का और एक लड़की भी है—वैसे केसरी घर पर तो यही बताकर गया है कि वह अकेला ही जा रहा है—मगर यह लड़का और लड़की भी दिल्ली के ही (हैं...।"

"हां सचदेवा—वह लड़की चन्दर की बहन रूपवंती है—मंझली उर्फ रूपवंती उर्फ मिस रूपा मगर वह राजकुमार...।"

"होटल के रजिस्टर में उस लड़के ने अपना यही नाम दर्ज किया है सर—वैसे वह लड़का यहां दिल्ली में त्रिभुवन उर्फ टोनी के नाम से जाना जाता रहा है सर...।"

"जी हां सर—टोनी ही मंझली के साथ गया है—वही उसके साथ होगा...।" नन्हें बीच में ही बोल उठा।

"ठीक है सचदेवा—केसरी को अभी फोन करो और उससे कहो कि हमें मंझली यानि बम्बई की मिस रूपा के बारे में पूरी पूरी रिपोर्ट चाहिए...।"

"अभी लीजिए सर...।"

"अगर आप कहें तो सर मैं भी सचदेवा जी के साथ...।"

"हां हां...। सचदेवा मिस्टर चन्दर को भी अपने साथ ले जाइए और हां याद रहे—मंझली के बारे में पूरी रिपोर्ट आज ही चाहिए...।"

"जी सर...।"

और सचदेवा और नन्हें के जाने के बाद बाद पाइप का धूंआ उड़ाते हुए सेठ किशोरी लाल ना जाने किस सोच में डूब गए थे।

□□□□

"मगर मिस्टर केसरी...।"

'उफ— तुम समझने की कोशिश क्यों नहीं करतीं रूपा— ये

ा—अपनी पत्नी शकुन और लड़का लड़की जिनका नाम अनुराग
ार सारिका था के साथ कुछ समय के लिए भारत आया था—वह
ाग दिल्ली में ही रूकने के बावजूद बसेसर राम के घर ना ठहर कर
क फाइवस्टार होटल में ठहरे थे—वैसे इस बात का मुख्य कारण
ालिग राम की पत्नी शकुन थी जिसे ना तो बसेसर राम ही पसन्द
और ना ही उनका परिवार—मगर प्रत्यक्ष में तो वह यही कह
कती थी कि उनके दोनों बच्चे सुख सुविधाओं के आदी हो चुके हैं
ह सुख सुविधाएं भारत में तो उन्हें होटल में ही मिल सकेंगी

सालिग राम का इस तरह से होटल में रहना बसेसर राम के
लए अजीब सा तो था मगर वह तो हर बात नशे में ही उड़ा
ने के आदी थे ना—शराब का नशा और सहगल के गीतों में डूब
र तो जहां को भी भूल जाते थे वह।

□□□□

टोनी से झूठी शादी कर लेने के बाद मंझली बम्बई रहने के
लए आजाद तो हो गई मगर कई दिन गुजर जाने के बाद भी ना तो
केसरी की ही फिल्म प्रारम्भ हो सकी और ना ही उसे किसी अन्य
ोड्यूसर की फिल्म में ही कोई रोल मिल सका। धीरे-धीरे काफी
निराश होती चली गई वह।

बम्बई में रहते हुए उसे जिस समस्या का सबसे अधिक
ामना करना पड़ा था—वह थी अपनी अस्मत को बचाए रखने की
समस्या—एक तरफ टोनी उसे बहला फुसला कर उसके साथ
खिलवाड़ करना चाहता था तो दूसरी तरफ केसरी उसे फिल्म की
ीरोइन बनाने के ख्वाब दिखाता हुआ उसके जिस्म को पा लेना
ाहता था।

इस बात को मंझली भी महसूस कर चुकी थी कि यहां
बिल्कुल अकेली है वह—चाहे कितनी भी हिम्मत से काम

चलूं—काफी देर हो रही है...।"

"अपने बारे में नहीं तो कम से कम मेरे बारे में तो सोचो गुणवंती...।"

"नहीं अश्वनी—आज ना अपने बारे में सोच सकूंगी और ना ही तुम्हारे बारे में—ऐसा ही सोच लो कि आज बहुत स्वार्थी हो गई है गुणवंती...।"

और फिर वहां रूकी नहीं थी बड़की—मुड़कर तेज कदम उठाती हुई दूर होती चली गई।

अश्वनी वहीं सड़क किनारे मोटर साईकल पर हाथ रखे खड़ा बड़की को जाते हुए देखता रहा और फिर स्वयं से ही बुदबुदा उठा।

"नहीं गुणवंती—स्वार्थी नहीं हुई हो तुम—तुम्हारी भावनाओं को पूरी तरह से समझ सकता हूं मैं—और फिर सच पूछो तो आज तो तुम्हें पूजने को दिल चाहता है...।"

मगर अश्वनी की इस भावना को महसूस करने के लिए बड़की वहां थी ही कहां—वह तो सामने सड़क का मोड़ मुड़कर निगाहों से ओझल हो चुकी थी।

एक गहरी सांस लेते हुए अश्वनी ने भी अपनी मोटर साईकल को स्टार्ट किया और फिर कुछ ही क्षणों में उसकी मोटर साईकल लम्बी चौड़ी खाली सड़क पर धीमी गति से दौड़ रही थी—मगर वह खुद नहीं जानता था कि उसे कहां जाना है।

दूसरे ही दिन जब मंझली और राजकुमार यानि कि टोनी के विवाह की तस्वीरें बसेसर राम और उनके परिवार के सामने पहुंच गई तो सबने मान ही लिया कि मंझली यकीनन शादी कर चुकी है—असलियत का तो आभास तक नहीं था उन्हें।

बसेसर राम जब बात बेबात ही दारू की बोतल मुंह से लगाए रखते थे तब भला इस खुशी के मौके पर क्यों नहीं पीते वह—आए दिन तो देशी ही पीते थे—इस अवसर पर अंग्रेजी पी। वैसे अगर उन्हें मंझली की शादी होने की खुशी थी तो बड़की का

मंझली खुद भी तो सुपर स्टार विश्व मोहन की झलक तक पाने के लिए बेताब थी और फिर उसके साथ तो एक बहुत ही खूबसूरत ख्वाब जुड़ा हुआ था कि अगर विश्व मोहन ने उसे पसन्द कर लिया तो वह फिलम में विश्व मोहन जैसे सुपर स्टार की हीरोइन होगी और अगर एक बार उसे यह चांस मिल गया तो देखते वह कहां की कहां होगी। इस मौके को वह हाथ से नहीं निकलने देना चाहती थी—किसी कीमत पर भी नहीं—केसरी को खुश करने के लिए एक बार तो जिस्म को दांव पर लगा ही चुकी थी वह और केसरी तो विश्व मोहन के सामने कुछ भी नहीं था।

अजीब सी राह पर चल पड़ी थी मंझली—बहुत कुछ पाने की चाह में अपने आपको भी खोती जा रही थी।

□□□□

लल्लू को विदेश भेजने के लिए बसेसर राम के छोटे भाई सालिग राम ने पत्नी के ना चाहते हुए भी बसेसर राम को पांच हजार रुपये दे हीं दिए—लल्लू के पासपोर्ट कोई विशेष नहीं तो टिकट वगैरह पर तो खर्चा होना ही था ना और फिर जो एजेन्सी लल्लू को दुबई भेज रही थी—उसे भी तो अपना कमीशन चाहिए था ना।

नौकरी के मामले में लल्लू की किस्मत का सितारा चमका या नहीं ये तो बाद की बात है मगर शादी के मामले में लल्लू की किस्मत का सितारा जरूर चमक दमक उठा।

बेचारे लल्लू को कितनी ही लड़कियां कैंसिल कर चुकी थीं—लल्लू भी किसी को कैंसिल करके अपने मन की भड़ास निकाल सके इस बात का नम्बर ही नहीं आता था—वैसे तो उषा रानी भी लल्लू को कैंसिल कर देती मगर उसकी सौतेली मां तो घर में उसका जीना हराम किए हुए थी और फिर लल्लू भी उसे सीधा

ुद छुटकी ही—छुटकी का तो सिर्फ एक ही जवाब था कि अगर ह लोग उसे गोद लेना चाहते हैं। तो उसे कोई भी एतराज नहीं गगर उसे गोद लेने से पहले उन्हें उसकी मां यानि भागवंती को भी ोद लेना होगा।

और यह बात तो किसी भी तरह से संभव नहीं थी ना।

लल्लू को भी लाख चाहने और कोशिश करने पर भी कहीं नौकरी नहीं मिली तो विदेश जाकर खूब रुपये कमा कर लाने का ख्वाब दिल में संजो बैठा—बसेसर राम ने भी सोचा कि लल्लू हाथ का तो कारीगर है ही—अगर विदेश जाकर कमाई में लग गया तो पूरे घर के वारे न्यारे हो जाएंगे—फिर तो उन्हें शराब के पैसों के लिए किसी के सामने हाथ भी नहीं फैलाना पड़ेगा—बसेसर राम की मां यानि कि परिवार की दादी जी भी लल्लू के विदेश जाने की बात से बेहद खुश थी—अच्छा खाने और अच्छा पहनने का शौक तो उन्हें भी था ना।

उन सबकी निगाहों में मंझली की शादी तो हो ही चुकी थी और बड़की की शादी के तो दूर दूर तक कोई आसार नहीं नजर आ रहे थे—इसीलिए बसेसर राम ने अपनी मां यानि दादी इमरती देवी से सलाह मशविरा करने के बाद निश्चय किया कि अब उन्हें लल्लू की भी शादी कर ही देनी चाहिए—इससे दो फायदे तो होंगे ही—एक तो इस बात का डर नहीं रहेगा कि लल्लू विदेश से वापिस लौटते समय अपने साथ कोई गोरी मेम लेकर लौटेगा—और दूसरा फायदा यह होगा कि घर को संभालने के लिए घर में बहू आ जाएगी वैसे भी साथ में जो थोड़ा बहुत दहेज आएगा—उससे घर की तंगी ही दूर होगी—और फिर लल्लू को विदेश भेजने के लिए भी तो रुपया चाहिए—बस लल्लू के लिए पासपोर्ट बनवाने की भी भागदौड़ शुरु हो गई और उसके लिए लड़की तलाश करने की भी।

इन दिनों में एक विशेष बात और हुई थी—बसेसर राम का छोटा भाई सालिग राम जो कि विदेश में व्यापार करता

केसरी ही नहीं मंझली भी जानती थी—और इसके लिए पूरी तरह से तैयार भी थी वह।

मगर इससे पहले कि विश्व मोहन शूटिंग के ब्रेक में मंझली के पास तक पहुंच पाता—टोनी उसके सामने आ खड़ा हुआ।

टोनी जानता था कि विश्व मोहन के इर्द गिर्द उसकी चमचागीरी करने वालों की भीड लगी रहती थी और उसकी निगाह में टोनी की हैसियत भी एक चमचे से अधिक नहीं थी।

"क्या वात है चमचे—कोई खास खबर लाया है क्या...।"

"हां विश्व मोहन जी—आपके लिए एक बहुत जरूरी और महत्वपूर्ण समाचार...।"

"ठीक है—जल्दी बोल—वहुत काम है अभी—मेकअप रूम एक इंतजार कर रही है...।"

"मैं उसी रूपा की असलियत वताने आया हूं विश्व मोहन -वह कोई दौलतमंद लड़की नहीं—दिल्ली की जनता कालोनी क एल.आई.जी. फ्लैट में रहने वाले साधारण से परिवार की की है...।"

"हूं...ये वात है...। वह तो ऐसे डींग मार रही थी जैसे किसी ट की राजकुमारी हो—लाखों करोड़ों की वारिस खैर—तुझे यह व कैसे पता...।" विश्व मोहन की निगाहें टोनी के चेहरे पर जम गई।

"मैं...मैं उसे खुद वम्वई लेकर आया था...।"

"और तेरा पंछी केसरी ले उड़ा...।" विश्व मोहन के चेहरे पर मुस्कराहट तैरती चली गई।

"जी हां...मगर मैं उसे सवक सिखाना चाहता हूं...।"

"देख, चमचे—ये तो तेरा काम है—हां अभी थोड़ी देर के बाद वह लड़की मेरे मेकअप रूम से बाहर निकल आएगी—अब जब मेरे पास आ ही गई है तो ऐसे ही थोड़ा जाने दूंगा उसे—निराश हो जाएगी ना वेचारी—और इस केसरी को तो वाद में देख लूंगा—मुझे वनाने चला था साला...।"

ले—ज्यादा समय तक अपने आपको बेदाग नहीं रख पाएगी वह—और हार कर वापिस घर लौटना उसे किसी भी स्थिति में कबूल नहीं था।

वह जान गई थी कि टोनी की हैसियत केसरी के सामने एक दलाल से अधिक नहीं है टोनी के साथ रहते हुए तो वह किसी भी तरह अपने सपनों को पूरा नहीं कर पाएगी—उसने सोचा कि अगर उसे समझौता ही करना है तो क्यों ना नरेन्द्र केसरी से ही समझौता करे केसरी तो पहले ही उसका दीवाना है जहां एक तरफ उसे रुपयों पैसों की कोई कमी महसूस नहीं होगी—वहीं दूसरी तरफ वह केसरी की जल्दी ही शुरू होने वाली फिल्म की हीरोइन भी बन पाएगी।

मंझली ने जब केसरी के सामने उसकी बात मानने में सहमति जाहिर की तो वह खुशी से फूला नहीं समाया और टोनी को झांसा देकर मंझली को अपने ही एक खाली फ्लैट में ले गया बम्बई आने के बाद वह अक्सर इसी फ्लैट में रूका करता था।

अब केसरी एक तरफ तो मंझली के साथ मौजमस्ती मनाने के लिए पूरी तरह से आजाद था दूसरी तरफ उसे इस बात की चिन्ता नहीं थी कि फाइवस्टार होटल का लम्बा चौड़ा बिल रोज उसके खाते में चढ़ता चला जाएगा।

केसरी ने अब तक मंझली के ऊपर जितने भी रुपये खर्च किए थे—वह तो मंझली के जवान जिस्म से वसूल कर ही लिए उसने—अब मंझली को हीरोइन के रूप में अपनी फिल्म में चांस देना भी तो उसका फर्ज था और फिर वह खुद भी तो सुपर स्टार विश्व मोहन को अपनी फिल्म में बतौर हीरो साइन करने के लिए भागदौड़ कर रहा था—वह जानता था मंझली को वह तभी हीरोइन के रूप में ले सकेगा जब सुपर स्टार विश्व मोहन चाहेगा—हीरोइन के सलैक्शन के मामले में अपनी पूरी मरजी चलाता था वह—इसीलिए केसरी ने मंझली को विश्व मोहन से मिलवाने का निश्चय कर लिया।

"तुम इतने कमीने निकलोगे, यह मैंने कभी सोचा भी नहीं था...।"

"और मैंने भी यह बात कभी नहीं सोची थी केसरी कि तुम मेरी ही चिड़िया को अपनी दौलत के जाल में फंसा लोगे—खैर जाने दो—हां अगर तुम चाहते हो केसरी कि यह विवाद आगे नहीं बढ़े—तो मुझे अभी उस फ्लैट की चाबी चाहिए जिसमें तुम रूपा के साथ ठहरे हुए हो—अब उस फ्लैट में रूपा के साथ मैं रहूंगा...।"

"टोनी तुम...।"

"जवाब हां या ना में दो केसरी—वैसे ना की सूरत में तुम सोच सकते हो कि जो टोनी सुपर स्टार विश्व मोहन तक पहुंच सकता है वह टोनी और भी बहुत कुछ कर सकता है—कम से कम तुम्हारे बीवी बच्चों के सामने तुम्हारे कारनामें तो खोल सकता है...।"

"उफ...।"

"फ्लैट की चाबी दे रहे हो केसरी या...।"

"हं...हां...। ये लो...। मगर याद रखो—केसरी से टकराना बहुत महंगा पड़ेगा तुम्हें...।"

"और तुम भी ये बात याद रखना केसरी—मुझसे टकराना भी आज तक किसी को सस्ता नहीं पड़ा...।"

जहरीली मुस्कराट के साथ ही बोलते हुए उसने फ्लैट की चाबी को मुट्ठी में भींच लिया था और फिर चंद क्षणों के बाद खुद ही आगे बोला था...।

"ओ.के. केसरी—अब तुम जा सकते हो—कहीं विश्व मोहन ने तुम्हें देख लिया तो तुम कम से कम इस जन्म में तो फिल्म बनाने की बात क्या फिल्म का ख्याल भी दिल में नहीं ला सकोगे—हां रूपा की चिन्ता मत करो—मैं संभालना जानता हूं उसे—अब तो उसे मेरे साथ ही रहना है ना...।"

कुछ बोला नहीं केसरी—चन्द क्षणों तक जलती आंखों से टोनी की तरफ देखता रहा था और फिर झटके से मुड़कर तेज कदमों से चलता हुआ दूर होता चला गया था।

सादा इंसान लगा—वैसे उसने भी इस विवाह के बारे में ही हां करने से पहले पूरी पूछताछ करी—क्योंकि उसे संदेह था कि लल्लू पूरी तरह से बेरोजगार है—और इसी छानछीन के सिलसिले में वह बहन जी के कार्यालय में बड़की से मिलने भी गई और बड़की ने खुद पूरी छानबीन करने के बाद उषा रानी को यह जानकारी दी थी कि लल्लू वास्तव में नौकरी करने ही विदेश जा रहा है उसका नियुक्ति पत्र भी आ चुका है। वैसे भी लल्लू हाथ का तो बहुत ही अच्छा कारीगर है।

बड़की की इस रिपोर्ट का नतीजा स्पष्ट था।

लल्लू की उषा रानी यानि बिल्लो के साथ सगाई।

उषा रानी का घर का नाम बिल्लो ही था ना। खूब जोड़ी थी—एक लल्लू तो दूसरी बिल्लो।

शीघ्र ही दोनों की शादी का मुहूर्त भी निकलवा लिया गया जिससे कि विदेश जाने से पहले लल्लू अपनी उषा रानी के साथ कुछ दिन गुजार सके।

□□□□

सुपर स्टार विश्व मोहन ने आज ही केसरी और मंझली को मिलने का समय दिया हुआ था—वैसे उसके सामने मंझली यानि मिस रूपा की तारीफों के बड़े बड़े पुल पहले ही बांधे जा चुके थे।

मंझली आज विश्व मोहन से मिलेगी इस बात की जानकारी टोनी को पहले से ही थी—मंझली और केसरी से धोखा खाने के बाद वह अभी एक चोट खाए नाग की तरह फूंफकार रहा था।

मंझली के स्टूडियो में आते ही विश्व मोहन ने उसे सरसरी निगाह से देखने के बाद अपने मेकअप रूम में पहुंचवा दिया—मंझली के साथ अकेले में डिस्कशन करना था उसे—वैसे इस डिस्कशन में उसे एकांत की जरूरत क्यों है—इस बात को

जानने के बाद कोई भी हमसे दूर नहीं जा सकता—फिलहाल जिन्दा तो बिल्कुल ही नहीं और फिर तुम्हें तो हम अपनी गद्दी का वारिस बनाना चाहते हैं...।"

और नन्हें खामोशी से किशोरी लाल की तरफ देखता रहा—वह उसे कुछ कहने सुनने का मौका भी कहां दे रहे थे।

"ओह—एक बात तो हम तुम्हें बताना भूल ही गए चन्दर—शहर से बाहर फार्म पर हमारा जो बंगला है ना—जरा अपनी देख रेख में उसे पूरी तरह से सजा संवार दो—हमारे एक परिचित राज कुमार अजय सिंह वहां कुछ दिन रहेंगे—हां उन दिनों मैं और कामिया भी वहीं रहेंगे—और तुम्हें भी अजय सिंह को पूरी तरह से अटैंड करना होगा...।"

"मगर सर—ये अजय सिंह...।"

"अजय सिंह छोटी मोटी हस्ती नहीं है चन्दर—एक बहुत बड़ी एस्टेट का राजकुमार है—हम सोच रहे हैं कि फार्म में चन्द दिन गुजारने के बाद अगर अजय सिंह और कामिया एक दूसरे को पसन्द करते हैं तो हम कामिया का हाथ अजय सिंह के हाथ में देकर इस आखिरी बोझ से भी मुक्ति पा लेंगे—क्यों ठीक सोच रहे हैं ना हम...।"

"जी...जी ये तो आप ही बेहतर सोच सकते हैं सर...।" अपने आप पर पूरी तरह से काबू पाते हुए बस ही इतना ही कह सका नन्हें।

दिल पर जो गुजर रही थी—उसे वही महसूस कर सकता था।

□□□□

और विश्व मोहन के जाने के बाद टोनी वहीं खड़ा रह गया था—होंठों पर जहरीली मुस्कराहट विखरते हुए। वह जानता था कि अव रूपा घंटे दो घंटे दो विश्व मोहन के केविन से वाहर नहीं निकल पाएगी—सोचा था कि क्यों ना कैंटीन से कुछ खा पी लिया जाए। इसी वीच सोच के साथ मुड़ा ही था टोनी कि सामने से आते केसरी को देखकर उसके चेहरे पर विखरी मुस्कराहट की परतें गहरी होती चली गईं।

"टोनी तुम...।" टोनी को देखते ही चौंक उठा केसरी—चेहरे पर रंग वदल गया—संभवत इस सोच के साथ कि टोनी कहां कुछ गड़वड़ ही ना कर दे—वरना वना वनाया काम विगड़ जाएगा।

"हां मिस्टर क़ेसरी मैं—चलिए आपने पहचान तो लिया—वरना मैं तो सोच रहा था कि...।"

"वकवास वंद करके यह वताओ कि यहां क्या करने आए हो...।" केसरी का स्वर तेज हो उठा।

"वस ऐसा ही समझ लो केसरी कि अपना हिसाव किताव चुकाने के लिए ही यहां आ पहुंचा मैं—वैसे अव ज्यादा चीखने चिल्लाने का कोई भी फायदा नहीं क्योंकि अपना काम मैं निपटा चुका हूं...।"

"क्या...। क्या मतलव...।"

"मतलव यह है कि केसरी—फिलहाल तो तुम्हारी पहली फिल्म शुरू होने से पहले ही वंद होने कि हालत में है विश्व मोहन को मैं तुम्हारी और रूपा की असलियत वता चुका हूं।"

"तुम...तुम...।"

"कहा ना मिस्टर केसरी वौखलाने की कोई आवश्यकता नहीं और ना ही मेरा कालर पकड़ने की जुर्रत कीजिए वरना आपकी शक्की दिमाग धर्म पत्नी आज और अभी यह वात सवूत के साथ जान जाएगी कि आप यहां वम्वई में फिल्म नहीं वना रहे वल्कि दिल्ली से ही एक लड़की को भगाकर यहां लाने के वाद उसके साथ रातें रंगीन कर रहे हैं...।"

"क्या अनिता जी आप तो...।"

"देखो अश्वनी—तुम्हारे सिनियर तो हैं हम—मगर अच्छे दोस्त भी हैं—हमसे कुछ छिपाने का क्या फायदा...।"

"मगर कुछ बताने लायक हो भी डाक्टर अनिता...।"

"गुणवंती से रिश्ता टूट गया क्या...।"

"नहीं अनिता जी—यह रिंश्ता टूटने के लिए नहीं बना था—हां हम एक दूसरे के जीवन साथी बन सकें इस रास्ते में जरूर कुछ रूकावटें आ गई हैं—मगर हमारे लिए तो ये रूकावटें जिन्दगी के एक इम्तहान की तरह हैं—बहुत से इम्तहानों से गुजरना होता ना जिन्दगी में—एक इम्तहान यह भी सही। मगर देख लीजिएगा—हम इस इम्तहान में हारेंगे नहीं...।"

"हमारी शुभ-कामनाएं आपके साथ हैं अश्वनी...।"

"थैंक्स अनिता जी...।"

अनिता के जाने के बाद अश्वनी एक बार फिर सोचों में डूब गया था।

□□□□

टोनी वास्तव में ही मंझली के लिए ग्राहक तलाश कर लाया।

मंझली जानती थी कि वह टोनी का मुकाबला नहीं कर सकेगी—उसे बचाव का सिर्फ एक ही रास्ता सूझा कि वह अपने आपको कमरे के साथ ही जुड़ी रसोई में बन्द कर ले तो टोनी के चंगुल से फिलहाल तो बच ही सकती है।

और उसने वही किया।

टोनी ने मंझली को सामदाम दंड भेद हर प्रकार से अपने काबू में करने की कोशिश की मगर आखिरकार हार कर ग्राहक को ही वापिस लौटना पड़ा—हां जाते जाते वह अपना कार्ड जरूर दे गया

टोनी अभी भी मुस्करा रहा था—मुट्ठी में केसरी के फ्लैट की चावी भींचे हुए।

□□□□

"गुड चन्दर—वैरी गुड—पहले तो हम सिर्फ सोचा ही करते थे मगर अब तो हमें इस वात का पूरा यकीन हो गया है कि तुम्हारे अन्दर वह सारे गुण हैं जो तुम्हें हमारी गद्दी का वारिस वना सकते हैं...।"

"मगर मैं आपकी गद्दी का वारिस नहीं वनना चाहता किशोरी लाल जी—मैं ख्वाव तो देखा करता था मगर इतने ऊंचे नहीं जितने आप दिखा रहे हैं मुझे-मुझे अपनी ही जिन्दगी में खुश रहने दीजिए सर...।"

"कमजोर होना कायरता की निशानी है चन्दर—तुम्हें तो अपने पर नाज होना चाहिए कि हम खुद तुम्हें यह सब कुछ सिखा रहे हैं...।"

"मेरा भविष्य क्या होगा—यह सोच कर कभी कभी मुझे वहुत डर लगता है किशोरी लाल जी...।"

"देखो चन्दर—भविष्य दूसरे के हाथों और अपने दिमाग से वनाया जाता है—आज की दुनिया का यही दस्तूर है—और हां, एक वात और याद कर लो चन्दर हम जानते हैं तुम चोरी छिपे हमारी जासूसी करने की कोशिश करते हो—वैसे तो इसमें कोई वुरी वात नहीं—रहस्यों को जानने की कोशिश तो तुममें होनी ही चाहि मगर इतनी होशियारी भी तो होनी चाहिए कि तुम अपने काम सही अंजाम दे सको—जो जानना चाहते हो जान सको...।"

"सर...। सर मैं तो...।"

"एक वात और चन्दर—एक वात अच्छी तरह से लो—अव तुम्हें हमारे साथ ही काम करना है—हमारे

हुआ यह था कि मंझली के वहां से भाग निकलने के तुरन्त बाद ही वह आदमी जो पहले टोनी के साथ ग्राहक बनकर आया था वहां आ पहुंचा और उसने जब टोनी को बेहोश और फ्लैट को खाली देखा तो वह बौखलाया हुआ उल्टे पांव वापिस भाग लिया बिना इस बात का ख्याल किए हुए कि उसका विजटिंग कार्ड तो टोनी के पास ही रह गया है।

इस आदमी को सब कुलकर्णी के नाम से जानते थे।

कुलकर्णी के जाने के बाद एक और आदमी इस फ़्लैट में दाखिल हुआ और चन्द क्षणों के बाद जब वह दादा टाइप आदमी भी उस फ्लैट से बाहर निकला तो उसके चेहरे पर अपने काम को पूरा अंजाम देने की मुस्कान थी यहां आते हुए उसने तो इस बात को ख्वाब में भी नहीं सोचा था कि यहां उसका काम इतना आसान हो जाएगा।

बदमाशों जैसे हुलिए वाला ये युवक कोई और नहीं मदन था—बम्बई की अपराधी दुनिया का जाना माना बदमाश मदन।

और कुछ ही देर के बाद मदन नरेन्द्र केसरी के सामने मौजूद था।

''काम हो गया मदन...।'' केसरी ने पूछा था—गंभीर स्वर में।

''मदन वही काम हाथ में लेता है केसरी साहब जो काम वह कर सकता है—आपका काम इस सफाई से किया है कि आप भी क्या याद करेंगे। हां लाइए—अब कड़क कड़क नोट निकालिए—हाथों में खुजली हो रही है।'' कहते हुए मदन ने अपना दाहिना हाथ आगे बढ़ा दिया। केसरी की तरफ।

और केसरी ने मदन की उस खाली हथेली में दस हजार रुपयों की एक गड्डी रख दी—मुस्कराते हुए।

मदन की बिल्ली जैसी आंखों की चमक गहरी होती चली गई थी।

□□□□

"देखो...देखो टोनी तुम...।"

"मुझे क्या दिखा रही हो रूपा यानि कि जनता कालोनी की रूपवंती जी—अब तो जो मैं दिखा रहा हूं—वह आप देखती जाइए—विश्व मोहन के पास से भी तुम्हें ले आया मैं और तुम्हारे नये यार केसरी से भी तुम्हें छीन लिया मैंने...।"

"तमीज से बात करो टोनी तुम...।"

"तमीज अब मुझे नहीं तुम्हें सीखनी होगी रूपा क्योंकि अब तुम मेरे फंदे में हो—मेरे जाल की चिड़िया थी ना तुम—खूब फड़-फड़ाकर देख लिया मगर फिर भी मेरे ही जाल में वापिस आना ही पड़ा तुम्हें—इसी फ्लैट में केसरी की कितनी ही रातें रंगीन की होंगी तुमने मगर अब ऐसे सती सावित्री बन रही हो कि जैसे मेरा हाथ लगने से भी अपवित्र हो जाओगी तुम...।"

"याद रखो टोनी—मैं अपनी जान दे दूंगी मगर तुम्हें पास नहीं आने दूंगी।" बिफर सी उठी मंझली।

"हां—मुझसे तो तुम्हें एलर्जी है ना...। खैर कोई बात नहीं—मैं नहीं तो कोई और सही...।"

"क्या...। क्या मतलब है तुम्हारा। चाहते क्या हो तुम...।" मंझली बदहवासी में चीख सी उठी।

"मतलब यह है जानेमन कि तुम्हारे लिए ग्राहक लेने जा रहा हूं मैं—पेट तो भरना ही है ना और टोनी तो इसी तरह कमाता है...।"

और मंझली सन्नाटे की हालत में टोनी की तरफ देखती रह गई।

□□□□

"क्या बात है अश्वनी—आजकल काफी खामोश से रहते हो तुम...।"

मंझली के साथ ना आने का सिर्फ एक ही कारण नजर आ रहा था और वह यह था कि मंझली का राजकुमार से किसी बात पर झगड़ा हो गया होगा और बात बढ़ गई होगी और लाड प्यार में पली और बड़ी हुई मंझली राजकुमार को छोड़कर चली आई होगी। हो सकता है थोड़ी बहुत मार पीट भी हुई हो—तभी तो वह मरने मारने की बातें कर रही है—संभवत अपना मानसिक संतुलन खो बैठी है—और इस बात का एक ही हल सूझा था उन्हें और वह यह था कि उन्हें मंझली को किसी अच्छे डाक्टर को दिखाना चाहिए और तब बड़की ने उन्हें डाक्टर अश्वनी का नहीं—डाक्टर अर्पणा सिन्हा का नामसुझाया था। लेडी डाक्टर होने के कारण डाक्टर अर्पणा सिन्हा मंझली के इस अजीब से रोग को अच्छी तरह से समझ सकती थीं ना।

और डाक्टर अर्पणा ने मंझली के चैकअप के बाद बसेसर राम से यही कहा था।

"आपकी बेटी की यह हालत मानसिक तनाव के कारण लगती है बसेसर राम जी—फिलहाल आपके लिए एक खुशी की खबर भी है और वह यह है कि आपकी बेटी मंझली मां बनने वाली है...।"

पहले से ही परेशान बसेसर राम तै कर भी नहीं सके थे कि यह अवसर खुशी का है या उनकी परेशानी और अधिक बढ़ गई है।

मगर जब यही बात मंझली को पता चली थी तो वह चीत्कार कर उठी थी।

"नहीं...।"

दूसरी तरफ बम्बई में टोनी की हत्या की जांच का काम बम्बई पुलिस के कर्तव्यनिष्ठ इंस्पेक्टर-इंस्पेक्टर सामदार को सौंपा गया था और इंस्पेक्टर सामदार अपने नायक [illegible] पाण्डूरंग के साथ रात दिन इस केस पर [illegible]

और साथ ही यह भी कह गया कि वह रात को फिर आएगा—अगर टोनी तब तक रूपा को तैयार कर सका तो...।

मगर मंझली ने दरवाजा नहीं खोलना था—नहीं खोला। टोनी की भी जिद थी कि वह जैसे भी हो मंझली को अपने काबू में ही करके दम लेगा—इसीलिए उसने रसोई के सामने ही अपना डेरा जमा लिया और सोने का अभिनय किया।

रसोई में खाने के लिए कुछ भी नहीं था और मंझली को तो भूखे रहने की आदत नहीं थी—टोनी से तो कोई उम्मीद की भी नहीं जा सकती थी—वैसे तो इस वक्त भूख मिटाने से बड़ी समस्या अपनी अस्मत बचाने की थी।

जब बड़ी देर तक कमरे से कोई आहट नहीं उभरी तो मंझली ने डरते डरते यह सोचकर धीरे से रसोई का दरवाजा खोला कि टोनी खा पीकर आराम से सोया पड़ा होगा।

टोनी की आंखें बन्द जरूर थीं मगर वह सोया हुआ नहीं था बल्कि सोने का अभिनय कर रहा था और जैसे ही मंझली दबे पांव उसके करीब से गुजरते हुए द्वार की तरफ बढ़ी—टोनी एकाएक बाज की तरह झपट पड़ा मंझली पर।

एक तरफ मंझली हर हाल में टोनी के चंगुल से बच निकलना चाहती थी—दूसरी तरफ टोनी हर हाल में मंझली के ऊपर हावी हो जाना चाहता—मंझली उससे बुरी तरह से भयभीत होकर उसके इशारों पर नाचने के लिए विवश हो जाए इसके लिए उसने रिवाल्वर तक निकाल लिया।

मगर नहीं—फिर भी वह काबू नहीं पा सका मंझली पर—मंझली धोखे से टोनी के सिर पर सिलबट्टा मार कर वहां से भाग निकलने में सफल हो गई।

टोनी तो सिलबट्टे की तेज चोट से तुरन्त ही बेहोश हो गया था—हाथ में रिवाल्वर पकड़े हुए ही और यह रिवाल्वर ही उसकी मौत का कारण बन गया—बेहोशी में ही मौत के मुंह में चला गया टोनी।

वड़की ने अपनी तरफ से पूरी पूरी कोशिश की कि वह कानूनी मामलों की विशेषज्ञ श्याम लता बहन की मंदद से मंझली की जमानत करवा लें—मगर मंझली के जमानत का अधिकार अव वम्वई की अदालत के हाथ में था—इंस्पेक्टर सामदार का काम तो मंझली को बम्बई की अदालत में पेश कर देना था—और अपनी ड्यूटी को वह पूरी सख्ती और मुस्तैदी से निपटा रहा था।

एक तरफ तो वेचारे लल्लू की शादी के साथ ही टोनी की मृत्यु की खबर और इस आरोप में मंझली का पकड़ा जाना एक अप्रत्याशित सी वात थी मगर इस घटना का असर प्रत्यक्ष रूप से लल्लू की नव व्याहता उषा रानी पर पड़ा—बसेसर राम और दादी जी दोनों ने ही उसे मनहूस का दर्जा दे दिया। उषा रानी शादी की पहली ही रात जान गई कि उसके नसीब में तो सहना ही लिखा है आधी डगर तो मायके में सौतेली मां की जली कटी बातें सुनते ही निकाल दी अव यहां भी उसे सुनना और सहना ही होगा।

वसेसर राम को अपनी इस पुत्र वधू से एक मुख्य शिकायत यह भी तो थी कि वह दहेज इतना कम लाई है कि शादी में नगद मिले रुपयों से लल्लू की नौकरी के लिए विदेश भी नहीं भेजा जा सकता है।

दूसरी तरफ नन्हें अपने दिल पर पत्थर रखकर कामिया और राजकुमार के विवाह में शामिल हुआ—शामिल ही नहीं हुआ बल्कि पूरी भागदौड़ भी की उसने—छोटी बड़ी हर चीज का ध्यान रखना उसी की जिम्मेवारी थी—अपनी प्रेमिका को अपने ही हाथों से दूसरों की डोली में बिठा देना—सच यह बात कितनी कठिन थी नन्हें के लिए—मगर उसने तो इसे भी जिन्दगी का एक इम्तहान ही समझा।

हां इंस्पेटर सामदार तो मंझली को बम्बई ले जाने की पूरी तैयारी कर चुका था मगर ऐन वक्त पर मंझली ने स्वेटर बुनने की सलाई पेट में घोंपकर आत्महत्या करने की कोशिश की—तुरन्त डाक्टरी उपचार से मंझली की जान तो बच गई मगर उसकी कोख

टोनी के चंगुल से बच निकलने के बाद बम्बई में इधर उधर भटकती हुए मंझली के दिलोदिमाग पर यही सोच हावी रही कि उसने टोनी का खून कर दिया है—और जब उसने इवनिंग न्यूज मे टोनी के मर्डर की खबर पढ़ी तो उसके तो होश ही उड़ गए—उसका संदेह यकीन में बदल गया।

मंझली को फांसी का फंदा अपनी आंखों के सामने झूलता हुआ नजर आने लगा—उसे भय था कि यहां बम्बई में पुलिस उसे किसी भी क्षण दबोच लेगी—उसे यहां से फौरन दिल्ली के लिए ट्रेन पर बैठ जाना चाहिए वैसे भी हीरोइन बनने की चाह में बम्बई आकर उसने बहुत से रंग देख लिए थे जिन्दगी के।

उसी दिन ही ट्रेन में बैठकर बम्बई से दिल्ली आ गइ वह—वहीं—उसी जनता कालोनी के एल.आई.जी. फ्लैट में बुरी तरह से डरी—सहमी हुई—बिल्कुल पागलों की सी हालत में।

मंझली का इस तरह और अकेले ही आना तो अप्रत्याशित था ही—साथ ही मंझली की इस हालत ने भी सबको बुरी तरह से चौंका दिया—घर में तो लल्लू की उषा रानी के साथ शादी की तैयारियां जोर शोर से चल रही थीं—मंझली का इस वक्त घर आकर इस तरह रोना धोना ना तो दादी जी को ही अच्छा लगा और ना ही लल्लू को। लल्लू की निगाहों में तो रंग में भंग डालने वाली बात थी और फिर मंझली सिर्फ रोने धोने के सिवा कुछ बताने को भी तो तैयार नहीं थी। कुछ कहती थी तो सिर्फ इतना ही कि बचा लो मुझे-मुझे बचा लो—फांसी पर चढ़ा डालेंगे मुझे—जेल में बंद कर देंगे—मैंने मार दिया उसे—मार डाला उसे मैंने। और मंझली की इस चीख पुकार से भला कोई क्या अंदाजा लगा पाता।

बसेसर राम को मंझली के पति राजकुमार यानि टोनी का

था—वह विजटिंग कार्ड कुलकर्णी का था और वही मंझली के वहां से भाग निकलने के बाद उस फ्लैट में पहुंचा था और उसने वहां टोनी को बेहोशी की हालत में देखा था उस वक्त टोनी को गोली नहीं लगी थी।

स्पष्ट था कि जब कुलकर्णी के वहां आने तक टोनी जिन्दा था और उसे कहीं पर कोई गोली भी नहीं लगी थी तो यह हत्या मंझली ने कैसे कर दी—और फिर वह तो बुरी तरह से बड़ी डरी सहमी हुई थी—सिर्फ अपने बचाव की सोच रही थी—हत्या वह कर भी कैसे सकती थी।

हां यह हत्या उस दूसरे युवक ने की थी जो कुलकर्णी के जाने के बाद वहां उस फ्लैट में पहुंचा था और टोनी को इस हाल में देखकर उसी के हाथों में दस्ताने चढ़ाकर टोनी के हाथ से ही झूलते पिस्तौल से ही टोनी की हत्या करके पिस्तौल वापिस टोनी के बेजान हाथ में अटका दिया था जिससे ये हत्या का नहीं आत्महत्या का मामला लगे।

इसी युवक ने टोनी की हत्या के तुरन्त बाद केसरी के पास जाकर अपना काम पूरा करने के पैसे मांगे थे और इस बात से स्पष्ट है कि इस हत्या के पीछे केसरी का हाथ था।

यह युवक कोई और नहीं मदन था—बम्बई का ज़ाना माना बदमाश...।

बचाव पक्ष की महिला वकील इस बात को नहीं जानती थी कि यह हत्या किसने की मगर पुलिस की कमजोरियों को पूरी तरह से उजागर करते हुए उन्होंने अपना पक्ष तो काफी मजबूत कर लिया।

महिला वकील की राय पर ही नन्हें ने सेठ किशोरी लाल की लम्बी पहुंच का फायदा उठाया और कुलकर्णी को अदालत में पेश करने की सफलता प्राप्त कर ली और उसे पूरी तरह से कानून का भय दिखाकर यह बात उगलवा भी ली उसके वहां उस फ्लैट में जाने तक टोनी के जिस्म पर कोई गोली का निशान नहीं था और

नतीजे पर पहुंच चुका था।

□□□□

लल्लू की शादी में मंझली का जाना संभव नहीं था—डाक्टर अर्पणा की निगाह में उसे पूरी तरह से आराम की आवश्यकता थी। चूंकि यह विवाह गांव वाले घर में किया जा रहा था। इसलिए बसेसर राम और उनके बेटे भाई सालिग राम दोनों सपरिवार गांव पहुंच गए थे।

लल्लू की शादी की भागदौड़ के सिलसिले में नन्हें तो गांव से शहर और शहर से गावं के बीच ही भाग दौड़ कर रहा था—साथ ही सेठ किशोरी लाल के काम भी तो निपटाने पड़ते थे उसे—और राजकुमार अजय सिंह की जिम्मेदारी भी तो उसके ऊपर थी—ऐसी परिस्थितियां पैदा कर दी थीं कि कामिया नन्हें से नफरत करने लगी थी और उसने भी राजकुमार अजय सिंह से विवाह करने की स्वीकृति दे दी थी।

हां—लल्लू की शादी के समय बड़की दिल्ली में ही रही—मंझली की देख रेख की पूरी जिम्मेदारी उसने अपने ऊपर ले ली थी—मगर उस वक्त तो वह भी बेहद परेशानी में पड़ गई थी जब एक तरफ तो गांव में लल्लू यानि ललित प्रसाद उषा रानी के साथ फेरे ले रहा था—दूसरी तरफ बम्बई से उसी शाम ही इस्पेक्टर मामदार दिल्ली पुलिस के साथ मंझली को गिरफ्तार करने पहुंचा था।

मंझली के खिलाफ टोनी की हत्या का आरोप था और इसी सम्बन्ध में मंझली को कानून की गिरफ्त में लिया था तब तो बड़की और बसेसर राम को पहली बार पता चला था कि राजकुमार यानि टोनी की हत्या हो चुकी है।

उस तीसरे व्यक्ति ने जो कि कुलकर्णी के बाद वहां पहुंचा था और कुछ समय तक फ्लैट में रहा था—जाहिर है कि हत्या का सारा संदेह उसी गुमनाम युवक के ऊपर जाता है—कुलकर्णी फ्लैट में घुसने के तुरन्त बाद ही बाहर आ गया था इसलिए इस हत्या के लिए कुलकर्णी को दोषी ठहराना उचित नहीं होगा मगर अदालत को गुमराह करने की कोशिश करना भी अपराध है और यौर ऑनर...।"

"यही बात इस मुकदमें की मुख्य गवाह उस गिरनार बिल्डिंग में रहने वाली आया ने भी अपनी गवाही में कही है कि उसने रूपवंती के वहां से निकलने के बाद दो युवकों को एक के बाद एक उस फ्लैट में जाते देखा पुलिस ने तो आया की गवाही को अदालत के सामने रखने की कोई आवश्यकता नहीं समझी क्योंकि वह जल्दी से जल्दी इस केस से छुटकारा पाना चाहती थी मगर इसी आया ने ही कुलकुर्णी को पहचान कर अदालत की सहायता की है...।"

"मेरी मुवक्किला टोनी जैसे दलाल के चक्कर में बुरी तरह से फंस चुकी थी यौर ऑनर—उसने हीरोइन बनने की लालसा रखते हुए टोनी के साथ भाग कर बम्बई आकर तो भूल की ही मगर यह भूल तो जवानी की चढ़ती दहलीज पर कितने ही लड़के लडकियों से हो जाती है।"

"टोनी जो कि लड़कियों की दलाली का काम करता था—रूपवंती को हीरोइन बनाने का लालच देकर बहला फुसला कर यहां बम्बई लाया—और यहां इस मासूम के साथ नकली विवाह करके इसके परिवार वालों को गुमराह करने की कोशिश की और अब वह मेरी मुवक्किला पर जोर जबरदस्ती करके उसे वेश्या बनाना चाहता था—पेशा करवाना चाहता था रूपवंती से...।"

"मेरी मुवक्किला तो अपनी इज्जत आबरू पहले ही खो चुकी थी मीलार्ड और अगर उस रात वह अपना बचाव नहीं क

में पनप रहा शिशु कोख में ही खत्म हो गया। वैसे भी मंझली के पाप का फल था वह।

मंझली के थोड़े सही हो जाने पर अपनी ड्यूटी की पावन्द डाक्टर अर्पणा सिन्हा ने इंस्पेक्टर सामदार को मंझली को वम्वई ले जाने की स्वीकृति दे दी।

और मंझली के वम्वई पहुंचते ही टोनी मर्डर केस की सुनवाई प्रारम्भ हो गई।

□□□□

मंझली के केस के सिलसिले में वड़की और कानूनी मामलों की सलाहकार श्याम लता वहन दोनों ही वम्वई जा पहुंची।

श्याम लता की एक परिचित महिला वम्वई की काफी प्रसिद्ध वकील थी—मंझली के केस की पूरी जिम्मेवारी उन्होंने अपने कन्धों पर ली और केस की जांच के दौरान मुकदमें की कई खामियों को उन्होंने पहली ही निगाह में देख लिया था। पुलिस ने अपनी जांच के दौरान कितनी ही ऐसी भूलें कर दी थीं जिनका लाभ मंझली को मिल सकता था और फिर वास्तव में मंझली निर्दोष ही थी—उसने तो टोनी के सिर पर सिलवट्टे से वार किया था और वहां से भाग निकली थी—जवकि टोनी की मृत्यु तो रिवाल्वर की गोली से हुई थी।

पुलिस ने अपनी जांच के दौरान विल्डिंग की एक आया का वयान लेने की कोई आवश्यकता नहीं समझी थी जो इस हत्याकांड के सम्बन्ध में काफी जानकारी रखती थी—मंझली के वहां से भाग निकलने के वाद उसने उस फ्लैट में कुछ समय के अन्तर पर दो आदमियों को एक के वाद एक जाते हुए देखा था।

पुलिस ने जांच करते समय उस विजटिंग कार्ड को कोई महत्व नहीं दिया था— जो टोनी की लाश के पास पड़ा मिला

की गोली का निशाना बन गया।

इस तरह नरक की दुनिया का एक गिरोह तो समाप्त हुआ।

और अब बड़की की बात...।

□□□□

अश्वनी को बेहद चाहती थी बड़की।

अश्वनी भी तो बड़की को भुलाकर किसी दूसरी लड़की से शादी करने की बात सोच भी नहीं सकता था इसीलिए तो उसने बसेसर राम के भाई सालिग राम की लड़की सारिका के साथ विवाह करने से इन्कार कर दिया था। मगर ना तो बड़की ही अश्वनी से शादी करने के लिए किसी भी प्रकार का समझौता करने के लिए तैयार थी और ना ही अश्वनी अपने चाचा जटा शंकर जी को नाराज करके बड़की को अपना सकता था।

आखिरकार एक लम्बी कशमकश के बाद जटा शंकर जी को ही हालात से समझौता करना पड़ा वह जीवन की आखिरी सांसे पूरी करने से पहले अश्वनी की गृहस्थी बसी हुई देखना चाहते थे और जान गए थे कि अगर वह बड़की को अपनी बहू ना बनाने की जिद्द पर अड़े हुए हैं तो अश्वनी भी कम जिद्दी नहीं है—वैसे भी बड़की को लेकर उनके मन की काफी गलतफहमियां दूर हो गई थीं और वह सोचने पर विवश हो गए थे कि उन्होंने गुणवंती यानि बड़की को समझने में जरूर कहीं भूल की है। और वह अश्वनी और बड़की की बिना दहेज शादी करके अपनी इसी भूल को सुधारने का प्रयास कर रहे थे वह।

और फिर अठाइस मई के शुभ मुहुंत पर बड़की का विवाह अश्वनी से हो ही गया। निसंदेह बेहद खुशी का अवसर था यह।

नी सिर्फ वेहोश ही था।

और फिर गवाहों के वयानात के वाद वचाव पक्ष की महिला कील ने जोरदार ढंग से अपना पक्ष अदालत के सामने रखा।

"मीलार्ड—यह वात अव पूरी तरह से सवूत सावित हो चुकी कि पुलिस ने इस केस में अपनी जांच के दौरान कितनी ही ऐसी ल्तियां कीं जिसकी सजा जमाने भर से सताई गई इस निर्दोष ड़की रूपवंती को भोगनी पड़ी...।"

"यौर ऑनर—आप खुद देख सुन चुके हैं कि पुलिस ने कदमें की जांच के दौरान कितने ही ऐसे महत्वपूर्ण सूत्र छोड़ दिए ो वास्तविक अपराधी का संकेत देते थे—पुलिस को तो अपनी जम्मेदारी से मुक्त होने से मतलव था—केस की जीत का सेहरा ल्दी से जल्दी अपने सिर पर वांधने के लिए वम्वई पुलिस ने मेरी विकला रूपवंती को ही कातिल ठहराने की पूरी कोशिश की र्वाकि वह पूरी तरह से निर्दोष थी।"

"मैंने मुकदमें की जांच के दौरान कुलकर्णी को इस मुकदमें के महत्वपूर्ण गवाह के रूप में पाया यौर ऑनर और कि पुलिस ने पनी प्रारंभिक जांच के दौरान ही कुलकर्णी के ऊपर से अपना ध्यान हटा लिया था शायद इसलिए कि कुलकर्णी लम्वी पहुंच ाला व्यक्ति था। मगर कुलकर्णी ही अव अपने को पूरी तरह से कानून के शिकंजे में घिरा हुआ पाकर यह वात स्वीकार कर चुका कि उसके फ्लैट में जाने तक टोनी वेहोश था और उसके सिर से हू वह रहा था...।"

"टोनी की लाश की डाक्टरी जांच और पोस्टमार्टम की पोर्ट के वाद यह वात पूरी तरह से सावित हो चुकी है कि टोनी के र पर चोट का निशान सिलवट्टे के कारण था और इसी कारण नी वेहोश भी हुआ था मगर साथ ही पोटमार्टम करने वाले क्टर ने यह भी स्पष्ट कहा है यौर ऑनर कि सिलवुटे का यह वार नी की मृत्यु का कारण कभी नहीं वन सकता...।"

"स्पष्ट है मीलार्ड कि हत्या या तो कुलकर्णी ने की या फिर

दिया जिससे कि लल्लू वहां स्वतंत्र रूपसे रोजगार चलाकर अपनी अलग गृहस्थी भी चला सके। लल्लू भी अब तक जिन्दगी के इतने उतार चढ़ाव देख चुका था कि उसे सेवन हन्ड्रेड डैश थर्टीन हन्ड्रेड का मधुर ख्वाब छोड़कर गांव की जिन्दगी के लिए अपने आपको तैयार करना ही पड़ा।

हां इसी मध्य नन्हें की जिन्दगी में काफी महत्वपूर्ण उतार चढ़ाव आए—सेठ किशोरी लाल ने टोनी मर्डर केस में जिस तरह नन्हें की मदद की और कुलकर्णी और केसरी को अदालत के पेश होने पर विवश किया—उसके कारण नेता महादेव बाबू—केसरी—और मदन जैसे लोग उनकी जान के दुश्मन बन गए।

इधर अजय सिंह और कामिया हनीमून मनाने के लिए आरूबा के लिए रवाना हुए और अपराधी सेठ किशोरी लाल की हत्या में कामयाब हो गए।

सेठ किशोरी लाल की मृत्यु के बाद नन्हें एक चौराहे पर आ खड़ा हुआ—सेठ किशोरी लाल उसे अपनी गद्दी का वारिस बना गए थे—मगर नन्हें अपने अन्दर इतनी हिम्मत नहीं जुटा पा रहा था कि वह इस काली गुमनाम दुनिया को पूरी तरह से स्वीकार कर सके। नन्हें के एक तरफ तो जनता कालोनी के एल.आई.जी. फ्लैट की जिन्दगी थी और दूसरी तरफ दुनिया भर के ऐशो आराम—कारों और बंगलों—कोठियों की जिन्दगी—मगर आखिर में नन्हें ने मां और दादा जी की सीख पर ही चलने का फैसला किया—अपनी आत्मा को मार कर खुद झूठी जिन्दगी जीना स्वीकार नहीं था उसे।

और यह नन्हें के इस दृढ़ निश्चय का ही परिणाम था कि यह जानते हुए भी कि पुलिस सेठ किशोरी लालकी हत्या के सिलसिले में उस पर संदेह कर रही है—उसने पुलिस की पूरी मदद करके फिलहाल सेठ किशोरी लाल के गुरू और इस गेंग के भूतपूर्व बॉस प्रभु दयाल को कानून की गिरफ्त में कस देना चाहा मगर पुलिस से बचकर भाग निकलने की कोशिश करते हुए प्रभु दयाल पुलिस

. . .

और यह तो आप सब जानते हैं कि लड़की की शादी की चिन्ता सिर्फ बसेसर राम और उनके परिवार को ही नहीं—पूरे देश को थी।

बसेसर राम का टूटना बिलग्न
एक नये सूत्र में बंधता जा रहा था।